सामाजिक विज्ञान
Social Science

कक्षा / Class X
2025-26

विद्यार्थी सहायक सामग्री
Student Support Material

केन्द्रीय विद्यालय संगठन~Kendriya Vidyalaya Sangathan

<u>संदेश</u>

विद्यालयी शिक्षा में शैक्षिक उत्कृष्टता प्राप्त करना एवं नवाचार द्वारा उच्च - नवीन मानक स्थापित करना केन्द्रीय विद्यालय संगठन की नियमित कार्यप्रणाली का अविभाज्य अंग है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं पी. एम. श्री विद्यालयों के निर्देशों का पालन करते हुए गतिविधि आधारित पठन-पाठन, अनुभवजन्य शिक्षण एवं कौशल विकास को समाहित कर, अपने विद्यालयों को हमने ज्ञान एवं खोज की अद्‌भुत प्रयोगशाला बना दिया है। माध्यमिक स्तर तक पहुँच कर हमारे विद्यार्थी सैद्धांतिक समझ के साथ-साथ, रचनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक चिंतन भी विकसित कर लेते हैं। यही कारण है कि वह बोर्ड कक्षाओं के दौरान विभिन्न प्रकार के मूल्यांकनों के लिए सहजता से तैयार रहते हैं। उनकी इस यात्रा में हमारा सतत योगदान एवं सहयोग आवश्यक है - केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पांचों आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा संकलित यह विद्यार्थी सहायक-सामग्री इसी दिशा में एक आवश्यक कदम है । यह सहायक सामाग्री कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए सभी महत्वपूर्ण विषयों पर तैयार की गयी है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन की विद्यार्थी सहायक- सामग्री अपनी गुणवत्ता एवं परीक्षा संबंधी सामग्री संकलन की विशेषज्ञता के लिए जानी जाती है और शिक्षा से जुड़े विभिन्न मंचों पर इसकी सराहना होती रही है। मुझे विश्वास है कि यह सहायक सामग्री विद्यार्थियों की सहयोगी बनकर निरंतर मार्गदर्शन करते हुए उन्हें सफलता के लक्ष्य तक पहुँचाएगी।

शुभाकांक्षा सहित ।

निधि पांडे
आयुक्त , केन्द्रीय विद्यालय संगठन

संरक्षक

श्रीमती निधि पाण्डेय, आयुक्त, केविसं

सह-संरक्षक

डॉ पी देवकुमार, अतिरिक्त आयुक्त (शैक्षिक), केविसं (मु.)

समन्वयक

सुश्री चंदना मंडल,संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण), केविसं (मु.)

कवर डिजाईन

केविसं प्रकाशन विभाग

संपादक:

1. श्री बी.एल. मोरोडिया, निदेशक, जीट ग्वालियर
2. सुश्री मीनाक्षी जैन, निदेशक, जीट मैसूर
3. सुश्री शाहिदा परवीन, निदेशक, जीट मुंबई
4. सुश्री प्रीती सक्सेना, प्रभारी निदेशक, जीट चंडीगढ़
5. श्री बीरबल धींवा, प्रभारी निदेशक, जीट भुवनेश्वर

CONTENT CREATORS:

श्रीमती भारती सिंह, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (सामाजिक विज्ञान), पी.एम. श्री के.वि नं.2 आगरा, आगरा संभाग

श्री प्रसून सिंह धाकड़, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (सामाजिक विज्ञान), पी.एम. श्री के.वि. ललितपुर, आगरा संभाग

श्री सी. जे. टोप्पो, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (सामाजिक विज्ञान), पी.एम. श्री के.वि. बीना, भोपाल संभाग

श्री महेंद्र बेनीवाल, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (सामाजिक विज्ञान), के.वि. खरगोन, भोपाल संभाग

सुश्री संस्कृति समैया, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (सामाजिक विज्ञान), पी. एम. श्री के.वि. नं. 2 सागर, जबलपुर संभाग

श्री लोकेश कुमार अग्निहोत्री, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (सामाजिक विज्ञान), पी.एम. श्री के.वि. छतरपुर, जबलपुर संभाग

श्रीमती रचना चौहान, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (सामाजिक विज्ञान), पी.एम. श्री केवि. विजनौर शिफ्ट-1 लखनऊ, लखनऊ संभाग

श्री संतोष कुमार गुप्ता, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (सामाजिक विज्ञान), पी.एम. श्री के.वि. माटी, शिफ्ट -1, लखनऊ संभाग

श्री प्रभात तिवारी, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (सामाजिक विज्ञान), पी.एम. श्री के.वि. एएफएस बमरौली प्रयागराज, वाराणसी संभाग

श्री नरेन्द्र प्रताप, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (सामाजिक विज्ञान), पी. एम. श्री के.वि. सिद्धार्थनगर, वाराणसी संभाग

सामाजिक विज्ञान – कक्षा – X
अनुक्रमणिका

क्रम सं	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
इतिहास- भारत और समकालीन विश्व-II		
अध्याय-1.	यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय	**5-8**
अध्याय.-2.	भारत में राष्ट्रवाद	**9-14**
अध्याय.-3.	भूमंडलीकृत विश्व का बनना	**14-15**
अध्याय.-4.	मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया	**16-19**
भुगोल- तत्कालीन भारत -II		
अध्याय.-1.	संसाधन और विकास	**20-24**
अध्याय.-2.	वन और वन्यजीव संसाधन	**24-28**
अध्याय.-3.	जल संसाधन	**28-32**
अध्याय.-4.	कृषि	**32-36**
अध्याय.-5.	खनिज और ऊर्जा संसाधन	**37-42**
अध्याय.-6.	विनिर्माण उद्योग	**42-46**
अध्याय.-7.	राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ	**47**
राजनीति विज्ञान लोकतंत्रिकराजनीतिक-I		
अध्याय.-1.	सत्ता की साझेदारी	**48-51**
अध्याय.-2.	संघवाद	**52-56**
अध्याय.-3.	जाति, धर्म और लैंगिक मसले	**57-61**
अध्याय.-4.	राजनीतिक दल	**61-65**
अध्याय.-5.	लोकतंत्र के परिणाम	**66-69**
अर्थशास्त्र- आर्थिक विकास को समझना		
अध्याय.-1.	विकास	**69-73**
अध्याय.-2.	भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक	**73-77**
अध्याय.-3.	मुद्रा और साख	**77-80**
अध्याय.-4.	वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था	**81-83**

अध्याय 1
यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

मुख्य बिंदु

फ्रांसीसी क्रांति और राष्ट्र का विचार

• राष्ट्रवाद पहली बार फ्रांसीसी क्रांति (1789) के दौरान उभरा।
• स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और लोकप्रिय संप्रभुता के विचार केंद्रीय बन गए।
• 1804 का नागरिक संहिता (नेपोलियन कोड): सामंती विशेषाधिकारों को हटा दिया गया, समान कानून पेश किए गए और योग्यता आधारित नियुक्तियों को बढ़ावा दिया गया।
• फ्रांसीसी सेनाओं ने पूरे यूरोप में राष्ट्रवाद फैलाया, लेकिन उन्हें उत्पीड़कों के रूप में भी देखा गया।

यूरोप में राष्ट्रवाद का निर्माण-

• 1800 के दशक में यूरोप राजवंशों द्वारा शासित राज्यों और साम्राज्यों का एक टुकड़ा था, न कि एकीकृत राष्ट्रों का।
• रोमांटिकतावाद: एक सांस्कृतिक आंदोलन जिसने लोकगीत, संगीत और इतिहास (जैसे, जर्मनी में ग्रिम ब्रदर्स) के माध्यम से सामूहिक पहचान की भावनाओं को बढ़ावा दिया।
• भाषा और संस्कृति ने राष्ट्रीय पहचान विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

क्रांतियों का युग (1830-1848)-

• 1830: उदार राष्ट्रवादियों ने फ्रांस में राजशाही को उखाड़ फेंका; बेल्जियम, पोलैंड और इटली में विद्रोह हुए।
• 1848: मध्यवर्गीय उदारवाद ने संवैधानिक सरकारों, वोट के अधिकार और राष्ट्रीय एकीकरण की मांग की।
• किसानों और श्रमिकों ने सामाजिक न्याय की भी मांग की।
• जन समर्थन की कमी और रूढ़िवादियों द्वारा दमन के कारण क्रांतियाँ काफी हद तक विफल रहीं।

इटली का एकीकरण-

• इटली को अलग-अलग शासकों के अधीन राज्यों में विभाजित किया गया था।
• ज्यूसीपे मैजिनी: एकीकृत गणराज्य के लिए यंग इटली का गठन किया।
• काउंट कैवूर (सार्डिनिया-पीडमोंट के प्रधान मंत्री): इटली को एकजुट करने के लिए कूटनीति और युद्ध का इस्तेमाल

किया।

• ज्यूसीपे गैरीबाल्डी: दक्षिणी इटली को एकीकृत करने के लिए रेड शर्ट स्वयंसेवकों का नेतृत्व किया।

जर्मनी का एकीकरण-

जर्मनी का एकीकरण

• ओटो वॉन बिस्मार्क के नेतृत्व में प्रशिया द्वारा।
• डेनमार्क, ऑस्ट्रिया और फ्रांस के साथ युद्ध (1864-1871) का इस्तेमाल किया।
• 1871 में वर्सेल्स में जर्मन साम्राज्य की घोषणा की।
• राष्ट्रवाद "रक्त और लोहे" (युद्ध और सैन्य शक्ति) के माध्यम से प्राप्त किया गया था।

ब्रिटेन का एकीकरण-

ब्रिटेन का अजीब मामला

• यूरोप के विपरीत, ब्रिटेन का एकीकरण संसदीय कृत्यों के माध्यम से एक क्रमिक प्रक्रिया थी।
• इंग्लैंड ने स्कॉटलैंड, वेल्स और आयरलैंड पर प्रभुत्व जमाया।
• यूनियन जैक, राष्ट्रगान और अंग्रेजी भाषा ने ब्रिटिश राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया।

राष्ट्र की कल्पना-

• राष्ट्रों को महिला रूपकों के रूप में चित्रित किया गया (उदाहरण के लिए, फ्रांस के लिए मैरिएन, जर्मनी के लिए जर्मनिया)।

• राष्ट्रीय प्रतीकों ने एकता और पहचान को बढ़ावा देने में मदद की।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. अभिकथन (A) - पूर्वी और मध्य यूरोप निरंकुश राजतंत्रों के अधीन थे, जिसके क्षेत्रों में विविध लोग रहते थे।

कारण (R) - वे सभी समान भाषा बोलते थे और एक ही जातीय समूह से संबंधित थे।

(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है।

(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है

(D) A असत्य है R सत्य है

उत्तर 3: C

प्रश्न 2. "एकीकरण के विचार को ग्यूसेप गैरीबाल्डी ने दृढ़ता से बढ़ावा दिया।"
निम्नलिखित में से किस आंदोलन से गैरीबाल्डी जुड़े थे?

a) इतालवी एकीकरण b) फ्रांसीसी क्रांति

c) जर्मन एकीकरण d) रूसी क्रांति

उत्तर: a) इतालवी एकीकरण

3. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द 'राष्ट्र-राज्य' को सबसे अच्छी तरह से समझाता है?

a) राजा या रानी द्वारा शासित राज्य b) ऐसा राज्य जहाँ लोग समान पहचान और संस्कृति साझा करते हैं

c) एक साम्राज्य के तहत देशों का समूह d) स्थानीय जमींदार द्वारा शासित क्षेत्र

उत्तर: b) ऐसा राज्य जहाँ लोग समान पहचान और संस्कृति साझा करते हैं

4.निम्नलिखित का मिलान करें-

स्तंभ A	स्तंभ B
(1) ज़ोलवेरिन	(a) एक निर्वाचित विधानसभा
(2) एस्टेट जनरल	(b) ऑस्ट्रिया-हंगरी
(3) हैब्सबर्ग साम्राज्य पर शासन किया गया	(c) कस्टम यूनियन

विकल्प-

(ए) (1)- (सी), (2)- (ए), (3)- (बी)

(बी) (1)- (बी), (2)- (ए), (3)- (सी)

(सी) (1)- (ए), (2)- (बी), (3)- (ए)

(डी) (1)- (बी), (2)- (सी), (3)- (ए)

उत्तर: (ए) (1)- (सी), (2)- (ए), (3)- (बी)

5.निम्नलिखित अंश पढ़ें:

"फ्रांसीसी क्रांतिकारियों ने विभिन्न उपाय पेश किए जो फ्रांसीसी लोगों के बीच सामूहिक पहचान की भावना पैदा कर सकते थे। इनमें ला पैट्री (पितृभूमि) और ले सिटॉयन (नागरिक), एक नया फ्रांसीसी झंडा और एक आम भाषा को बढ़ावा देने के विचार शामिल थे।" फ्रांसीसी क्रांतिकारियों द्वारा पेश किए गए उपायों के पीछे निम्नलिखित में से कौन सा मुख्य उद्देश्य था?

A. फ्रांस में राजशाही को बहाल करना

B. फ्रांस पर सैन्य शासन लागू करना

C. एकता और राष्ट्रीय पहचान की भावना पैदा करना

D. यूरोप में फ्रांसीसी उपनिवेशों का विस्तार करना

संकेत: C. एकता और राष्ट्रीय पहचान की भावना पैदा करना

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न 1"हमें लोगों की भाषा और लोककथाओं के माध्यम से उनकी भावना को संरक्षित करना चाहिए।" - जर्मन रोमांटिकवाद से प्रेरित: उन जर्मन विद्वानों के नाम बताइए जिन्होंने लोक कथाओं के माध्यम से राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के लिए इस विचार का अनुसरण किया।

संकेत: जैकब और विल्हेम ग्रिम (ग्रिम ब्रदर्स)

प्रश्न 2."जब फ्रांस छींकता है, तो बाकी यूरोप को सर्दी लग जाती है।" - मेटरनिख

यह उद्धरण फ्रांस में हुई घटनाओं के यूरोप पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में क्या बताता है?

संकेत: फ्रांस में क्रांतिकारी घटनाओं ने पूरे यूरोप में राजनीतिक अशांति को प्रेरित किया।

लघु उत्तरीय प्रकार के प्रश्न-

Q 1. ज्यूसीपे मैजिनी एक गणतंत्र सरकार के माध्यम से इटली के एकीकरण में विश्वास करते थे। उन्होंने कई युवा इटालियंस को प्रेरित किया।" इटली के एकीकरण में माज़िनी की दृष्टि और गतिविधियों ने किस प्रकार योगदान दिया?

उत्तर: माज़िनी ने एकीकृत, लोकतांत्रिक इटली को बढ़ावा देने के लिए यंग इटली की स्थापना की और दमन का सामना करने के बावजूद राष्ट्रवादियों को प्रेरित किया।

Q2. प्रश्न. कल्पना करें कि आप 19वीं शताब्दी के दौरान एक यूरोपीय कलाकार या कवि हैं। आपका काम राष्ट्रवाद की भावना पैदा करने में कैसे मदद करेगा? कारण बताएँ।

संकेत. एक कलाकार या कवि के रूप में, मैं गर्व और एकता को जगाने के लिए लोक कथाओं, किंवदंतियों और राष्ट्रीय इतिहास का उपयोग करूँगा। मेरा काम लोगों को भावनात्मक और सांस्कृतिक रूप से एकजुट करने के लिए आम संघर्षों और मूल्यों पर जोर देगा।

दीर्घ उत्तर प्रकार के प्रश्न-

प्रश्न 1. जर्मनी के एकीकरण की तुलना इटली के एकीकरण से करें। वे कैसे समान और भिन्न थे?

संकेत: **समानताएँ**:• दोनों 19वीं शताब्दी में एकीकृत हुए थे।• दोनों मामलों में मजबूत नेतृत्व शामिल था: बिस्मार्क (जर्मनी), कैवूर और गैरीबाल्डी (इटली)।• दोनों मामलों में युद्धों ने प्रमुख भूमिका निभाई।

अंतर: • जर्मनी के एकीकरण का नेतृत्व सैन्य बल का उपयोग करके प्रशिया ने किया था, जबकि इटली का एकीकरण कूटनीति और लोकप्रिय आंदोलन का संयोजन था। • कैसर विल्हेम I के तहत जर्मनी एक मजबूत साम्राज्य बन गया, जबकि इटली को एकीकरण के बाद आंतरिक क्षेत्रीय मतभेदों का सामना करना पड़ा। दोनों मामलों में, राष्ट्रवाद प्रेरक शक्ति थी।

प्रश्न 2 फ्रांसीसी क्रांति के दौरान फ्रांसीसी क्रांतिकारियों के कार्यों और आदर्शों ने यूरोप के अन्य भागों में राष्ट्रवादी आंदोलनों को कैसे प्रेरित किया? अपने उत्तर को ऐतिहासिक उदाहरणों और तर्कों के साथ समर्थन करें।

संकेत: फ्रांसीसी क्रांतिकारियों ने राष्ट्रवाद के विचार को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने घोषणा की कि राष्ट्र अपने नागरिकों का है और स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूल्यों को बढ़ावा दिया। • उन्होंने राष्ट्रीय पहचान को मजबूत करते हुए एक नया झंडा, राष्ट्रगान और समान कानून अपनाए।

****

अध्याय 2
भारत में राष्ट्रवाद – मुख्य बिंदु

• **आंदोलन-**

करों, कीमतों में वृद्धि और जबरन भर्ती ने अशांति पैदा की।

प्रथम विश्व युद्ध ने भारत में आर्थिक और राजनीतिक कठिनाइयाँ पैदा कीं।

गांधीजी ने खिलाफत आंदोलन (ओटोमन खिलाफत की रक्षा के लिए) के साथ साझेदारी में 1920 में असहयोग आंदोलन शुरू किया।

मुख्य उद्देश्य

स्वशासन (स्वराज)

ब्रिटिश वस्तुओं, संस्थाओं और सेवाओं का बहिष्कार

स्वदेशी (घर में बने सामान) को बढ़ावा देना

प्रथम विश्व युद्ध, खिलाफत और असहयोग

आंदोलन के भीतर अलग-अलग धाराएँ-

विभिन्न क्षेत्रों और सामाजिक समूहों में फैल गया:

o अवध में किसान: बाबा रामचंद्र के नेतृत्व में; लगान में कमी और बेगार को समाप्त करने की माँग की।

o आदिवासी आंदोलन: आंध्र में; अल्लूरी सीताराम राजू के नेतृत्व में; भूमि अधिकारों की माँग की और ब्रिटिश कानूनों का विरोध किया।

o असम में बागान श्रमिक: घर वापस आने और जाने की स्वतंत्रता चाहते थे (अंतर्देशीय उत्प्रवास अधिनियम का उल्लंघन किया)।

आंदोलन हिंसक हो गया

• चौरी चौरा की घटना (1922): एक हिंसक भीड़ ने पुलिस के साथ झड़प की; जिसके परिणामस्वरूप गांधीजी ने असहयोग आंदोलन को वापस ले लिया।

दांडी मार्च और सविनय अवज्ञा आंदोलन

• 1930 में, गांधीजी ने दांडी में नमक कानून तोड़कर सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया। मांगें शामिल थीं:

❖ नमक कर का उन्मूलन
❖ दमनकारी कानूनों का अंत
❖ राजनीतिक कैदियों की रिहाई

विभिन्न समूहों की भागीदारी:

❖ अमीर किसान राजस्व कम कराना चाहते थे
❖ गरीब किसानों ने जमींदारों को बकाया लगान रद्द करने की मांग की
❖ पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास और जी.डी. बिड़ला जैसे उद्योगपतियों ने आंदोलन का समर्थन किया
❖ महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया

सविनय अवज्ञा की सीमाएँ

1. सभी सामाजिक समूह स्वराज की अवधारणा से आकर्षित नहीं थे, जैसे दलित कहलाने वाले कांग्रेस ने उच्च जाति के हिंदुओं को नाराज़ करने के डर से उन्हें नज़रअंदाज़ कर दिया था।
2. गांधी जी ने उन्हें हरिजन कहा। उनका मानना था कि अगर अस्पृश्यता को समाप्त नहीं किया गया तो सौ साल तक स्वराज नहीं आएगा। उन्होंने मंदिरों में प्रवेश और सार्वजनिक कुओं, तालाबों, सड़कों और स्कूलों तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए सत्याग्रह का आयोजन किया।

बहु विकल्पीय प्रश्न

1. "1919 में, अंग्रेजों ने रॉलेट एक्ट पारित किया, जिसके तहत बिना किसी मुकदमे के राजनीतिक कैदियों को हिरासत में रखा जा सकता था। इसके कारण व्यापक विरोध प्रदर्शन हुए, जिसकी परिणति जलियांवाला बाग हत्याकांड में हुई।" भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन पर रॉलेट एक्ट का तत्काल प्रभाव क्या था?
a) भारतीयों ने सुधार का स्वागत किया b) इसके कारण गांधीजी ने अंग्रेजों का समर्थन किया
c) इसने विरोध में विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को एकजुट किया d) इसने भारतीयों को अधिक राजनीतिक अधिकार

प्रदान किए
संकेत: c) इसने विरोध में विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को एकजुट किया

2. "1930 में नमक मार्च के दौरान, गांधीजी अंग्रेजों द्वारा लगाए गए नमक कानून को तोड़ने के लिए 240 मील पैदल चलकर दांडी गए।" नमक मार्च का प्रतीकात्मक महत्व क्या था?
a) इसने नमक पर कर की मांग की b) यह केवल खाद्य आपूर्ति के बारे में था
c) इसने अहिंसक तरीके से ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी d) इसका उद्देश्य ब्रिटिश नमक को बढ़ावा देना था
उत्तर: c) इसने अहिंसक तरीके से ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी

3. असहयोग आंदोलन के दौरान बाबा रामचंद्र ने किस समूह का नेतृत्व किया था?
a) बागान मजदूर b) उद्योगपति c) अवध के किसान d) दलित
उत्तर: c) अवध के किसान
4.निम्नलिखित कथन देखें: "1928 में जब साइमन कमीशन भारत आया तो उसका स्वागत 'साइमन वापस जाओ!' के नारे के साथ किया गया। कांग्रेस और मुस्लिम लीग सहित सभी दलों ने इसका विरोध किया।" भारतीय राजनीतिक दलों ने साइमन कमीशन का विरोध क्यों किया?
A. इसका उद्देश्य भारतीय रियासतों पर ब्रिटिश नियंत्रण बढ़ाना था।
B. इसमें केवल ब्रिटिश सदस्य शामिल थे और इसमें कोई भारतीय प्रतिनिधित्व नहीं था।
C. इसने सांप्रदायिक आधार पर भारत के विभाजन का प्रस्ताव रखा
D. इसने भारतीयों को तत्काल सत्ता हस्तांतरण की सिफारिश की
संकेत:B. इसमें केवल ब्रिटिश सदस्य शामिल थे और इसमें कोई भारतीय प्रतिनिधित्व नहीं था।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. यदि ब्रिटिशों ने तुर्की के खलीफा के साथ उचित व्यवहार किया होता, तो क्या आपको लगता है कि खिलाफत आंदोलन हुआ होता? क्यों या क्यों नहीं?
संकेत: नहीं; यह सीधे तौर पर खलीफा के प्रति मुस्लिम भावनाओं से जुड़ा था, जिसके हटने से भारतीय मुसलमान नाराज हो गए थे।
प्रश्न 2. गांधी ने सामूहिक सविनय अवज्ञा अभियान शुरू करने के लिए नमक को क्यों चुना, न कि किसी अन्य मुद्दे को?
संकेत: नमक ने सभी को प्रभावित किया - अमीर या गरीब - जिससे यह एक एकीकृत मुद्दा बन गया।
प्रश्न 3. अल्लूरी सीताराम राजू ने स्थानीय शिकायतों को राष्ट्रीय आंदोलन के साथ कैसे जोड़ा?
संकेत: उन्होंने वन कानूनों के खिलाफ आदिवासी गुस्से को बड़े ब्रिटिश विरोधी संघर्ष से जोड़ा।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. "1920 में शुरू किए गए असहयोग आंदोलन में उपाधियों को त्यागना, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना और खादी को बढ़ावा देना शामिल था। इसका उद्देश्य अहिंसक होना था।"असहयोग आंदोलन ने हिंसा के बिना ब्रिटिश शासन का विरोध करने का लक्ष्य कैसे रखा?

संकेत: इसने भारतीयों को ब्रिटिश संस्थाओं का बहिष्कार करने, उपाधियाँ लौटाने, विदेशी वस्तुओं का उपयोग बंद करने तथा स्वदेशी और खादी का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे शांतिपूर्ण तरीके से ब्रिटिश नियंत्रण कमजोर हो गया।

प्रश्न 2. गांधी द्वारा 1930 में शुरू किया गया सविनय अवज्ञा आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न समूहों को एक साथ लाया। किस तरह से सविनय अवज्ञा आंदोलन ने विभिन्न सामाजिक समूहों को आकर्षित किया और राष्ट्रीय आंदोलन में एकता को प्रोत्साहित किया?

संकेत: अमीर और गरीब किसान अलग-अलग कारणों (कर राहत, किराया कम करना) से इसमें शामिल हुए। औद्योगिक श्रमिकों ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का समर्थन किया। व्यापारी वर्ग ने संरक्षणवादी नीतियों के लिए स्वराज का समर्थन किया। महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। कुछ सीमाएँ: दलितों और मुसलमानों की आंतरिक मतभेदों के कारण अलग-अलग भागीदारी थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1"1919 में, जलियाँवाला बाग हत्याकांड ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया था। लोग रौलट एक्ट का विरोध करने के लिए शांतिपूर्वक एकत्र हुए, लेकिन उन पर गोलियाँ चलाई गई।" जलियाँवाला बाग हत्याकांड भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण मोड़ कैसे बन गया?

संकेत: इसने व्यापक आक्रोश पैदा किया, ब्रिटिश न्याय में विश्वास खो दिया, राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत किया और गांधीजी के असहयोग और जन-आंदोलन की ओर रुख को चिह्नित किया।

प्रश्न 2. प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) का भारत सहित ब्रिटिश उपनिवेशों पर दूरगामी प्रभाव पड़ा।
आपकी समझ के आधार पर, प्रथम विश्व युद्ध ने भारत को आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक रूप से कैसे प्रभावित किया?

संकेत:• रक्षा व्यय और युद्ध ऋणों में भारी वृद्धि,• करों और सीमा शुल्क में वृद्धि,• सैनिकों की जबरन भर्ती,• आवश्यक वस्तुओं की कमी और कीमतों में वृद्धि,• राष्ट्रवादी विचारों का प्रसार और कठिनाइयों के कारण अशांति

मानचित्र कार्य-

मानचित्र पर स्थित/लेबल किए जाने/पहचाने जाने वाले क्षेत्रों की सूची

I. कांग्रेस अधिवेशन:• 1920 कलकत्ता • 1920 नागपुर • 1927 मद्रास अधिवेशन

II. 3 सत्याग्रह आंदोलन:• खेड़ा • चंपारण • अहमदाबाद मिल मजदूर

III. जलियांवाला बाग   IV. दांडी मार्च

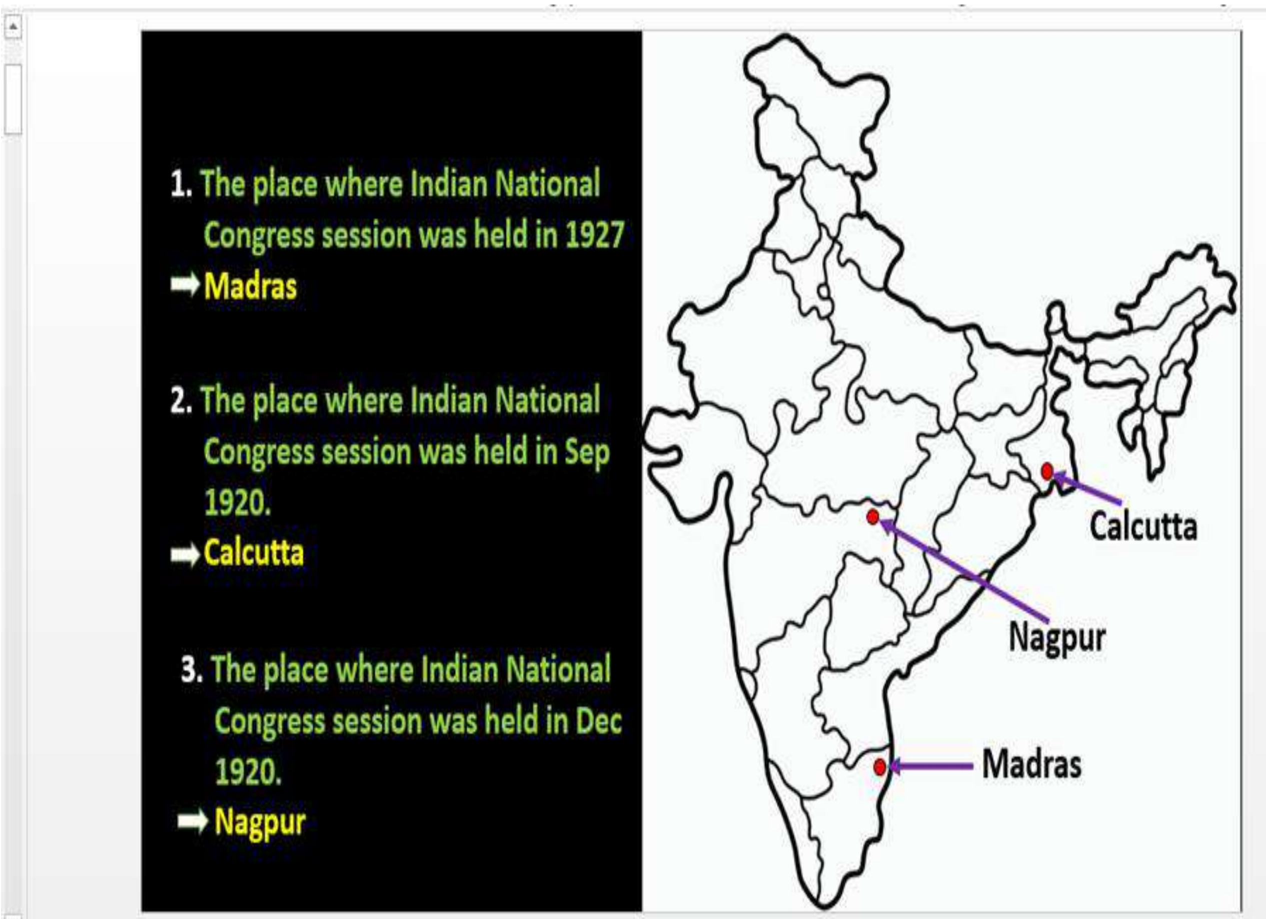

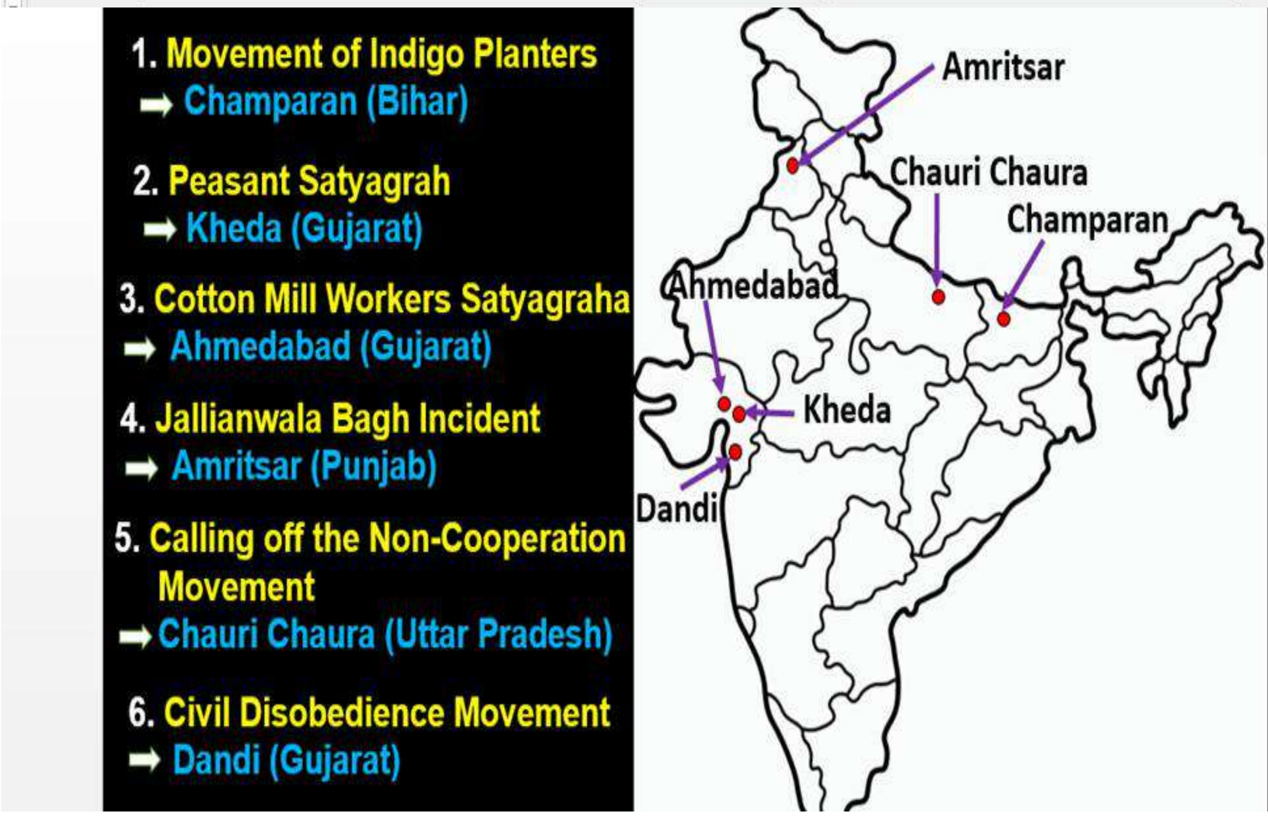

37 (a) भारत के दिए गए रेखा मानचित्र पर A और B स्थान अंकित किए गए हैं। उन्हें पहचानें और उनके पास खींची गई रेखाओं पर सही नाम लिखें।

(A) वह स्थान जहाँ सितंबर 1920 का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन आयोजित किया गया था।

(B) वह स्थान जहाँ महात्मा गांधी ने 1930 में नमक कानून तोड़ा था

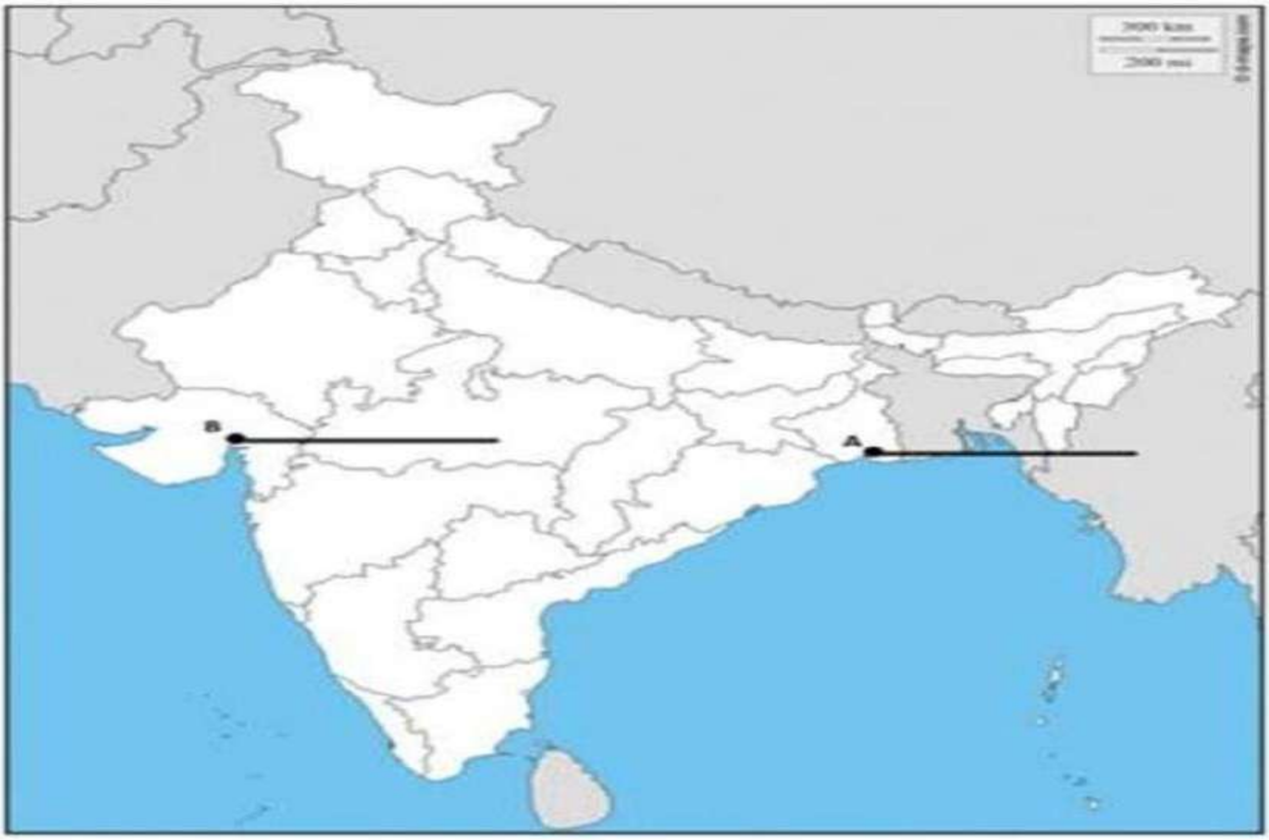

****

अध्याय 3
एक वैश्विक दुनिया का निर्माण

अध्याय का सार-

पूर्व-आधुनिक दुनिया

• भूमि और समुद्र (जैसे, रेशम मार्ग) के माध्यम से लंबी दूरी का व्यापार मौजूद था।
• माल, लोग, विचार और संस्कृतियाँ स्वतंत्र रूप से चलती थीं।
• रेशम मार्ग: मध्य एशिया के माध्यम से चीन को यूरोप से जोड़ता था।
• व्यापार ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी किया: बौद्ध धर्म यात्रियों और भिक्षुओं के माध्यम से एशिया में फैल गया।

उन्नीसवीं सदी

• यूरोपीय शक्तियाँ बाज़ारों और कच्चे माल के लिए महत्वाकांक्षी हो गईं।
• उपनिवेशों को आर्थिक संपत्ति के रूप में देखा गया।
• औद्योगिक क्रांति ने अर्थव्यवस्थाओं और समाजों को नया आकार देना शुरू कर दिया।
• माल, श्रम (बंधुआ मज़दूर) और पूंजी की आवाजाही बढ़ गई।

विजय, बीमारी और व्यापार

• अमेरिका पर यूरोपीय विजय 16वीं सदी में शुरू हुई।
• चेचक जैसी बीमारियों ने स्वदेशी आबादी को तबाह कर दिया।
• विजय और बीमारी ने यूरोपीय उपनिवेशीकरण को आसान बना दिया।
• अमेरिका को कीमती धातुओं और बागान फसलों के स्रोत के रूप में देखा गया।

बहुविकल्पीय प्रश्न -

Q1. अमेरिका में यूरोपीय लोगों के आगमन से स्वदेशी आबादी में भारी गिरावट आई, मुख्यतः इसलिए:

a) मूल निवासियों ने यूरोपीय लोगों के साथ व्यापार करने से इनकार कर दिया।

b) यूरोपीय लोगों ने ऐसी बीमारियाँ फैलाईं, जिनसे मूल निवासियों में कोई प्रतिरक्षा नहीं थी।

c) जलवायु में भारी बदलाव आया।

d) मूल निवासी स्वेच्छा से अन्य क्षेत्रों में चले गए।

संकेत:b) यूरोपीय लोगों ने ऐसी बीमारियाँ फैलाईं, जिनसे मूल निवासियों में कोई प्रतिरक्षा नहीं थी।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

Q1.यूरोपीय लोगों ने अमेरिका से __________ और __________ को महत्वपूर्ण वस्तुओं के रूप में लिया।

संकेत: एक ऐसी फसल है जो यूरोप में मुख्य भोजन बन गई; दूसरी एक मूल्यवान नकदी फसल थी।

उत्तर: आलू और तम्बाकू

लघु उत्तरीय प्रश्न-

Q1. "सिल्क रूट केवल रेशम और मसालों के बारे में ही नहीं था, बल्कि महाद्वीपों में विचारों और प्रौद्योगिकियों के बारे में भी था।" व्याख्या करें कि सिल्क रूट ने वैश्विक कनेक्शन में कैसे योगदान दिया।

संकेत: दो चीजें जो व्यापार मार्गों के माध्यम से फैलीं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

Q1. "16वीं और 19वीं शताब्दियों के बीच, यूरोपीय शक्तियों ने उपनिवेश स्थापित किए, दासों का व्यापार किया और एशिया, अफ्रीका और अमेरिका से संसाधन निकाले।" उपनिवेशित समाजों पर प्रारंभिक वैश्वीकरण के आर्थिक और सामाजिक प्रभावों की व्याख्या करें।

संकेत: उपनिवेशित समाजों को आर्थिक शोषण (कच्चे माल की निकासी, विऔद्योगीकरण), सांस्कृतिक विघटन, जबरन श्रम प्रणाली और यूरोपीय वस्तुओं और विचारों के प्रसार का सामना करना पड़ा, जिससे पारंपरिक जीवन बदल गया।

****

अध्याय 4

प्रिंट संस्कृति और आधुनिक दुनिया -मुख्य बिंदु

पहली छपी हुई किताबें-

पहली किताब- (वुडब्लॉक प्रिंटिंग)। डायमंड सूत्र

सबसे पहले छपाई: चीन (वुडब्लॉक प्रिंटिंग)।

बौद्ध मिशनरियों और व्यापारियों ने एशिया में छपाई को फैलाने में मदद की।

जापान और कोरिया में फैल गया।

गुटेनबर्ग और प्रिंटिंग प्रेस-

जोहानेस गुटेनबर्ग ने जर्मनी में प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किया (15वीं शताब्दी के मध्य में)।

पहली छपी हुई किताब: बाइबिल (1455)।

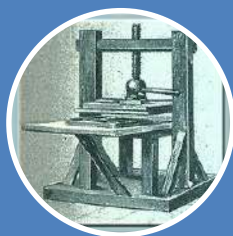

छपाई ने संचार में क्रांति ला दी - मैनुअल कॉपी करने की जगह मूवेबल टाइप प्रिंटिंग ने ले ली।

प्रिंट क्रांति और इसका प्रभाव-

- **छपाई के कारण:-**
  - ❖ साक्षरता में वृद्धि
  - ❖ नए विचारों और ज्ञान का प्रसार
  - ❖ पढ़ने वाले लोगों का उदय

• मार्टिन लूथर की नाइन्टी फाइव थीसिस प्रिंट के ज़रिए फैली, जिससे प्रोटेस्टेंट सुधार को बढ़ावा मिला।
• वैज्ञानिक और राजनीतिक विचार तेज़ी से फैले।
• किताबें सस्ती और ज़्यादा सुलभ हो गईं।

पढ़ने का जूनून-

• 17वीं-18वीं शताब्दी: उपन्यासों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं का उदय।
• प्रिंट, बहस और आलोचना का माध्यम बन गया।
• व्यक्तिगत राय और आधुनिक चेतना विकसित करने में मदद की।

प्रिंट और फ्रांसीसी क्रांति-

• प्रिंट संस्कृति ने ज्ञानोदय के विचारों को फैलाया।
• पारंपरिक अधिकार पर सवाल उठाने को प्रोत्साहित किया।
• साक्षरता बढ़ने से आम लोगों को सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों के बारे में पता चला।
• जनमत जुटाने में पैम्फलेट और कार्टून ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत में प्रिंट संस्कृति-

• गोवा में पुर्तगाली मिशनरियों के साथ शुरुआती छपाई शुरू हुई।

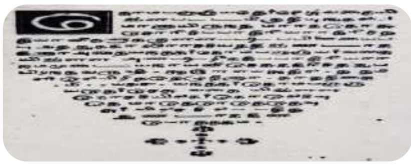

• 1579 में पहली तमिल किताब छपी।

• 19वीं सदी तक, छपाई स्थानीय भाषाओं में फैल गई थी।

समाचार पत्र, किताबें, धार्मिक ग्रंथ और सामाजिक सुधार साहित्य लोकप्रिय हो गए।

धार्मिक सुधार और प्रिंट-

प्रिंट का उपयोग: धार्मिक संदेश फैलाने,सामाजिक प्रथाओं पर बहस करने,औपनिवेशिक और मिशनरी प्रचार का मुकाबला करने के लिए किया जाता था,उदाहरण: राजा राम मोहन राय, सत्य प्रकाश, केसरी।
प्रकाशन के नए रूप

• उपन्यास, गीत, आत्मकथाएँ और राजनीतिक ग्रंथ उभरे।
• महिलाएँ, श्रमिक और निम्न-जाति समूह लिखना और प्रकाशित करना शुरू कर दिया।

बहु विकल्पीय प्रश्न-

Q1.."19वीं शताब्दी में, प्रिंट सुधारकों के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण बन गया, जो शिक्षा, जाति सुधार और

महिलाओं के अधिकारों के विचारों को बढ़ावा देना चाहते थे."19वीं शताब्दी के भारतीय समाज में प्रिंट संस्कृति ने कौन सी भूमिका निभाई?
a) साक्षरता में कमी b) अंधविश्वासों का प्रसार
c) औपनिवेशिक निष्ठा को प्रोत्साहित किया d) सामाजिक सुधार और जागरूकता को बढ़ावा दिया
उत्तर: d) सामाजिक सुधार और जागरूकता को बढ़ावा दिया

Q2. मुद्रण के आविष्कार के कारण यूरोप में पुनर्जागरण और सुधार तेजी से फैल गया। आविष्कारक कौन था?
a. मार्टिन लूथर b. जोहान्स गुटेनबर्ग c. वोल्टेयर d. रेने डेसकार्टेस
संकेत: एक जर्मन शिल्पकार जिसने चल धातु प्रकार पेश किया।

Q3.1450 के आसपास प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार के बाद, समाज में कौन सा बड़ा बदलाव आया?
a. लोगों ने किताबें पढ़ना बंद कर दिया b. केवल कुलीन लोग ही किताबें पढ़ सकते थे
c. जानकारी व्यापक रूप से उपलब्ध हो गई d. पांडुलिपियों ने मुद्रित ग्रंथों का स्थान ले लिया
संकेत: मुद्रित पुस्तकों ने दुर्लभ, हस्तलिखित पुस्तकों का स्थान ले लिया।

4.अभिकथन (A): सबसे पहले प्रिंट तकनीक चीन, जापान और कोरिया में विकसित की गई थी।
कारण (R): इन देशों ने यूरोप में इसकी शुरुआत से बहुत पहले वुडब्लॉक प्रिंटिंग का इस्तेमाल किया था।
A. A और R दोनों सत्य हैं, और R, A का सही स्पष्टीकरण है।
B. A और R दोनों सत्य हैं, लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
C. A सत्य है, लेकिन R असत्य है।
D. A असत्य है, लेकिन R सत्य है।
संकेत: A. A और R दोनों सत्य हैं, और R, A का सही स्पष्टीकरण है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

Q1. मुद्रण तकनीक एशिया और यूरोप में स्वतंत्र रूप से विकसित हुई, जिससे सांस्कृतिक क्रांतियाँ हुईं। यूरोप में, गुटेनबर्ग के मुद्रण प्रेस ने किस प्रसिद्ध पुस्तक के बड़े पैमाने पर उत्पादन को जन्म दिया?
संकेत: यह एक पवित्र ग्रंथ का लैटिन संस्करण था।
प्रश्न 2. औपनिवेशिक भारत में सुधारकों ने पारंपरिक प्रथाओं को चुनौती देने और आधुनिक सोच को बढ़ावा देने के लिए समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का उपयोग किया। सत्य प्रकाश एक पत्रिका थी जिसने __________ आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
संकेत: इस आंदोलन की शुरुआत स्वामी दयानंद सरस्वती ने की थी।

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. प्रश्न 1. "1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट अंग्रेजों द्वारा भारतीय भाषा के समाचार पत्रों के प्रभाव को रोकने के लिए पेश किया गया था।"भारतीयों द्वारा वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट को दमनकारी क्यों माना गया?
उत्तर: इसने भारतीय भाषा के समाचार पत्रों पर सेंसरशिप और नियंत्रण की अनुमति दी, जिससे अभिव्यक्ति की

स्वतंत्रता और राष्ट्रवादी प्रवचन प्रतिबंधित हो गए।
भारतीय समाज को सुधारने में मदद मिली?
संकेत: विचारों, बहसों और जनमत की पहुँच पर विचार करें।

प्रश्न 2. कल्पना कीजिए कि आप 19वीं सदी में रह रहे हैं, जब राजा राममोहन राय और अन्य जैसे सुधारक आम जनता तक पहुँचने के लिए प्रिंट का इस्तेमाल करते थे। मुद्रित सामग्री के प्रसार ने भारतीय समाज को सुधारने में किस तरह से मदद की?
संकेत: विचारों, बहसों और जनमत की पहुँच पर विचार करें।

प्रश्न 3. मार्टिन लूथर की नाइन्टी फाइव थीसिस को जल्दी से पूरे यूरोप में मुद्रित और वितरित किया गया। प्रिंट संस्कृति ने प्रोटेस्टेंट सुधार के प्रसार में किस तरह मदद की, इसके दो तरीके बताइए।
संकेत: सूचना की पहुँच और गति के बारे में सोचें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Q1. प्रिंटिंग प्रेस से पहले, किताबें दुर्लभ और महंगी थीं, जिससे ज्ञान कुछ ही लोगों तक सीमित था। इसके आविष्कार के बाद, चीजें तेज़ी से बदलीं। प्रिंट संस्कृति के प्रसार से पहले और बाद में यूरोपीय समाज की तुलना करें। प्रिंट ने लोगों के जीवन को कैसे बदला?
संकेत: पुस्तकों तक पहुँच, विचारों की विविधता और सार्वजनिक बहस पर विचार करें।

Q. 2.भारत में मुद्रण संस्कृति कैसे विकसित हुई और इसने समाज में क्या बदलाव लाए?
संकेत: मिशनरियों द्वारा शुरू किया गया, भारतीय भाषाओं में विस्तार किया गया, सुधार आंदोलनों का समर्थन किया गया, महिलाओं की शिक्षा, जातिगत असमानताएँ। साक्षरता में वृद्धि, औपनिवेशिक शासन। हाशिए पर पड़े समूहों को सशक्त बनाया गया।

****

अध्याय-1

संसाधन और विकास

अध्याय का सार -

संसाधन और उपयोग	प्रकृति के मुफ़्त उपहार नहीं - प्रकृति, तकनीक और मानव संस्थाओं के बीच बातचीत के ज़रिए निर्मित - अंधाधुंध उपयोग से होता है:संसाधनों की कमी, आर्थिक असमानता, पारिस्थितिकी मुद्दे (ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण)
संसाधन नियोजन	असमान वितरण के कारण ज़रूरी - कदम: पहचान और सर्वेक्षण, तकनीक और संस्थाओं का उपयोग, राष्ट्रीय लक्ष्यों के साथ संरेखण - तकनीक, कुशल लोगों और संस्थाओं की ज़रूरत
संसाधन संरक्षण	गांधीजी ने लालच के खिलाफ़ चेतावनी दी - बड़े पैमाने पर उत्पादन नहीं, बल्कि जनता द्वारा उत्पादन का समर्थन - लक्ष्य: टिकाऊ, गैर-शोषणकारी उपयोग
भूमि एक संसाधन के रूप	जीवन, कृषि, अर्थव्यवस्था का समर्थन करती है - भारत की भूमि विशेषताएँ: • मैदान (43%) - कृषि, उद्योग • पहाड़ (30%) - नदियाँ, पर्यटन, पारिस्थितिकी • पठार -27%
भूमि उपयोग और ातियाँ	- मिट्टी, जलवायु, स्थलाकृति, जनसंख्या, संस्कृति, तकनीक पर निर्भर - मुद्दे: चरागाहों का सिकुड़ना, वनों का कम होना, क्षेत्रीय भिन्नता - उदाहरण: पंजाब - अधिक खेती; पूर्वोत्तर राज्य - कम खेती
भूमि क्षरण और संरक्षण	- कारण: वनों की कटाई, अत्यधिक चराई, खनन, अत्यधिक सिंचाई, औद्योगिक प्रदूषण - प्रभाव: मिट्टी की क्षति, कम उत्पादकता, पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान - समाधान: वनीकरण, नियंत्रित चराई, रेत के टीलों का स्थिरीकरण, अपशिष्ट उपचार, खनन स्थल प्रबंधन

भारत में मृदा वर्गीकरण-

जलोढ़ मिट्टी

-उत्तरी/पूर्वी मैदानों, राजस्थान, गुजरात के कुछ हिस्सों में पाई जाती है

-नदी के जमाव से बनी, व्यापक और उपजाऊ

• बांगर - पुरानी, कम उपजाऊ

• खादर - नई, अधिक उपजाऊ

-गन्ने, गेहूँ, धान के लिए आदर्श

काली मिट्टी:

रेगुर या काली कपास मिट्टी कहलाती है दक्कन के पठार में पाई जाती है

- नमी को सोखने वाली, चिकनी मिट्टी

- कैल्शियम, मैग्नीशियम, पोटाश, चूना से भरपूर; फॉस्फोरस में कम

- शुष्क मौसम में दरारें वायु संचार में मदद करती हैं

लाल और पीला:

- आग्नेय चट्टानों से

- दक्कन, ओडिशा, छत्तीसगढ़, पश्चिमी घाट में पाया जाता है

- लोहे के कारण लाल; हाइड्रेट होने पर पीला

लैटेराइट मिट्टी

भारी बारिश से रिसने वाली

- कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, पूर्वोत्तर में पाई जाती है,अम्लीय, पोषक तत्वों में कमी

- संरक्षण के साथ चाय, कॉफी, काजू के लिए अच्छी

शुष्क मिट्टी

- राजस्थान में पाई जाती है

- रेतीली, खारी, कम नमी/ह्यूमस

- कंकर परतें पानी को रोकती हैं

- सिंचाई से खेती योग्य

वन मिट्टी

पहाड़ी/पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती है - बनावट: घाटियों में गाद/दोमट; ढलानों पर खुरदरी - अम्लीय, कम ह्यूमस (बर्फीली); उपजाऊ (नदी की ढलानें)

मृदा अपरदन

कारण- वनों की कटाई,
अत्यधिक चराई
खनन
खराब खेती

समाधान-
-समोच्च
-जुताई
-टेरेस खेती
-पट्टी फसल • आश्रय बेल्ट

प्रकार-
-पानी: नाले (खड्ड), चादर का कटाव
-समतल/ढलान वाली भूमि पर हवा से कटाव मिट्टी

भारत में संसाधन योजना

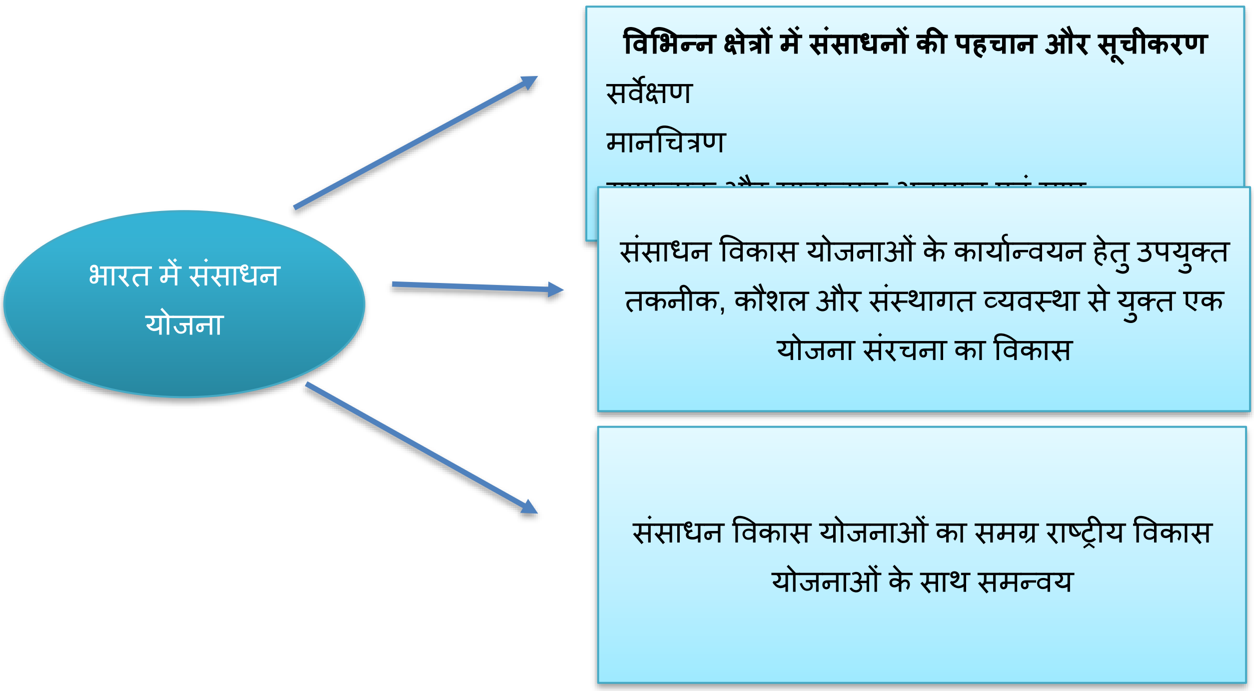

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से कौन-सा सही प्रकार से मिलान किया गया है?

A. जलोढ़ मिट्टी – कपास के लिए उपयुक्त

B. काली मिट्टी – कैल्शियम युक्त कंकर परतें जल रिसाव में बाधा डालती हैं

C. लैटराइट मिट्टी – उचित संरक्षण विधियों के साथ चाय, कॉफी और काजू के लिए उपयोगी

D. लाल और पीली मिट्टी – नदियों द्वारा निक्षेपण से बनी

उत्तर: C. लैटराइट मिट्टी – उचित संरक्षण विधियों के साथ चाय, कॉफी और काजू के लिए उपयोगी

प्रश्न 2. कथन (A): भारत में संसाधन योजना के लिए आवश्यक है कि संसाधन विकास योजनाओं को राष्ट्रीय विकास रणनीतियों के साथ जोड़ा जाए।

कारण (R): संसाधन योजना केवल संसाधनों की पहचान और मानचित्रण तक सीमित होती है, इसमें तकनीक या संस्थागत ढांचे का एकीकरण नहीं होता।

विकल्प:

A. A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

B. A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है

C. A सही है लेकिन R गलत है

D. A गलत है लेकिन R सही है

उत्तर: C. A सही है लेकिन R गलत है

अति **लघु उत्तरीय प्रश्न-**

प्रश्न: _______________ हिमालयी क्षेत्र में भूमि क्षरण की समस्या का समाधान है।

उत्तर: सीढ़ी खेती

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. "संसाधन योजना सभी प्रकार के जीवन के सतत अस्तित्व के लिए आवश्यक है।" क्या आप सहमत हैं? उदाहरणों के साथ उत्तर स्पष्ट करें।

संकेत: हाँ, संसाधन योजना संतुलित उपयोग सुनिश्चित करती है, अत्यधिक दोहन से बचाती है और भविष्य की आवश्यकताओं का समर्थन करती है। उदाहरण:पुनर्वनीकरण पारिस्थितिकी तंत्र को सुरक्षित रखता है, जल संरक्षण भविष्य के लिए जल उपलब्ध कराता है, खनिज प्रबंधन उद्योगों को बनाए रखता है और प्रकृति को हानि नहीं पहुँचाता।

प्रश्न 2. भारत में संसाधन योजना की प्रभावशीलता का मूल्यांकन कीजिए। इसकी क्या शक्तियाँ और सीमाएँ हैं?

संकेत:शक्तियाँ:संसाधनों का कुशल उपयोग, संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा, सतत विकास का समर्थन

सीमाएँ:क्रियान्वयन में कमी, क्षेत्रीय असंतुलन, संस्थानों के बीच समन्वय की कमी.

चित्र आधारित प्रश्न-

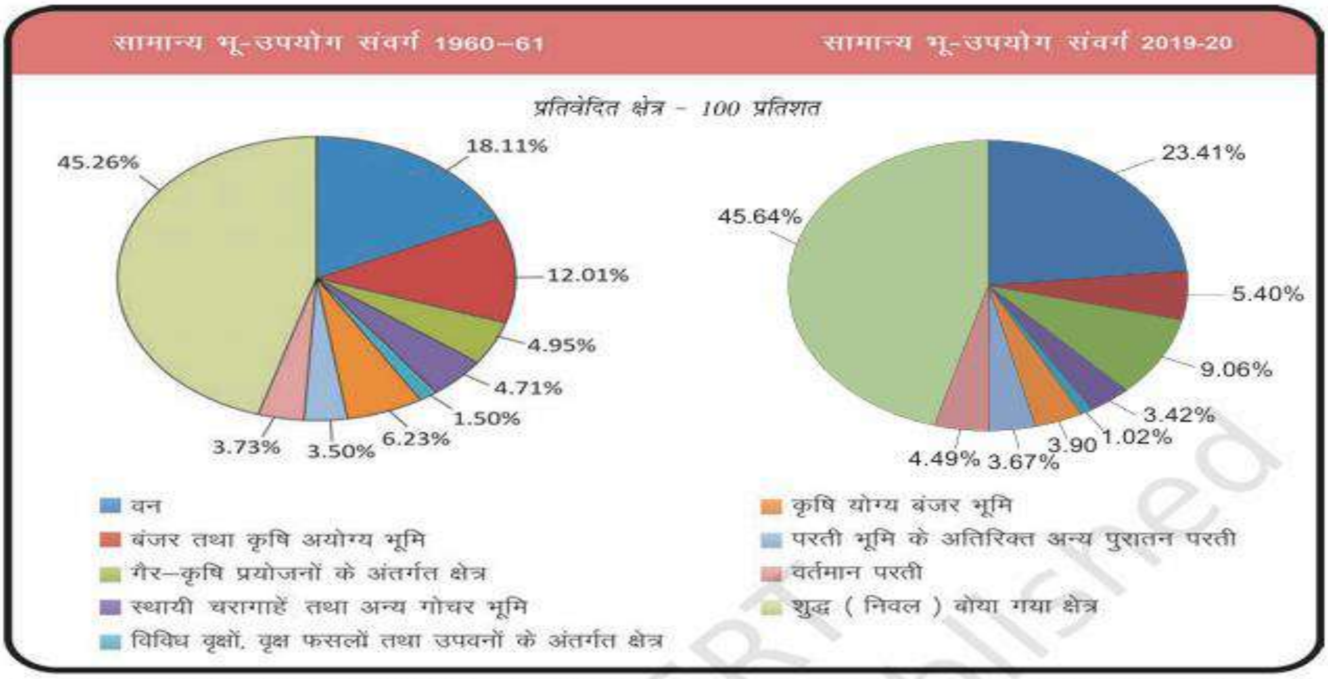

स्रोत– डायरेक्टरेट ऑफ इकोनोमिक्स एंड स्टैटिस्टिक्स, मिनिस्ट्री ऑफ एग्रीकल्चर एंड फार्मर्स वेलफेयर, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, 2023

प्रश्न-

1. वन क्षेत्र में वृद्धि का कारण क्या हो सकता है?

संकेत-वनरोपण अभियान, जागरूकता कार्यक्रम और सख्त वन संरक्षण कानून।

2. बंजर और अनुपजाऊ भूमि में कमी क्यों आई है?

संकेत-भूमि सुधार, मृदा उन्नयन और बेहतर भूमि उपयोग योजना।

3. स्थायी चारागाह में कमी ग्रामीण आजीविका को कैसे प्रभावित करेगी?

संकेत-घटती चराई भूमि से पशुपालन और दुग्ध उत्पादन प्रभावित होगा।

दीर्घ उत्तर प्रकार प्रश्न

प्रश्न 1. यदि आज गांधीजी के "जन-उत्पादन" के विचार को लागू किया जाए, तो यह ग्रामीण भारत की उद्योगों और

स्थानीय अर्थव्यवस्था को कैसे बदल सकता है?
संकेत: उद्योगों का विकेंद्रीकरण, ग्रामीण शिल्पकारों और समुदायों का सशक्तिकरण, बेरोजगारी में कमी, स्थानीय एवं सतत अर्थव्यवस्था को बढ़ावा, ग्रामीण से शहरी पलायन में कमी, स्थानीय संसाधनों का उपयोग और संरक्षण

प्रश्न 2. क्या केवल तकनीकी प्रगति से संसाधनों का सतत उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है? क्यों या क्यों नहीं?
संकेत:नहीं, केवल तकनीकी प्रगति पर्याप्त नहीं है।
इसके साथ चाहिए:जन-जागरूकता, सरकारी नीतियाँ, समुदाय की भागीदारी, उत्तरदायी मानव व्यवहार
केवल समग्र दृष्टिकोण से ही संसाधनों का सतत उपयोग संभव है।

****

अध्याय-2
वन एवं वन्य जीव संसाधन

अध्याय का सार
वनस्पति और जीव-जंतु भारत में

वन ⟶ मुख्य उत्पादक ⟶ सभी जीवन रूपों का समर्थन करते हैं ⟶ पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखते हैं
↓
भारत की जैव विविधता ⟶ विश्व की सबसे समृद्ध जैव विविधताओं में से एक
↓
वनस्पति और जीव-जंतु ⟶ दैनिक जीवन में शामिल ⟶ अक्सर अनदेखी की जाती है
↓
मानव क्रियाएं ⟶ असंवेदनशीलता और शोषण ⟶ वनों और वन्यजीवों पर दबाव ⟶ जैव विविधता को खतरा
वन एवं वन्य जीवन का संरक्षण

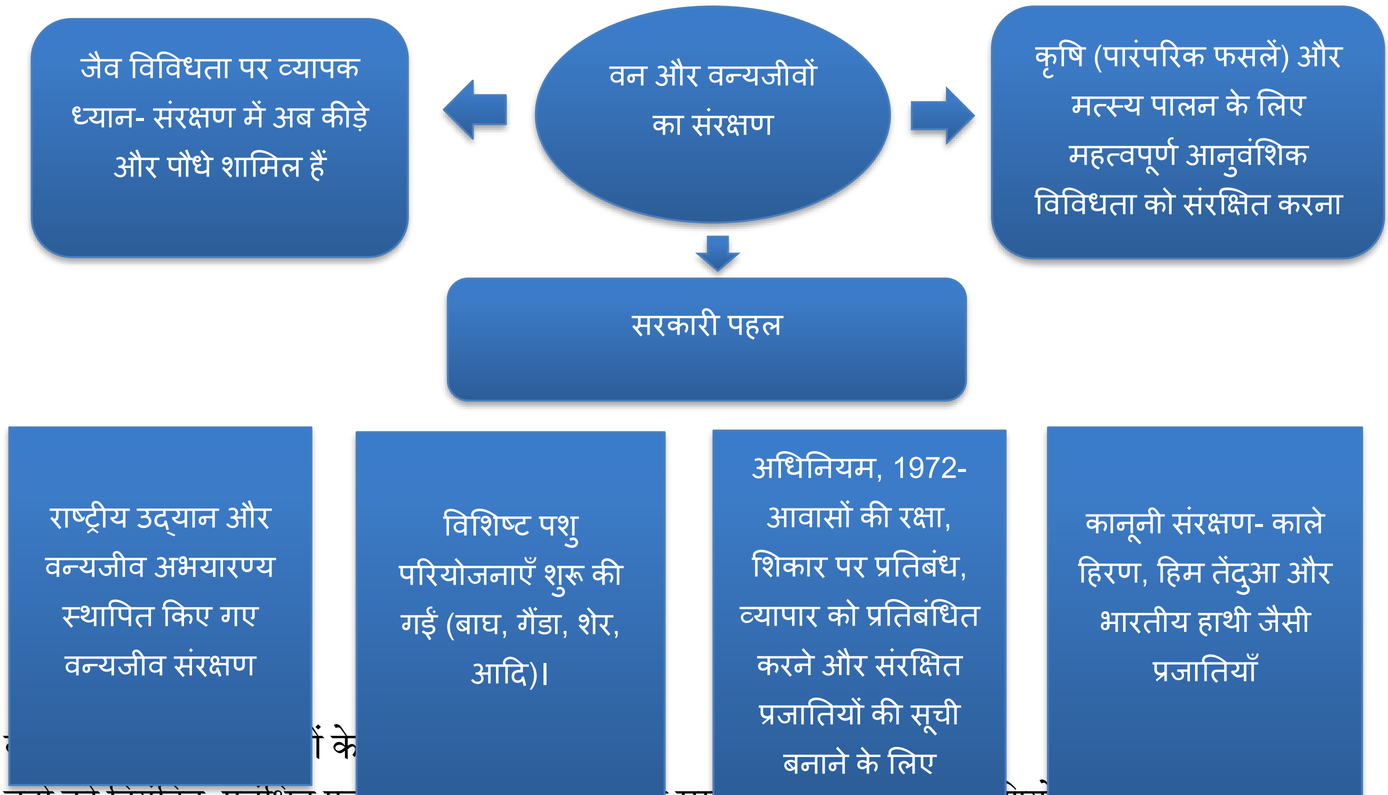

व ों के
वनों को नियंत्रित, प्रबंधित एवं विनियमित करने के लिए सरकार ने वनों को निम्न श्रेणियों में विभाजित किया है-

स्थायी वन मध्य प्रदेश में स्थायी वनों का सबसे बड़ा क्षेत्र (वन क्षेत्र का 75%) है		स्थायी वन
आरक्षित वन (जम्मू एवं कश्मीर, आंध्र प्रदेश, उत्तराखंड, केरल, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र जैसे राज्य)	संरक्षित वन (बिहार, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, ओडिशा और राजस्थान)	अवर्गीकृत वन (पूर्वोत्तर राज्य और गुजरात के कुछ हिस्से)
वन भूमि का आधे से अधिक हिस्सा आरक्षित घोषित किया गया है। ये संरक्षण प्रयासों के लिए सबसे मूल्यवान हैं।	लगभग एक तिहाई वन भूमि संरक्षित है।	सरकार, निजी व्यक्तियों या समुदायों के स्वामित्व वाले वन और बंजर भूमि।

संरक्षण में समुदाय की भागीदारी-

संरक्षण में समुदाय की भागीदारी

- समुदाय की भागीदारी
  - अलवर जिले के ग्रामीणों ने 1200 हेक्टेयर क्षेत्र को "भैरोंदेव डाक्य सोनचुरी" घोषित कर शिकार पर प्रतिबंध लगाया और स्वतंत्र रूप से वन्यजीवों की रक्षा की।
  - सरिस्का (राजस्थान) के स्थानीय समुदायों ने **वन्यजीव संरक्षण अधिनियम** का उपयोग कर खनन का विरोध किया।
- संयुक्त वन प्रबंधन
  - यह योजना **1689 में ओडिशा** में शुरू की गई थी, जिससे समुदायों को क्षतिग्रस्त वनों की रक्षा और पुनर्स्थापना में शामिल किया गया।
  - **हिमालय क्षेत्र में चिपको आंदोलन** ने वनों की कटाई का विरोध किया और स्थानीय प्रजातियों का उपयोग कर सामुदायिक वनीकरण को बढ़ावा दिया।
- स्थानीय भागीदारी का महत्व
  - **पर्यावरण संरक्षण और संसाधन प्रबंधन** में स्थानीय समुदायों की **सक्रिय भागीदारी अनिवार्य** होती है।

- **असुरक्षित प्रजातियाँ**– ऐसी प्रजातियाँ जो संभवतः संकटग्रस्त हो सकती हैं यदि परिस्थितियाँ न सुधरीं।
- वनों की कटाई– वनों को हटाना या साफ करना, आमतौर पर कृषि या शहरी विकास के लिए।
- **लुप्त प्रजातियाँ** – ऐसी प्रजातियाँ जो अब अस्तित्व में नहीं हैं।
- **पवित्र उपवन** – धार्मिक या सांस्कृतिक विश्वासों के कारण संरक्षित वन क्षेत्र।
- **संकटग्रस्त प्रजातियाँ** – ऐसी प्रजातियाँ जो विलुप्त होने के खतरे में हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न-

प्रश्न 1. अभिकथन (A): चिपको आंदोलन हिमालयी क्षेत्र में वनों की कटाई को रोकने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण जमीनी पहल थी।

कारण (R): लोग वन ठेकेदारों द्वारा पेड़ों को काटे जाने से बचाने के लिए उनसे लिपट जाते थे।

a. A और R दोनों सत्य हैं, तथा R, A का सही स्पष्टीकरण है।

b. A और R दोनों सत्य हैं, लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

c. A सत्य है, लेकिन R असत्य है।

d. A असत्य है, लेकिन R सत्य है।

उत्तर: a. A और R दोनों सत्य हैं, तथा R, A का सही स्पष्टीकरण है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन सा बीज बचाओ आंदोलन और नवधान्य जैसे आंदोलनों के अभिनव दृष्टिकोण को सबसे अच्छी तरह दर्शाता है? A) आधुनिक कीटनाशकों का उपयोग करके बड़े पैमाने पर व्यावसायिक खेती को बढ़ावा देना

B) उच्च उपज के लिए आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलों को प्रोत्साहित करना

C) पारंपरिक बीज संरक्षण और रसायन मुक्त खेती का समर्थन करना

D) वनों की रक्षा के लिए कृषि पर पूर्ण प्रतिबंध की वकालत करना

उत्तर: C) पारंपरिक बीज संरक्षण और रसायन मुक्त खेती का समर्थन करना

लघु उत्तरीय प्रश्न-

Q1. विकास और संरक्षण जैव विविधता को नुकसान पहुँचाए बिना कैसे साथ-साथ चल सकते हैं?

संकेत- विकास और संरक्षण टिकाऊ प्रथाओं, पर्यावरण अनुकूल तकनीक, समुदाय की भागीदारी, और पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देने वाली नीतियों के माध्यम से साथ-साथ चल सकते हैं।

Q2. जैव विविधता संरक्षण में पारंपरिक ज्ञान (जैसे कि देव वनों) और आधुनिक कानूनों की क्या भूमिका है?

संकेत- पारंपरिक ज्ञान प्रकृति के प्रति सांस्कृतिक सम्मान और संरक्षण के माध्यम से जैव विविधता को संरक्षित करता है, जबकि आधुनिक कानून प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग को नियंत्रित कर उनके शोषण को रोकते हैं।

Q3. सतत संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए आप कौन-से नवाचार अपनाएंगे, और इसमें स्थानीय समुदाय को कैसे शामिल करेंगे?

संकेत- मैं इको-पर्यटन को बढ़ावा दूँगा, वृक्षारोपण अभियान आयोजित करूंगा, स्थानीय ज्ञान का उपयोग करूंगा, जन-जागरूकता अभियान चलाऊँगा और वन्यजीवों की निगरानी और सुरक्षा के लिए सामुदायिक वन समूह बनाऊँगा।

Q4. कल्पना करें कि आप एक वन्यजीव वैज्ञानिक हैं और एक संकटग्रस्त प्रजाति को बचाना आपका कार्य है। इसे लुप्त होने से बचाने के लिए आप कौन-कौन से कदम उठाएंगे और क्यों?

संकेत- मैं उसके आवास की रक्षा करूंगा, शिकार को नियंत्रित करूंगा, प्रजनन कार्यक्रमों को बढ़ावा दूँगा, जन-जागरूकता फैलाऊँगा और दीर्घकालिक संरक्षण के लिए स्थानीय समुदायों के साथ सहयोग करूंगा।

Q5. क्या वन्यजीवों की सुरक्षा के लिए स्थानीय समुदायों को जंगलों से हटाना उचित है? तर्क दें।

संकेत- पक्ष में: इससे वन्यजीवों के लिए सुरक्षित आवास बनते हैं।

विपक्ष में: यह लोगों की आजीविका को प्रभावित करता है और पारंपरिक संरक्षण भूमिकाओं को समाप्त करता है।

संतुलित समाधान: ऐसे समाधान होने चाहिए जो वन्यजीवों और मानव अधिकारों दोनों की रक्षा करें।

चित्र आधारित प्रश्न-

Gharial on the brink

The gharial population has been at its lowest since the 1970s. What went wrong and what can we do?

ROMULUS WHITAKER and JANAKI LENIN

WISPY tendrils of mist rise delicately from the water surface, tinged gold by the dawn. Your breath hangs as little clouds of vapour as you gaze upon the Girwa River on a cold winter morning. A trio of hollow clapping sounds from the other side of the river, half a kilometre away tells you that an adult male gharial is advertising his presence. It is the height of the breeding season. The place seems trapped in a time in early history when man was still clad in animal skins. It is only as the sun rises higher and burns the mist off the water that the world comes into focus with appalling clarity. The five-km stretch of the Girwa River in Katerniaghat Wildlife Sanctuary is one of the only three wild breeding sites left in the world for the most unique of all the

CRITICALLY ENDANGERED: Captive gharial at the Madras C

Bird deaths blamed on dirty Yamuna

Delhi Govt Report Points To Toxic Elements in Stagnant Water

क्या आप उपर्युक्त समस्याओं के निदान के कारण ज्ञात कर सकते हैं?

प्रश्न-

1. आपके अनुसार संरक्षण प्रयासों के बावजूद घड़ियालों की संख्या में कमी क्यों आई है?

संकेत-प्रदूषण, अवैध शिकार, आवास विनाश और खाद्य श्रृंखला में बदलाव इसके मुख्य कारण हैं।

2. यमुना जैसी नदियों में प्रदूषण पक्षियों और घड़ियालों के अलावा अन्य जलीय जीवों की खाद्य श्रृंखला को कैसे प्रभावित कर सकता है?

संकेत -प्रदूषण से मछलियाँ और छोटे जीव मर जाते हैं, जिससे भोजन की कमी होती है और पूरी खाद्य श्रृंखला बिगड़ जाती है।

3.घड़ियालों के प्राकृतिक आवास को पुनर्स्थापित करने के लिए नागरिक और सरकार मिलकर कौन-कौन से कदम उठा सकते हैं?

संकेत-स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण, अवैध शिकार पर नियंत्रण और जागरूकता अभियान चला सकते हैं।

केस अध्ययन आधारित प्रश्न-

Q1. भारत में स्थानीय समुदायों ने संयुक्त वन प्रबंधन (JFM) कार्यक्रम के माध्यम से वन संरक्षण में अहम भूमिका निभाई है। यह कार्यक्रम 1988 में ओडिशा में शुरू हुआ, जिसमें स्थानीय समुदायों को क्षतिग्रस्त वन भूमि की सुरक्षा और पुनर्स्थापना में शामिल किया गया। इसके बदले में इन समुदायों को लघु वनोपज तक पहुंच और कटे हुए लकड़ी से लाभ का हिस्सा प्राप्त होता है।

A. संयुक्त वन प्रबंधन (JFM) कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर: क्षतिग्रस्त वन भूमि का संरक्षण और पुनर्स्थापन स्थानीय समुदायों की भागीदारी से करना।

B. भारत के किस राज्य ने 1988 में संयुक्त वन प्रबंधन के लिए पहला प्रस्ताव पारित किया?

उत्तर: ओडिशा।

C. JFM कार्यक्रम के अंतर्गत समुदायों को क्या लाभ मिलते हैं?

उत्तर: लघु वनोपज तक पहुंच और कटे हुए लकड़ी से लाभ का हिस्सा।

D. वन संरक्षण में स्थानीय समुदायों की भागीदारी कैसे सहायक होती है?

उत्तर: वे वनों की निगरानी, सुरक्षा और संरक्षण में सक्रिय रूप से भाग लेकर वन संसाधनों की रक्षा करते हैं।

****

पाठ – 3:
जल संसाधन

पाठ का सारांश

जल संकट – जल एक नवीकरणीय संसाधन होते हुए भी असमान वितरण, अत्यधिक उपयोग, प्रदूषण और बढ़ती मांग के कारण जल संकट की स्थिति उत्पन्न होती है।

बहुउद्देशीय नदी परियोजनाएं और जल संसाधन प्रबंधन का एकीकरण

प्राचीन परंपराएं	भारत में सिंचाई के लिए बांध, जलाशय और नहरों जैसे हाइड्रॉलिक संरचनाएं बनाने की लंबी परंपरा रही है।
आधुनिक बांध	इनका निर्माण अनेक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है – जैसे सिंचाई, बिजली उत्पादन, जल आपूर्ति, बाढ़ नियंत्रण, मनोरंजन और मत्स्य पालन।
बहुउद्देशीय परियोजनाएं	यह परियोजनाएं जल के विभिन्न उपयोगों को एकीकृत करती हैं। उदाहरण: भाखड़ा-नांगल और हिराकुंड परियोजनाएं, जो सिंचाई और बिजली उत्पादन दोनों में सहायक हैं।
विकास के प्रतीक	स्वतंत्रता के बाद बांधों को "आधुनिक भारत के मंदिर" माना गया क्योंकि उन्होंने कृषि और औद्योगीकरण को बढ़ावा दिया।

पर्यावरणीय चिंताएं	प्राकृतिक नदी प्रवाह और जलीय जीवन में बाधा उत्पन्न करते हैं। अत्यधिक गाद जमा होने और नदी तल के पथरीले होने की समस्या। वनस्पति और मिट्टी जलमग्न होकर सड़ती है, जिससे प्रदूषण बढ़ता है।
बाढ़ की समस्याएं	बाढ़ नियंत्रण के बजाय, जलाशयों में गाद जमा होने के कारण बांध खुद बाढ़ का कारण बन जाते हैं
पारिस्थितिकीय प्रभाव	बाढ़ मैदानों पर उपजाऊ गाद की हानि। जल-गहन फसलों के कारण मृदा लवणता की समस्या। जलजनित बीमारियाँ, कीट और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं का जोखिम।
सरकारी पहल	प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई) का उद्देश्य:हर खेत को पानी सुनिश्चित करना। प्रति बूंद अधिक फसल के सिद्धांत को बढ़ावा देना।अटल भूजल योजना

जल छाजन

जल छाजन

प्राचीन भारतीय परंपरा
-उन्नत जल संचयन तकनीक
-स्थानीय पारिस्थितिक स्थितियों के अनुकूल
-प्रकार: वर्षा जल, भूजल, नदी, बाढ़ का पानी

क्षेत्रीय तकनीकें-
1. पहाड़ियाँ/पहाड़ मोड़ना 'चैनल ('गुल'/'कुल')
2. राजस्थान- छत पर वर्षा जल संचयन और भूमिगत टैंक ('टंका')
3. बंगाल बाढ़ के मैदान- सिंचाई के लिए जलमग्न चैनल
4. शुष्क/अर्ध-शुष्क क्षेत्र-'खादीन' (वर्षा आधारित भंडारण क्षेत्र)
'जोहड़' (जल धारण संरचनाएँ)

वर्तमान स्थिति-
पश्चिमी राजस्थान में छतों से कटाई में कमी
स्वाद के लिए टंका का उपयोग जारी

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं को अक्सर "आधुनिक भारत के मंदिर" कहा जाता है, फिर भी इन्हें आलोचना का सामना भी करना पड़ता है। निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प इन परियोजनाओं का संतुलित दृष्टिकोण दर्शाता है?
(a) इन्हें छोड़ देना चाहिए क्योंकि ये केवल विस्थापन और पारिस्थितिकीय क्षति का कारण बनती हैं।
(b) ये सभी जल और ऊर्जा समस्याओं के लिए उत्तम समाधान हैं।
(c) ये अनेक लाभ देती हैं, लेकिन इन्हें लोगों और पर्यावरण की देखभाल के साथ योजनाबद्ध रूप से बनाना चाहिए।

(d) इनका उपयोग केवल बिजली उत्पादन के लिए ही किया जा सकता है।
सही उत्तर: (c) ये अनेक लाभ देती हैं, लेकिन इन्हें लोगों और पर्यावरण की देखभाल के साथ योजनाबद्ध रूप से बनाना चाहिए।

2. निम्नलिखित में से कौन-सा निर्णय सतत जल प्रबंधन की ओर ले जाएगा?
(a) शहरों में जल उपयोग बढ़ाने के लिए बिना योजना के शहरीकरण को प्रोत्साहित करना।
(b) नहर-सिंचित क्षेत्रों में भी रूफटॉप वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देना।
(c) मौसमी बाढ़ को रोकने के लिए सभी नदियों पर स्थायी बांध बनाना।
(d) आधुनिक बांधों के पक्ष में पारंपरिक जल संचयन विधियों को अनदेखा करना।
सही उत्तर: (b) नहर-सिंचित क्षेत्रों में भी रूफटॉप वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देना।
बहुत लघु उत्तरीय प्रश्न
1. मानव गतिविधियाँ जल की नवीकरणीयता को कैसे सहारा देती हैं या बाधित करती हैं?
संकेत- मानव गतिविधियाँ संरक्षण और पुनर्चक्रण द्वारा जल की नवीकरणीयता को सहारा देती हैं, जबकि प्रदूषण, अत्यधिक उपयोग, वनों की कटाई और प्राकृतिक जलीय पारिस्थितिकी तंत्र के विघटन द्वारा इसे बाधित करती हैं।

2. परिदृश्य:
एक क्षेत्र में लंबे समय से सूखा पड़ा है, स्थानीय किसान फसल विफलता का सामना कर रहे हैं, और शहरी क्षेत्रों में जल राशनिंग लागू की जा रही है।
प्रश्न-इस परिदृश्य में जल संकट में जलवायु परिवर्तन और भूजल के अति दोहन की क्या भूमिका है?
जलवायु परिवर्तन वर्षा को कम कर सूखा बढ़ाता है, जबकि भूजल का अत्यधिक दोहन जलभंडार को खाली कर देता है, जिससे कृषि और शहरी जरूरतों के लिए जल उपलब्धता और कम हो जाती है।

चित्र आधारित प्रश्न-

चित्र आधारित
प्रश्न-
1. **कल्पना करें कि आप एक सुदूर गाँव के लिए एक पर्यावरण-अनुकूल सिंचाई प्रणाली डिज़ाइन कर रहे हैं - बांस का उपयोग केवल एक सामग्री के रूप में ही नहीं, बल्कि संधारणीयता के प्रतीक के रूप में कैसे किया जा सकता है**

संकेत: बांस नवीकरणीय है, तेज़ी से बढ़ता है, और बायोडिग्रेडेबल है।

2. **आपको क्यों लगता है कि पहाड़ी क्षेत्रों की प्राकृतिक भौगोलिक स्थिति बांस की ड्रिप सिंचाई को पारंपरिक तरीकों की तुलना में अधिक कुशल बनाती है? क्या आप इसे 'प्रकृति के साथ काम करने के**

लिए प्रकृति का उपयोग करना' की अवधारणा से जोड़ सकते हैं?

संकेत: बांस की नहरें पंप या ईंधन के बिना पानी के परिवहन के लिए ढलान का उपयोग करती हैं।

3. **यदि आप बांस की ड्रिप सिंचाई पर निर्भर किसान होते, तो समय के साथ आपको किस तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता था? आप सिस्टम के संधारणीय चरित्र को खोए बिना रचनात्मक रूप से इनका समाधान कैसे करेंगे?**

संकेत: चुनौतियाँ: बांस सड़ सकता है, फट सकता है, या कीड़ों से क्षतिग्रस्त हो सकता है। नियमित रखरखाव की आवश्यकता होती है।रचनात्मक समाधान: बांस को टिकाऊ पर्यावरण-अनुकूल सामग्रियों (जैसे, मिट्टी या पुनर्नवीनीकरण प्लास्टिक सुदृढीकरण) के साथ मिलाएँ।

4. **बांस की ड्रिप सिंचाई जैसी पुरानी विधियाँ शहरी या तकनीक-संचालित समाजों में जल प्रबंधन के भविष्य को कैसे निर्देशित कर सकती हैं? क्या आप किसी ऐसे आधुनिक उपकरण या तकनीक के बारे में सोच सकते हैं जिसे इस पारंपरिक विधि के साथ मिश्रित किया जा सके?**

संकेत: कम लागत, कम अपशिष्ट जल उपयोग मॉडल को बढ़ावा देते हुए, शहरी ऊर्ध्वाधर उद्यान या छत पर कृषि टिकाऊ सामग्रियों का उपयोग करके समान गुरुत्वाकर्षण-आधारित सिंचाई को अपना सकती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. बांध निर्माण से जुड़े दीर्घकालिक आर्थिक लाभों की तुलना अल्पकालिक सामाजिक लागतों से करें।

संकेत-दीर्घकालिक आर्थिक लाभ – बिजली उत्पादन, सिंचाई सुविधा, औद्योगिक विकास और बाढ़ नियंत्रण। अल्पकालिक सामाजिक लागत – स्थानीय समुदायों का विस्थापन, पर्यावरणीय असंतुलन, जलीय जीवन में बाधा और सामाजिक संघर्ष।इसलिए, संतुलित योजना के बिना दीर्घकालिक लाभों की प्राप्ति सामाजिक और पारिस्थितिकीय क्षति का कारण बन सकती है।

2. परिदृश्य: एक क्षेत्र ने जल संकट से निपटने के लिए वर्षा जल संचयन और जल पुनर्चक्रण कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक लागू किया है।

प्रश्न: जल संकट को और अधिक कम करने के लिए आप कौन-कौन से अतिरिक्त सतत जल प्रबंधन उपायों का प्रस्ताव देंगे?

संकेत- अतिरिक्त उपायों में –ड्रिप और स्प्रिंकलर जैसी कुशल सिंचाई तकनीकों का प्रयोग, आर्द्रभूमियों का पुनर्स्थापन, जल अपव्यय को रोकने के उपाय, जन-जागरूकता अभियानों के माध्यम से जल संरक्षण को प्रोत्साहित करना

Dams
Locating & labelling

- **Salal** (Chenab - Jammu & Kashmir)
- **Bhakra Nangal** (Sutlej - Himachal Pradesh)
- **Tehri** (Bhagirathi – Uttarakhand)
- **Rana Pratap Sagar** (Chambal – Rajasthan)
- **Sardar Sarovar** (Narmada – Gujrat)
- **Hirakud** (Mahanadi – Orissa)
- **Nagarjuna Sagar** (Krishna – Telangana)
- **Tungabhadra** (Tungabhadra – Karnataka)

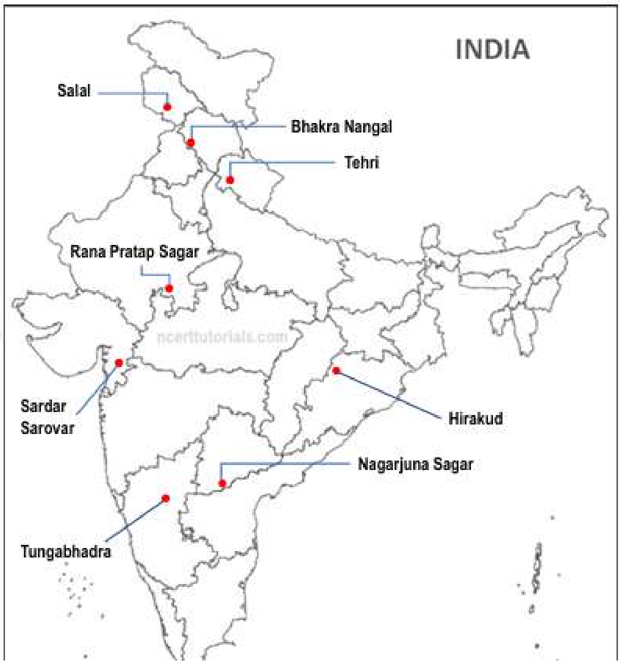

****************************88888

अध्याय -4

कृषि

अध्याय का सार-

❖ भारत की दो-तिहाई आबादी कृषि में लगी हुई है।

❖ कृषि एक प्राथमिक गतिविधि है, जो निम्नलिखित प्रदान करती है:खाद्यान्न, उद्योगों के लिए कच्चा माल (जैसे, वस्त्र उद्योग के लिए कपास, चीनी उद्योग के लिए गन्ना)।चाय, कॉफी और मसालों जैसे निर्यात उत्पाद।

भारत में खेती के प्रकार

आदिम निर्वाह खेती

छोटे टुकड़ों में आदिम उपकरणों (कुदाल, लाओ, लकड़ी की छड़ियाँ) से की जाती है।

पारिवारिक या सामुदायिक श्रमिकों का उपयोग।

मानसून और प्राकृतिक मिट्टी की उर्वरता पर निर्भर।

"झूम खेती" जैसी पद्धति शामिल।

आधुनिक साधनों का उपयोग न होने से उत्पादन कम।

स्थान-स्थान पर इसे अलग नामों से जाना जाता है:

झूमिंग – असम, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड

गहन जीविका कृषि

अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्रों में प्रचलित।

श्रम-प्रधान खेती; रासायनिक खाद और सिंचाई का प्रयोग।

छोटे जोत वाले खेतों में भी अधिक उत्पादन।

भूमि का विभाजन विरासत में मिलने के कारण होता है

व्यावसायिक खेती

अधिक उत्पादन पर ध्यान केंद्रित

उच्च उत्पादकता वाली) बीज

रासायनिक उर्वरक

कीटनाशक और कीट-नाशक

क्षेत्र के अनुसार भिन्नता:

खाद्य फसलें-

खाद्य फसलें

धान- खरीफ फसल
जलवायु: 25°C से अधिक तापमान, 100 सेमी से अधिक वर्षा
क्षेत्र: पूर्वी, तटीय और डेल्टा क्षेत्र

गेहूं- रबी फसल
जलवायु: ठंडी वृद्धि ऋतु, 50-75 सेमी वर्षा
क्षेत्र: गंगा-सतलुज के मैदान, दक्कन का काली मिट्टी वाला क्षेत्र

मोटे अनाज- खरीफ फसलें
पोषण मूल्य: उच्च
ज्वार: वर्षा-आधारित, नम क्षेत्रों में उगाई जाती है
बाजरा: रेतीली/छिछली काली मिट्टी
रागी: शुष्क क्षेत्र, विविध प्रकार की मिटटियाँ

दालें
प्रमुख दालें: तूर (अरहर), उड़द, मूंग, मसूर, चना, मटर
प्रकार: खरीफ और रबी दोनों
महत्त्व: प्रमुख प्रोटीन स्रोत, मिट्टी में नाइट्रोजन को स्थिर करती हैं
उत्पादक राज्य: मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक

मक्का – खरीफ (बिहार में रबी भी)
जलवायु: 21–27°C तापमान, पुरानी जलोढ़ मिट्टी
राज्य: कर्नाटक, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना

पेय फसल

चाय- प्रकार: बागान फसल

जलवायु: गर्म, नम, पाला रहित तथा समान वर्षा

राज्य: असम, पश्चिम बंगाल (दार्जिलिंग, जलपाईगुड़ी), तमिलनाडु, केरल, हिमाचल प्रदेश, ब्रिटेन, मेघालय, आंध्र प्रदेश, त्रिपुरा

भारत: चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक

कॉफी

- किस्म: अरेबिका (यमन से)

क्षेत्र: कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु (नीलगिरी पहाड़ियाँ)

पेय फसल-

अनाजों के अलावा खाद्य फसलें

गन्ना	प्रकार: उष्णकटिबंधीय एवं उप-उष्णकटिबंधीय फसल जलवायु: 21–27°C तापमान, 75–100 सेमी वर्षा उपयोग: चीनी, गुड़, शीरा राज्य: उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, बिहार
तेलहन फसलें	मुख्य फसलें: मूंगफली, सरसों, नारियल, तिल, सोयाबीन, सूरजमुखी, एरंडी उपयोग: खाद्य तेल, साबुन, सौंदर्य प्रसाधन मूंगफली: खरीफ — गुजरात, राजस्थान, तमिलनाडु सरसों और अलसी (लिनसीड): रबी तिल (सेसमम): खरीफ (उत्तर भारत), रबी (दक्षिण भारत) एरंडी (कैस्टर): खरीफ और रबी दोनों
बागवानी फसलें	भारत: चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश आम: महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल संतरा: नागपुर, चेरापूंजी केला :केरल, मिजोरम, तमिलनाडु, महाराष्ट्र लीची और अमरूद: उत्तर प्रदेश, बिहार अंगूर :आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र सेब और सूखे मेवे :जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश

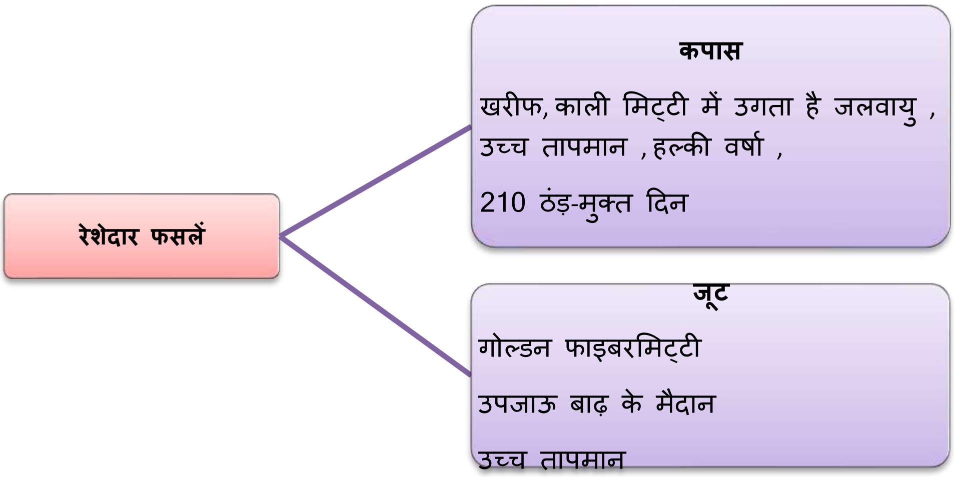

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. एक गाँव के किसान लगातार अनाज (cereal) की खेती के कारण मृदा की उर्वरता में गिरावट का सामना कर रहे हैं। उन्हें ऐसी फसल उगाने की सलाह दी गई है जो पोषण भी दे और रासायनिक उर्वरकों के बिना मिट्टी में नाइट्रोजन को स्वाभाविक रूप से पुनः भर सके। इसके लिए उन्हें निम्नलिखित में से कौन सी फसल उगानी चाहिए?

(a) ज्वार
(b) मोटे अनाज (मिलेट्स)
(c) तिल (सेसमम)
(d) दालें (पल्सेज)

उत्तर: (d) दालें

प्रश्न 2. अभिकथन (A): भारत में दीर्घकालिक कृषि विकास सुनिश्चित करने के लिए अकेले तकनीकी सुधार पर्याप्त नहीं हैं।

कारण (R): असमान भूमि स्वामित्व, ऋण तक पहुँच की कमी और सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ जैसे मुद्दे भी कृषि विकास को प्रभावित करते हैं।

विकल्प:

(a) A और R दोनों सत्य हैं, और R, A का सही स्पष्टीकरण है।
(b) A और R दोनों सत्य हैं, लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(c) A सत्य है, लेकिन R असत्य है।
(d) A असत्य है, लेकिन R सत्य है।

उत्तर: a) A और R दोनों सत्य हैं, और R, A का सही स्पष्टीकरण है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत के कुछ विशेष क्षेत्रों में ही चाय की खेती क्यों होती है और पूरे देश में नहीं?

संकेत- चाय की खेती के लिए आवश्यक भौगोलिक परिस्थितियाँ जैसे—जलवायु, तापमान, वर्षा, मिट्टी; साथ ही पहाड़ी इलाका और श्रमिकों की उपलब्धता को ध्यान में रखें।

2. जलवायु परिवर्तन चाय और कॉफी जैसी पेय फसलों की खेती को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है?

संकेत: जलवायु परिवर्तन वर्षा के पैटर्न और तापमान को बदल सकता है, जिससे फसल की उपज, गुणवत्ता और उपयुक्त खेती क्षेत्र प्रभावित होंगे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सरकार ऐसी नीतियाँ कैसे बना सकती है जो कृषि उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ भूमि के सतत उपयोग को भी सुनिश्चित करें? कुछ नवाचारी उपाय सुझाएँ और उनके संभावित प्रभावों का मूल्यांकन करें।
संकेत: सरकार जैविक खेती, सटीक कृषि, फसल विविधता, और जल-कुशल तकनीकों को बढ़ावा देकर उत्पादन और संसाधनों के संरक्षण को एक साथ सुनिश्चित कर सकती है।

2. भारत में हरित क्रांति जैसी कृषि पहलों ने फसल पैटर्न को कैसे प्रभावित किया है? उत्पादकता और पर्यावरणीय स्थिरता के संतुलन हेतु कौन-कौन सी रचनात्मक रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं?
संकेत: हरित क्रांति ने उपज को बढ़ाया लेकिन मृदा की गुणवत्ता को भी नुकसान पहुँचाया; जैविक खेती, फसल चक्र और कृषि वानिकी (agroforestry) जैसी रणनीतियाँ इस संतुलन को बनाने में सहायक हो सकती हैं।

3. उपयुक्त भौगोलिक क्षेत्रों में पारंपरिक धान की खेती को डिजिटल तकनीक और आधुनिक सिंचाई विधियाँ कैसे परिवर्तित कर सकती हैं? उपज और दक्षता में सुधार के लिए इनकी भूमिका का मूल्यांकन करें।
संकेत: डिजिटल उपकरण और आधुनिक सिंचाई तकनीकें निगरानी में सुधार करती हैं, जल की बर्बादी को कम करती हैं और उपज बढ़ाती हैं, जिससे धान की खेती अधिक प्रभावी और जलवायु लचीली (climate-resilient) बनती है।

****

अध्याय-5

खनिज और ऊर्जा संसाधन

अध्याय का सार -

खनिज: एक समरूप, स्वाभाविक रूप से पाया जाने वाला पदार्थ जिसकी एक निश्चित आंतरिक संरचना होती है।

धात्विक खनिज

लौह

लोहा

मैग्नेटाइट: सबसे उत्तम गुणवत्ता, 70% लोहा,

हेमेटाइट : सबसे अधिक उपयोग में, 50–60% लोहा। -

मुख्य पट्टियाँ

ओडिशा-झारखंड: बदामपहाड़ (ओडिशा), गुवा और नोआमुंडी (झारखंड)

दुर्ग-बस्तर-चंद्रपुर: बैलाडीला (छत्तीसगढ़)

बेल्लारी-चित्रदुर्ग-तुमकुर (कर्नाटक): महाराष्ट्र-गोवा: गोवा, रत्नागिरी

मैंगनीज

स्टील निर्माण के लिए आवश्यक (10 किलोग्राम/टन स्टील)

उपयोग: ब्लीचिंग पाउडर, पेंट्स में

अलौह

तांबा

उपयोग: विद्युत तारों,

इलेक्ट्रॉनिक्स में

प्रमुख क्षेत्र:

बालाघाट (मध्य प्रदेश)

खेतड़ी (राजस्थान)

सिंहभूम (झारखंड)

बॉक्साइट

एल्युमिनियम का स्रोत (मजबूत, हल्का, आकार में ढलने योग्य)

प्रमुख क्षेत्र:अमरकंटक पठार, मैकाल पहाड़ियाँ, बिलासपुर-कटनी, ओडिशा (कोरापुट)

गैर-धात्विक खनिज

का	ली परतों में विभाजित होता है, उत्कृष्ट विद्युत कुचालक है। ख स्थान: झारखंड (कोडरमा क्षेत्र), राजस्थान (अजमेर), आंध्र प्रदेश (नेल्लूर)
। पत्थर	ंट निर्माण और लौह धातु गलाने में उपयोग होता है। तलछटी चट्टानों में पाया जाता है।

पारंपरिक ऊर्जा संसाधन

पारंपरिक ऊर्जा संसाधन

- कोयला- प्रमुख ऊर्जा स्रोत; बिजली, उद्योग के लिए उपयोग किया जाता है।
  प्रकार: पीट, लिग्नाइट (नेवेली), बिटुमिनस, एन्थ्रेसाइट।
  प्रमुख क्षेत्र: झरिया, रानीगंज, बोकारो (दामोदर घाटी), गोदावरी, महानदी, सोन, वर्धा
- पेट्रोलियम- एंटीक्लाइन/फॉल्ट ट्रैप में पाया जाता है।प्रमुख क्षेत्र: मुंबई हाई, अंकलेश्वर (गुजरात), डिगबोई, नहरकटिया, मोरन (असम)।
- पेट्रोलियम के साथ पाया जाता है; विद्युत, उद्योग और घरेलू उपयोग में प्रयुक्त होता है।
  मुख्य भंडार: मुंबई हाई, कंबे (Cambay)।एचवीजे पाइपलाइन पश्चिमी गैस क्षेत्रों को उत्तरी बाजारों से जोड़ती हैमुख्य भंडार: मुंबई हाई, कैम्बे, कृष्णा-गोदावरी।
- बिजली-हाइड्रो पावर: पानी से (नवीकरणीय); प्रमुख परियोजनाएँ: भाखड़ा नांगल, दामोदर घाटी, कोपिली। थर्मल पावर: जीवाश्म ईंधन से (गैर-नवीकरणीय)

ऊर्जा स्रोत - अपारंपरिक

परमाणु	परमाणु संरचना में बदलाव कर उत्पादित की जाती है, जिससे उत्पन्न गर्मी से बिजली बनाई जाती है। प्रमुख संसाधन: यूरेनियम और थोरियम। प्रमुख स्थान:झारखंड, अरावली पर्वतमाला (राजस्थान) केरल के मोनाजाइट बालू (थोरियम से समृद्ध
सौर ऊर्जा	भारत उष्णकटिबंधीय देश होने के कारण इसमें सौर ऊर्जा की अपार संभावनाएँ हैं। फोटोवोल्टिक सेल सूर्य की रोशनी को बिजली में बदलते हैं। ग्रामीण/दूरदराज के क्षेत्रों में व्यापक रूप से उपयोग होता है। लकड़ी और गोबर पर निर्भरता कम करके पर्यावरण संरक्षण और बेहतर खाद की उपलब्धता में सहायक।
पवन ऊर्जा	प्रमुख पवन ऊर्जा फॉर्म क्लस्टर: नागरकोइल से मदुरै (तमिलनाडु) प्रमुख स्थल: नागरकोइल और जैसलमेर

बायोगैस	झाड़ियाँ, कृषि, पशु और मानव अपशिष्ट से उत्पन्न होती है। बायोगैस की ऊष्मीय दक्षता केरोसीन या उपलों से अधिक होती है। संयंत्र नगरपालिकाओं, सहकारी संस्थाओं और व्यक्तिगत स्तर पर स्थापित किएहैं। गोबर गैस संयंत्र (पशु अपशिष्ट आधारित) ग्रामीण भारत में आम हैं। दोहरा लाभ: ऊर्जा और बेहतर खाद। वनों की कटाई में कमी और मृदा स्वास्थ्य में सुधार को बढ़ावा देता है।
ज्वारीय ऊर्जा	समुद्री ज्वार का उपयोग कर फ्लडगेट डैम के माध्यम से उत्पन्न की जाती है। भारत में उपयुक्त स्थान:खंभात की खाड़ी (गुजरात), कच्छ की खाड़ी (गुजरात), सुंदरबन डेल्टा (पश्चिम बंगाल)
भूतापीय ऊर्जा	• पृथ्वी की आंतरिक ऊष्मा से बिजली उत्पन्न की जाती है। • भूतापीय क्षेत्रों से प्राप्त गर्म पानी और भाप से टर्बाइन चलाई जाती है। • भारत में प्रायोगिक स्थल:पार्वती घाटी, मणिकरण (हिमाचल प्रदेश), पूगा घाटी (लद्दाख)

Nuclear Power Plants
(Locating and labelling)

Narora (Uttar Pradesh)

Kakrapar (Gujrat)

Tarapur (Maharashtra)

Kalpakkam (Tamil Nadu)

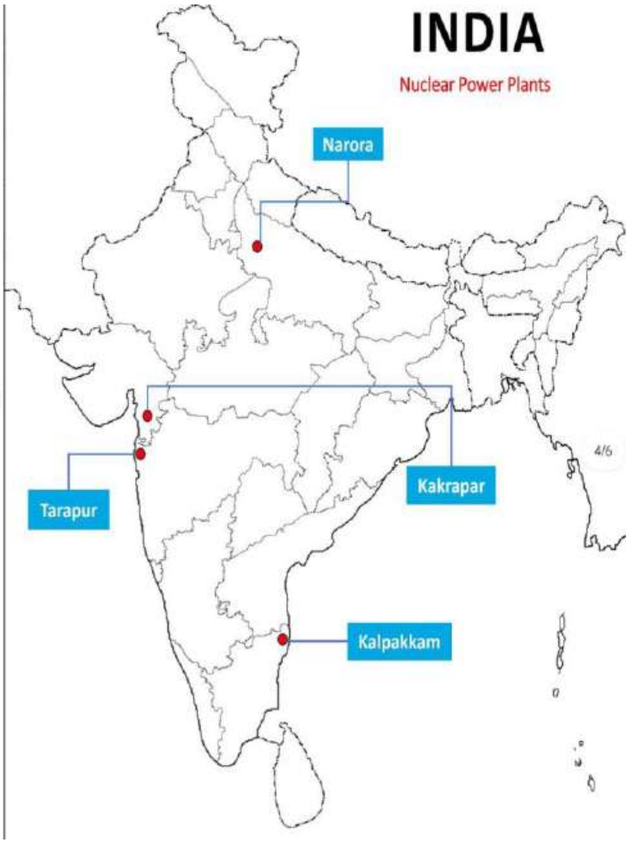

Thermal Power Plants
(Locating and labelling)

- **Singrauli** (Madhya Pradesh)
- **Ramagundam** (Telangana)
- **Namrup** (Assam)

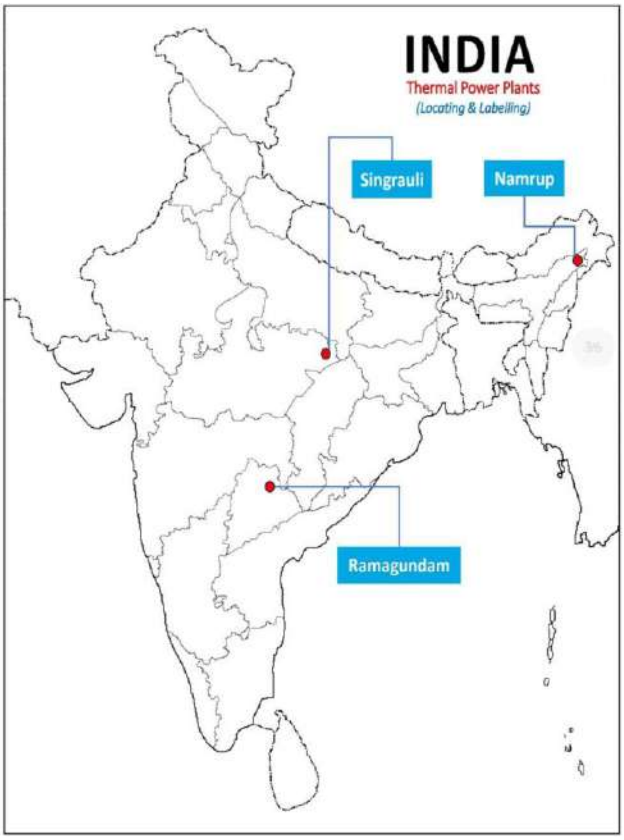

Oil Fields
(Identification only)

- **Digboi** (Assam)
- **Naharkatia** (Assam)
- **Mumbai High** (Maharashtra)
- **Bassien** (Maharashtra)
- **Kalol** (Gujrat)
- **Ankleshwar** (Gujrat)

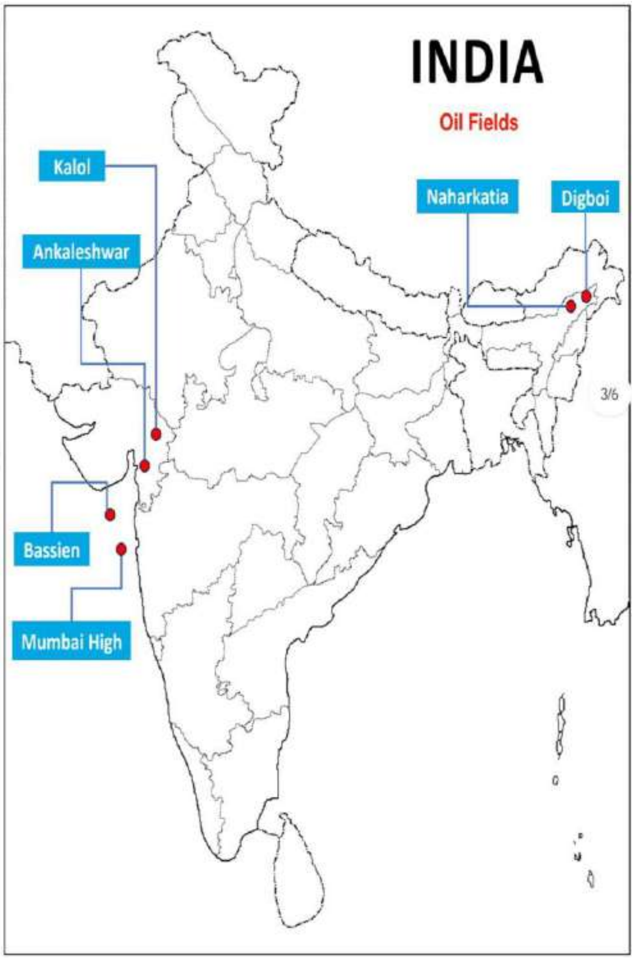

Coal Mines
(Identification only)

- **Bokaro** (Jharkhand)
- **Raniganj** (W. Bengal)
- **Talcher** (Odisha)
- **Neyveli** (Tamil Nadu)

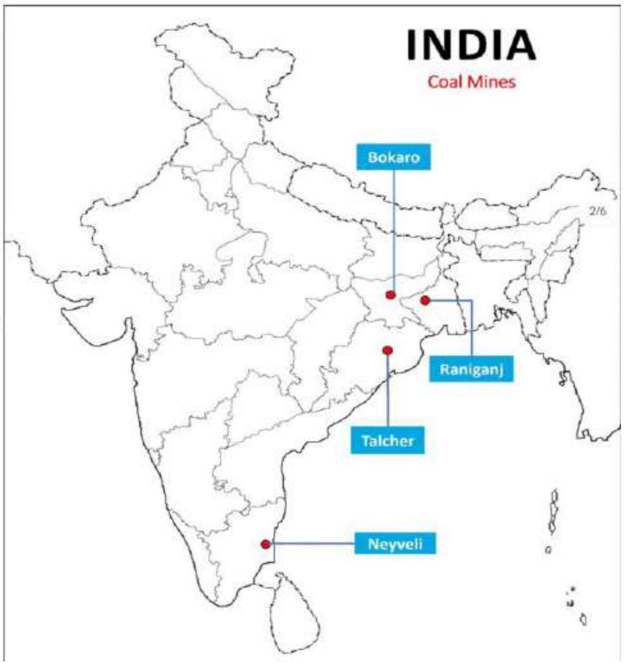

Iron Ore Mines
(Identification only)

- **Mayurbhanj** (Odisha)
- **Durg** (Chhattisgarh)
- **Bailadila** (Chhattisgarh)
- **Bellary** (Karnataka)
- **Kudremukh** (Karnataka)

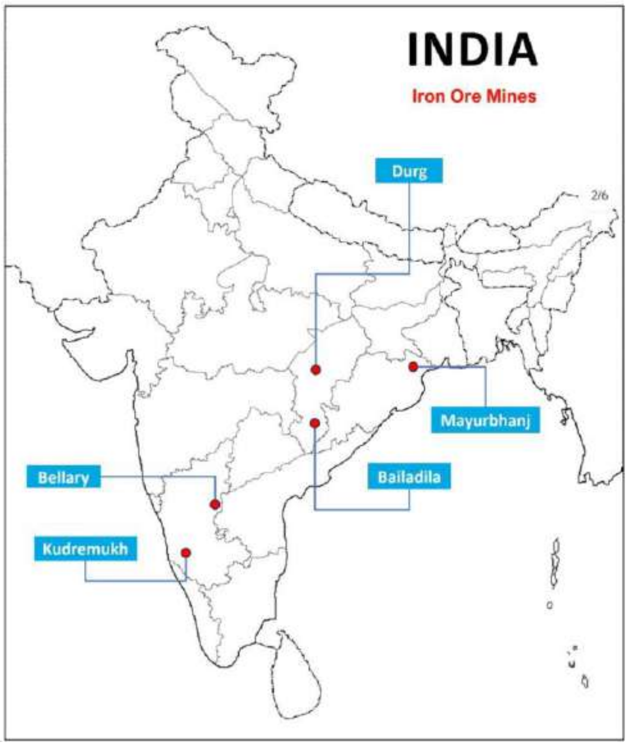

बहुविकल्पीय प्रश्न-

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनें

a. आग्नेय - अधिकांश खनिज यहीं जमा और संचित होते हैं

b. अवसादी - मैग्मा या लावा के ठंडा होने और जमने से बनते हैं

c. कायांतरित - गर्मी और दबाव के कारण मौजूदा चट्टानों में परिवर्तन से बनते हैं

उत्तर: c. कायांतरित - गर्मी और दबाव के कारण मौजूदा चट्टानों में परिवर्तन से बनते हैं

लघु उत्तर प्रकार प्रश्न-

प्रश्न 1. ऐसे ऊर्जा स्रोतों का सुझाव दें जिन्हें बढ़ावा दिया जाना चाहिए और पारंपरिक एवं अपारंपरिक स्रोतों की

तुलना करके अपने सुझाव का औचित्य बताएं।
सुझाव: सौर और पवन जैसे अपारंपरिक स्रोतों को बढ़ावा देना चाहिए क्योंकि ये नवीकरणीय, पर्यावरण के अनुकूल हैं और जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को कम करते हैं।
प्रश्न 2. यदि खनिज संसाधन 50 वर्षों में समाप्त हो जाएं, तो यह उद्योगों, परिवहन और दैनिक जीवन को कैसे प्रभावित करेगा? इस संकट से बचने के लिए समाज कौन-सी रचनात्मक रणनीतियाँ अपना सकता है?
सुझाव: उद्योग, परिवहन और दैनिक जीवन प्रभावित होंगे; समाज को पुनर्चक्रण (recycling), वैकल्पिक सामग्री और नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाना होगा।

दीर्घ उत्तर प्रकार प्रश्न
प्रश्न 1. कोयला भारत के सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा संसाधनों में से एक है। विश्लेषण करें कि कोयले का असमान वितरण क्षेत्रीय विकास को कैसे प्रभावित करता है, और देशभर में ऊर्जा समानता सुनिश्चित करने के लिए नवीन उपाय सुझाएं।
संकेत- कोयले का असमान वितरण क्षेत्रीय असमानता उत्पन्न करता है; नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देना, विकेंद्रीकृत ऊर्जा प्रणालियाँ और कुशल ग्रिड नेटवर्क ऊर्जा समानता सुनिश्चित कर सकते हैं।
प्रश्न 2. भारत एक उष्णकटिबंधीय देश है जहाँ भरपूर धूप मिलती है। मूल्यांकन करें कि सौर ऊर्जा कैसे ग्रामीण विकास में क्रांति ला सकती है, पर्यावरणीय क्षरण को कम कर सकती है और भारत की सतत वृद्धि में योगदान दे सकती है। इसे सभी के लिए सुलभ और किफायती बनाने हेतु रणनीतिक कदम सुझाएं।
संकेत-: सौर ऊर्जा ग्रामीण घरों को बिजली दे सकती है, लकड़ी पर निर्भरता घटा सकती है, उत्सर्जन कम कर सकती है, और हरित नौकरियाँ बढ़ा सकती है; सब्सिडी और जागरूकता कार्यक्रमों से इसकी पहुंच बढ़ाई जा सकती है।

****

अध्याय-6
विनिर्माण उद्योग

अध्याय का सार

परिभाषा	कच्चे माल को संसाधित करके बड़ी मात्रा में मूल्यवर्धित वस्तुओं के उत्पादन की प्रक्रिया।
उद्योगों का महत्त्व	• कच्चे माल का मूल्य बढ़ाता है • कृषि उपकरणों और औज़ारों द्वारा कृषि को बढ़ावा देता है • शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार देता है • राष्ट्रीय आय और निर्यात को बढ़ाता है
प्रभावित करने वाले कारक	• कच्चा माल – उपलब्धता और लागत • ऊर्जा आपूर्ति, • पूंजी – निवेश की उपलब्धता

उद्योगों का वर्गीकरण

कच्चे माल के स्रोत के आधार पर

कृषि आधारित
कपास, ऊनी, जूट, रेशम वस्त्र, चीनी, चाय, कॉफी

खनिज आधारित
लोहा और इस्पात, तांबा, स्मेल्टिंग

मुख्य भूमिका के अनुसार

मूल/मुख्य उद्योग
लोहा और इस्पात,तांबा स्मेल्टिंग, एल्युमिनियम स्मेल्टिंग

उपभोक्ता उद्योग-
चीनी, टूथपेस्ट, कागज़

पूंजी निवेश के आधार पर

लघु उद्योग
अधिकतम एक करोड़ रुपये के निवेश द्वारा परिभाषित

बड़े पैमाने के उद्योग
बड़ी पूंजी की आवश्यकता होती है। **तकनीकी रूप से उन्नत मशीनों** का उपयोग होता है। **बड़े पैमाने पर उत्पादन** होता है।

स्वामित्व के आधार पर

सार्वजनिक -इनका **स्वामित्व और प्रबंधन सरकार** के पास होता है।
उदाहरण: भेल, सेल,

निजी-इनका स्वामित्व **व्यक्तिगत लोगों या कंपनियों/फर्मों** के पास होता है।
उदाहरण: टाटा, रिलायंस, इंफोसिस

संयुक्त-इनका संचालन सरकार और निजी व्यक्तियों/फर्मों द्वारा **संयुक्त रूप से** किया जाता है।
उदाहरण: ओएनजीसी पेट्रो एडिशंस लिमिटेड

सहकारीइनका स्वामित्व और प्रबंधन **किसानों, कारीगरों या श्रमिकों के एक समूह** के पास होता है।
उदाहरण: अमूल, सुधा डेयरी

प्रमुख उद्योग

कपड़ा उद्योग
केन्द्र: मुंबई, अहमदाबाद, कोयंबटूर
सबसे बड़ा उद्योग — इसमें कपास, रेशम, ऊन, जूट शामिल हैं।

लोहा और इस्पात उद्योग
केन्द्र:
मूलभूत उद्योगरीढ़
औद्योगिक विकास की रीढ़

ऑटोमोबाइल और आईटी उद्योग केंद्र:
दिल्ली, पुणे, चेन्नई (ऑटो);बेंगलुरु, नोएडा (आईटी)।

सीमेंट उद्योग कच्चा माल: चूना पत्थर
इसे इन्फ्रास्ट्रक्चर में उपयोग किया जाता है।

उद्योगों द्वारा उत्पन्न प्रदूषण के प्रकार

वायु प्रदूषण

सल्फर डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड जैसी गैसों के कारण होता है

उत्सर्जन स्रोत: रासायनिक एवं अन्य कारखाने, ईंट-भट्टियाँ, रिफाइनरी, स्मेल्टिंग प्लांट

जल प्रदूषण

जैविक/अजैविक अपशिष्टों को नदियों में छोड़ने से होता है।

प्रमुख प्रदूषणकारी उद्योग: कागज़, वस्त्र, रसायन, रिफाइनरी, टेनरी।

भूमि प्रदूषण-

कांच, रसायन, अपशिष्ट, पैकेजिंग कचरा, कूड़े के निष्कर्षण से होता है।

प्रदूषक मिट्टी में समा जाते हैं और भूजल को प्रदूषित करते हैं।

ध्वनि प्रदूषण

स्रोत: मशीनरी, जनरेटर, ड्रिल, निर्माण कार्य।

प्रभाव: तनाव, सुनने की क्षमता में कमी, उच्च रक्तचाप, हृदय गति में वृद्धि।

पर्यावरणीय क्षरण

जल उपयोग को कम करना-

i)जल का पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण दो या अधिक चरणों में।

(ii) जल की आवश्यकता को पूरा करने के लिए वर्षा जल संचयन।

औद्योगिक अपशिष्टों का उपचार -

i) प्राथमिक उपचार
मैकेनिकल तरीकों से, जैसे स्क्रीनिंग, पीसना, फोक्यूलेशन आदि।
ii) **द्वितीयक उपचार**
जैविक प्रक्रिया द्वारा।
iii) **तृतीयक उपचार**
जैविक, रासायनिक और भौतिक प्रक्रियाओं द्वारा; इसमें अपशिष्ट जल का पुनर्चक्रण शामिल है।

अन्य उपाय-

जहाँ भूजल संसाधनों पर खतरा हो, वहाँ उद्योगों द्वारा भूजल का अत्यधिक दोहन **कानूनी रूप से नियंत्रित** किया जाना चाहिए।

वायु में उपस्थित कणों को **इलेक्ट्रोस्टैटिक प्रीसिपिटेटर**, फैब्रिक फिल्टर, स्क्रबर और इनर्शियल सेपरेटर जैसे उपकरणों का उपयोग कर कम किया जा सकता है।

धुएं को **तेल या गैस के उपयोग** से कम किया जा सकता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

Q1. कथन (A): इलेक्ट्रॉनिक उद्योग आधुनिक संचार और कंप्यूटिंग उपकरणों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कारण (R): टेलीफोन, कंप्यूटर और अन्य डिजिटल उपकरण मुख्यतः स्टील और एल्युमिनियम स्मेल्टिंग उद्योगों द्वारा बनाए जाते हैं।

विकल्प:

(a) A और R दोनों सही हैं, और R, A की सही व्याख्या है।

(b) A और R दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(c) A सही है, लेकिन R गलत है।
(d) A गलत है, लेकिन R सही है।
सही उत्तर: (c) A सही है, लेकिन R गलत है।
Q2. रवि एक स्मार्ट क्लासरूम डिज़ाइन कर रहा है जिसमें इंटरएक्टिव डिजिटल बोर्ड, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग टूल और कंप्यूटर आधारित लर्निंग सिस्टम शामिल हैं। टैबलेट्स, संचार उपकरण और कंट्रोल पैनल जैसे आवश्यक हार्डवेयर की आपूर्ति के लिए उसे किस उद्योग से संपर्क करना चाहिए?
विकल्प:
(a) वस्त्र उद्योग
(b) इलेक्ट्रॉनिक उद्योग
(c) खनन उद्योग
(d) निर्माण उद्योग
सही उत्तर: (b) इलेक्ट्रॉनिक

लघु उत्तर प्रकार प्रश्न-
Q1. जैसा कि हम जानते हैं, भारत को भविष्य में विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की भविष्यवाणी की गई है, इसलिए देश अपने बुनियादी ढांचे और विनिर्माण क्षेत्र को तेजी से विकसित करना चाहता है। आपके अनुसार, दीर्घकालिक औद्योगिक विकास का समर्थन करने के लिए सरकार को किस प्रकार के उद्योग को प्राथमिकता देनी चाहिए?
संकेत: सरकार को लौह और इस्पात जैसे मूल उद्योगों को प्राथमिकता देनी चाहिए, क्योंकि ये बुनियादी ढांचे और विनिर्माण वृद्धि के लिए आवश्यक कच्चा माल प्रदान करते हैं।

केस अध्ययन आधारित प्रश्न-
प्रसंग: भारत की तीव्र औद्योगिक वृद्धि ने अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया है लेकिन वायु, जल, भूमि और ध्वनि प्रदूषण को गंभीर रूप से बढ़ा दिया है। रासायनिक कारखानों, ताप विद्युत संयंत्रों, चमड़ा उद्योगों और रिफाइनरियों जैसे उद्योग हानिकारक गैसें, विषैले कचरे और ठोस प्रदूषक छोड़ते हैं। ये प्रदूषक मानव स्वास्थ्य, जलीय जीवन, मृदा की उर्वरता को प्रभावित करते हैं और ध्वनि प्रदूषण के माध्यम से तनाव उत्पन्न करते हैं। थर्मल प्रदूषण से जल का तापमान बढ़ता है, जिससे जलीय पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित होता है और विषाक्त कचरा मिट्टी और भूजल को प्रदूषित करता है।
प्रश्न:
(a) उद्योगों से वायु प्रदूषण मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण को कैसे प्रभावित करता है? दो उदाहरण दीजिए।
उत्तर: यह सांस की बीमारियाँ और अस्थमा जैसी समस्याएं पैदा करता है। उदाहरण: सल्फर डाइऑक्साइड और कार्बन मोनोऑक्साइड का उत्सर्जन।
(b) थर्मल प्रदूषण जलीय जीवन को कैसे प्रभावित करता है? इसे कम करने का एक उपाय बताइए।
उत्तर: गर्म पानी जलीय जीवों के लिए अनुकूल नहीं होता और उनका जीवन चक्र प्रभावित करता है। उपाय: संयंत्रों से निकलने वाले गर्म जल का उपचार करके ही नदियों में छोड़ा जाए।

(c) मृदा प्रदूषण का जल प्रदूषण से निकट संबंध क्यों होता है? एक उदाहरण दीजिए।
उत्तर: विषैले रसायन मृदा में मिलकर भूजल को प्रदूषित करते हैं। उदाहरण: चमड़ा उद्योग से निकलने वाला क्रोमियम युक्त कचरा।
(d) उद्योग ध्वनि प्रदूषण को कम करने और श्रमिकों के स्वास्थ्य में सुधार के लिए दो उपाय बताइए।
उत्तर:

1. मशीनों पर साउंड प्रूफिंग कवर लगाना
2. श्रमिकों को ईयर प्लग उपलब्ध कराना

दीर्घ उत्तर प्रकार प्रश्न -
Q1. आपको क्यों लगता है कि केवल सख्त पर्यावरणीय नियम ही औद्योगिक प्रदूषण को कम करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं? और क्या आवश्यक है?
संकेत: केवल नियम पर्याप्त नहीं हैं क्योंकि अक्सर उनका पालन नहीं होता। जागरूकता, तकनीकी उन्नयन और उद्योगों की ज़िम्मेदारी भी जरूरी है।
Q2. उद्योग नौकरियाँ प्रदान करते हैं लेकिन पर्यावरण को नुकसान भी पहुँचाते हैं। सरकार को आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण में कैसे संतुलन बनाना चाहिए?
संकेत: सरकार को हरित प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना चाहिए, पर्यावरण-अनुकूल कानूनों को लागू करना चाहिए, और सतत विकास के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए।
Q3. कल्पना कीजिए कि आपका स्कूल उद्योगों को प्रदूषण नियंत्रण के बारे में शिक्षित करने के लिए एक अभियान शुरू कर रहा है। जागरूकता बढ़ाने के लिए आप कौन-कौन से रचनात्मक तरीके (जैसे पोस्टर, नारे या कार्यक्रम) अपनाएंगे?
संकेत:इंटरएक्टिव नुक्कड़ नाटक, इको-थीम वाले पोस्टर और स्लोगन (जैसे "प्रॉफिट के साथ प्लैनेट"),ग्रीन इनोवेशन प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी।

****

अध्याय 7

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ

मानचित्र कार्य

Major Ports
(Locating and labelling)

- Kandla
- Mumbai
- Marmagao
- New Mangalore
- Kochi
- Tuticorin
- Chennai
- Vishakhapatnam
- Paradip
- Haldia

International Airports
(Locating and labelling)

- Amritsar (Raja Sansi - Guru Ramdas Jee)
- Delhi (Indira Gandhi)
- Mumbai (Chhatrapati Shivaji)
- Chennai (Meenam Bakkam)
- Kolkata (Netaji Subhash Chandra Bose)
- Hyderabad (Rajiv Gandhi)

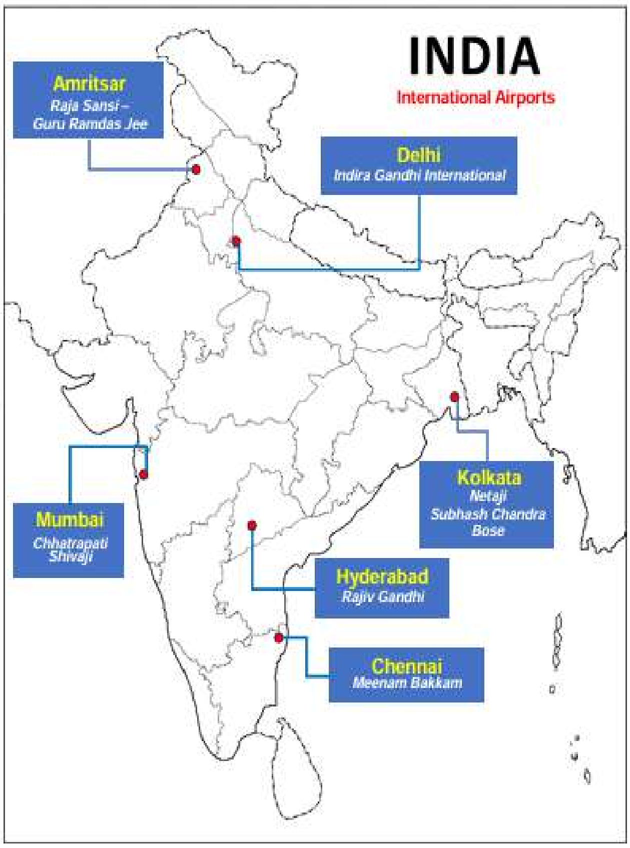

अध्याय-1
सत्ता की साझेदारी

अध्याय का सार

बेल्जियम और श्रीलंका
श्रीलंका में बहुसंख्यकवाद
बेल्जियम में समायोजन
सत्ता साझा करना क्यों वांछनीय है
सत्ता की साझेदारी के रूप

बेल्जियम में-

डच - 59%	फ्रेंच - 40%	जर्मन - 1%

ब्रसेल्स (राजधानी शहर) में-

डच - 20%	फ्रेंच - 80%

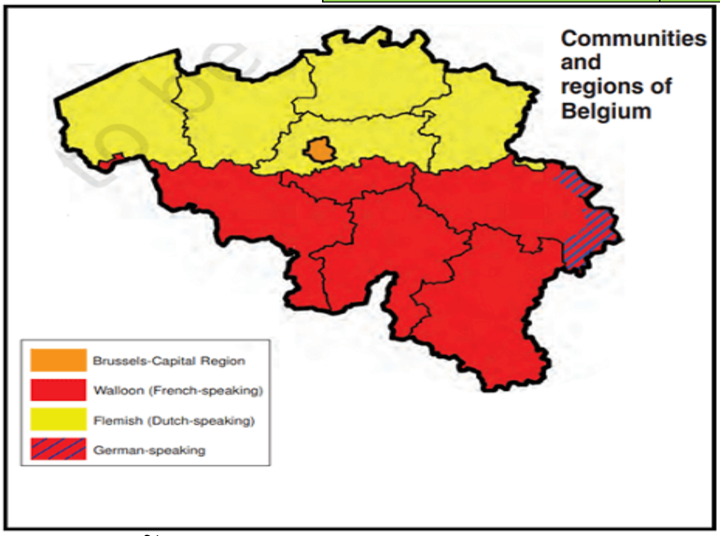

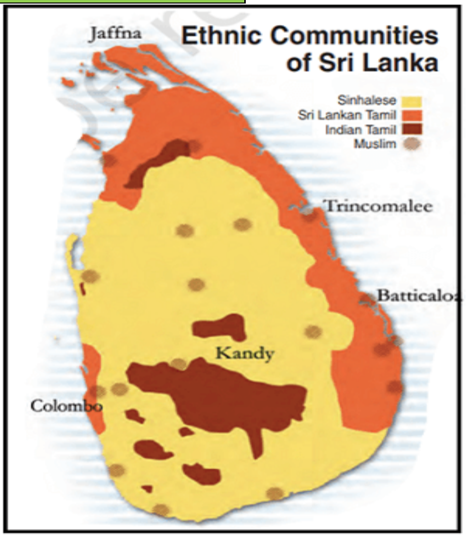

2. श्रीलंका में-

तमिल 18%, जिसमें 13% श्रीलंकाई तमिल और सिंहली भाषी 74%

लोकतांत्रिक सरकार-

श्रीलंका (बहुसंख्यकवाद)	बेल्जियम (समायोजन)
1948 में स्वतंत्र (c) लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार (मंत्रालय में सिंहली समुदाय का वर्चस्व था)	(c) केंद्रीय सरकार में डच और फ्रेंच भाषी मंत्रियों की समान संख्या

(ii) सिंहली वर्चस्व स्थापित करने के लिए बहुसंख्यकवादी उपायों की एक श्रृंखला को अपनाया: 1956 अधिनियम, सिंहली को एकमात्र भाषा के रूप में मान्यता दी (iii) स्कूल, विश्वविद्यालय के पदों और सरकारी नौकरियों के लिए सिंहली आवेदकों को तरजीह दी। (iv) संविधान- बौद्ध धर्म की रक्षा और संवर्धन करना श्रीलंकाई तमिल | सिंहली वर्चस्व	(ii) कोई भी समुदाय अपने लिए आधिकारिक निर्णय नहीं ले सकता (iii) राज्य सरकार केंद्रीय सरकार के अधीन नहीं है (iv) ब्रुसेल्स: सरकार में भी समान प्रतिनिधित्व था
परिणाम:- c) श्रीलंकाई तमिलों में अविश्वास की भावना बढ़ी और गृह युद्ध शुरू हुआ b) संविधान और सरकार ने उनके हितों की अनदेखी की- समान राजनीतिक अधिकारों से वंचित किया c) श्रीलंकाई तमिलों ने पार्टियाँ बनाई और तमिल ईलम राज्य, तमिल को आधिकारिक भाषा, क्षेत्रीय स्वायत्तता, शिक्षा और नौकरियों को सुरक्षित करने में समानता की माँग की गृह युद्ध के कारण – - तमिल को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए लड़ाई लड़ी। - क्षेत्रीय स्वायत्तता चाहते थे - शिक्षा और नौकरियों को सुरक्षित करने में समान अवसर - श्रीलंका के उत्तरी और पूर्वी हिस्से में एक स्वतंत्र तमिल ईलम की माँग की।	परिणाम:- A) विभिन्न समुदायों और क्षेत्रों की भावनाओं का सम्मान करते हुए देश एकजुट हुआ b) ब्रसेल्स को यूरोपीय संघ का मुख्यालय चुना गया c) देश एकजुट हुआ

बेल्जियम - तीन प्रकार की सरकार-

केंद्र सरकार	राज्य सरकार - ब्रुसेल्स (इसकी राजधानी)	सामुदायिक सरकार
बेल्जियम - डच, फ्रेंच और जर्मन भाषी - चाहे वे कहीं भी रहते हों	ब्रुसेल्स (इसकी राजधानी) में एक अलग सरकार है जिसमें दोनों समुदायों को समान प्रतिनिधित्व प्राप्त है।	एक ही भाषा समुदाय के लोगों द्वारा निर्वाचित

शक्ति साझा करने के रूप-

1. शक्ति का क्षैतिज वितरण-

सरकार के अंगों के बीच शक्ति साझा की जाती है

विधान मंडल	कार्यकारिणी	न्यायपालिका

नोट-सरकार के विभिन्न अंगों के बीच सत्ता का बंटवारा होता है।

2. सत्ता का ऊर्ध्वाधर वितरण-

सरकार के विभिन्न स्तरों के बीच सत्ता का बंटवारा होता है

केंद्र सरकार
राज्य सरकार
स्थानीय सरकार

नोट-सरकार के विभिन्न स्तरों पर सत्ता साझा की जाती है।

3. सत्ता विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच साझा की जाती है-

सत्ता राजनीतिक दलों, दबाव समूहों और सत्ता में बैठे लोगों को प्रभावित करने वाले आंदोलनों के बीच साझा की जाती है।

उदाहरण: बेल्जियम में सामुदायिक सरकार। विधानसभाओं और संसदों में आरक्षित निर्वाचन क्षेत्र।

सत्ता साझा करना वांछनीय है-

विवेकपूर्ण	नैतिक
❖ बेहतर परिणाम लाना ❖ यह सामाजिक समूहों के बीच संघर्ष की संभावना को कम करने में मदद करता है। ❖ राजनीतिक व्यवस्था की स्थिरता सुनिश्चित करना	❖ मूल्यवान ❖ यह लोकतंत्र की मूल भावना है ❖ लोगों को यह अधिकार है कि उन्हें शासन कैसे करना है, इस बारे में उनसे सलाह ली जाए ❖ लोगों ने सरकार में भाग लिया

बहुविकल्पी प्रश्न-

प्रश्न 1इमारत की पहचान करें

A) UNO का मुख्यालय

B) यूरोपीय संघ संसद का मुख्यालय

C) विश्व बैंक का मुख्यालय

D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: B) यूरोपीय संघ संसद का मुख्यालय

प्रश्न 2 सत्ता के बंटवारे के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

A) इससे विभिन्न समूहों के बीच संघर्ष होता है।

B) इससे देश की स्थिरता सुनिश्चित होती है।

C) इससे विभिन्न समूहों के बीच संघर्ष कम करने में मदद मिलती है।

a) केवल A सत्य है b) केवल B सत्य है

c) A और B दोनों सत्य हैं d) B और C दोनों सत्य हैं

उत्तर: d) B और C दोनों सत्य हैं

केस आधारित प्रश्न-

1-निम्नलिखित गद्यांश को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्नों के उत्तर दें: (1+1+2=4)

"बेल्जियम यूरोप का एक छोटा सा देश है, जिसमें जटिल सत्ता-साझाकरण व्यवस्था है। देश में दो प्रमुख जातीय समूह रहते हैं: डच-भाषी समुदाय, जो बहुसंख्यक है, और फ्रेंच-भाषी समुदाय, जो एक महत्वपूर्ण अल्पसंख्यक है। इन दोनों समुदायों के बीच शांति और सद्भाव सुनिश्चित करने के लिए, बेल्जियम की सरकार ने एक अनूठी सत्ता-साझाकरण प्रणाली लागू की है। इस प्रणाली में केंद्र सरकार में समान प्रतिनिधित्व, विशेष कानून शामिल हैं, जिसके लिए किसी भी निर्णय के लिए दोनों समूहों की सहमति की आवश्यकता होती है, और एक सामुदायिक सरकार जो सांस्कृतिक, शैक्षिक और भाषाई मुद्दों को संबोधित करती है।

दूसरी ओर, श्रीलंका, जिसने 1948 में स्वतंत्रता प्राप्त की, ने बहुसंख्यक दृष्टिकोण अपनाया। सिंहली समुदाय, जो बहुसंख्यक है, राजनीतिक परिदृश्य पर हावी है, अक्सर तमिल अल्पसंख्यक को दरकिनार कर देता है। इस दृष्टिकोण ने तनाव, संघर्ष और तमिल-भाषी आबादी से अधिक स्वायत्तता की माँग को जन्म दिया है।"

प्रश्न:i. बेल्जियम में किस तरह की सत्ता-साझाकरण प्रणाली है, और यह अपने समुदायों के बीच शांति बनाए रखने में कैसे मदद करती है?

प्रश्न:ii. श्रीलंका अपने जातीय संघर्षों को हल करने के लिए बेल्जियम के सत्ता-साझाकरण मॉडल से क्या सबक सीख सकता है?

प्रश्न:iii. बेल्जियम में सामुदायिक सरकार की अवधारणा सांस्कृतिक मतभेदों को समायोजित करने में कैसे योगदान देती है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1- "बेल्जियम के उदाहरण के आधार पर समझाइए कि सत्ता-साझेदारी का उपयोग विभिन्न समुदायों को समाहित करने के लिए कैसे किया जा सकता है?"

संकेत- केंद्र सरकार में डच और फ्रेंच मंत्रियों की बराबर भागीदारी, राज्य सरकारों के साथ शक्तियों का विभाजन, समुदाय सरकार।

****

अध्याय-2

संघवाद

अध्याय का सार

फ्लो चार्ट

संघवाद क्या है?
भारत को संघीय देश बनाने वाली कौन सी चीज है?
संघवाद का पालन कैसे किया जाता है?
भारत में विकेंद्रीकरण
सत्ता साझा करने के तरीके

सरकार के प्रकार

1. एकात्मक सरकार	2. संघीय सरकार
❖ एक स्तर पर सरकार ❖ (केंद्र सरकार) ❖ सभी शक्तियां रखती है राज्य या अधीनस्थ सरकार को आदेश दे सकती है। ❖ राज्य या अधीनस्थ सरकार को आदेश दे सकती है ❖ जैसे- यू.के., इटली, पुर्तगाल	❖ दो या उससे अधिक स्तरों पर सरकार ❖ पूरे देश के लिए केंद्र सरकार ❖ सामान्य राष्ट्रीय हित के लिए काम करती है ❖ इसकी अपनी शक्तियाँ होती हैं क्योंकि यह केंद्र के प्रति जवाबदेह नहीं होती ❖ राज्य सरकार राज्य स्तर पर काम करती है ❖ स्थानीय प्रशासन को देखती है ❖ जैसे- भारत, बेल्जियम, दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया

नोट- ये दोनों सरकारें अलग-अलग लोगों के प्रति जवाबदेह हैं।

संघवाद की विशेषताएँ:-

❖ सरकार के दो या अधिक स्तर प्रत्येक स्तर का अपना अधिकार क्षेत्र (शक्ति) होता है संविधान में निर्दिष्ट अधिकार क्षेत्र संविधान के प्रावधानों में परिवर्तन के लिए दोनों सरकारों की सहमति की आवश्यकता होती है यदि सरकार के स्तरों के बीच कोई विवाद उत्पन्न होता है तो न्यायालय निर्णायक की भूमिका निभाते हैं

राजस्व के स्रोत निर्दिष्ट (वित्तीय स्वायत्तता) –

❖ प्रत्येक राज्य के पास अपने कल्याण की देखभाल के लिए अपना स्वयं का राजस्व होता है

दोहरा उद्देश्य - क्षेत्रीय विविधता को समायोजित करके देश की एकता को बढ़ावा देना दो मार्ग जिनके माध्यम से संघ का गठन किया गया है.

1. एक साथ आना	2. एकजुट रहना

• स्वतंत्र राज्य एक साथ मिलकर एक बड़ी इकाई बनाते हैं • अपनी संप्रभुता को एक साथ लाते हैं, अपनी पहचान बनाए रखते हैं, सुरक्षा बढ़ाते हैं • सभी राज्यों के पास समान शक्तियाँ होती हैं • उदाहरण- यू.एस.ए., स्विटजरलैंड, ऑस्ट्रेलिया	• बड़े देश अपनी शक्ति को राज्य और राष्ट्रीय सरकार के बीच बांटने का फैसला करते हैं। • केंद्र सरकार ज़्यादा शक्तिशाली होती है • जैसे-भारत, बेल्जियम, स्पेन

विधायी शक्तियों का तीन सूचियां में वितरण-

1. संघ सूची-राष्ट्रीय महत्व के विषय पूरे देश में एक समान नीति की आवश्यकता है संघ सरकार अकेले ही कानून बना सकती है जैसे- रेलवे, रक्षा आदि।
2. राज्य सूची-राज्य और स्थानीय महत्व के विषय राज्य सरकार अकेले ही कानून बना सकती है जैसे- पुलिस, कृषि आदि।
3. समवर्ती सूची-केंद्र और राज्य दोनों समान रूप से कानून बनाते हैं संघर्ष की स्थिति में, केंद्र सरकार का कानून लागू होगा जैसे शिक्षा, विवाह आदि।
4. अवशिष्ट विषय- जो विषय तीनों सूचियों में से किसी में नहीं आते, उन पर संघ सरकार के कानून लागू होंगे। जैसे कंप्यूटर, आईटी आदि।

भाषाई राज्य-

एक ही भाषा बोलने वाले लोग एक ही राज्य में रहते थे। कुछ राज्य भाषा के आधार पर नहीं बल्कि संस्कृति, जातीयता या भूगोल के आधार पर मतभेदों को पहचानने के लिए बनाए गए थे। भाषाई राज्यों के गठन ने देश को एकजुट किया है, प्रशासन को आसान बनाया है। भाषा नीति- किसी एक भाषा को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा नहीं दिया गया। लचीलापन दिखाया गया है। आधिकारिक उद्देश्यों के लिए हिंदी के साथ अंग्रेजी के उपयोग पर सहमति है। राज्यों की भी अपनी आधिकारिक भाषाएँ हैं।

केंद्र-राज्य संबंध-

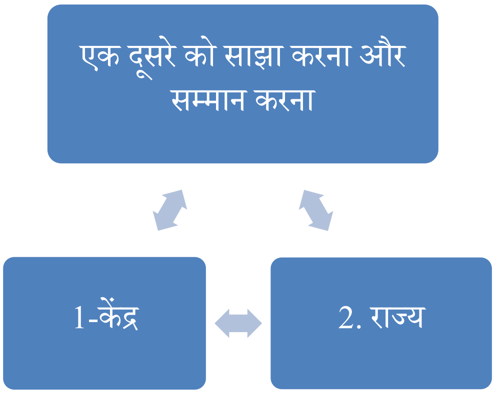

गठबंधन सरकार –

1. दो या दो से अधिक राजनीतिक दलों के साथ मिलकर बनाई गई सरकार। वे एक साझा कार्यक्रम अपनाते हैं।

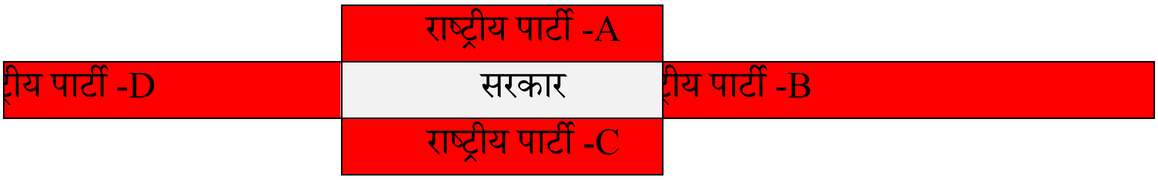

सर्वोच्च न्यायालय:-

सुप्रीम कोर्ट का एक बड़ा फैसला जिसने केंद्र सरकार के लिए राज्य सरकार को मनमाने तरीके से बर्खास्त करना मुश्किल बना दिया।

विकेंद्रीकरण:-

केंद्र से सत्ता छीन ली गई और राज्य सरकार ने स्थानीय सरकार को दे दी

भारत में विकेंद्रीकरण के कारण -

• बड़ा देश- बड़ी संख्या में समस्याएँ और मुद्दे
• त्रिस्तरीय सरकार- स्थानीय सरकार का गठन
• स्थानीय लोगों को स्थानीय समस्याओं की बेहतर जानकारी
• स्थानीय स्वशासन के लिए लोकतांत्रिक भागीदारी

तीसरे स्तर को और अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए उठाए गए कदम -

• 1992-संशोधन-तीसरा स्तर बनाया गया-अधिक शक्तिशाली
• नियमित चुनाव
• एससी, एसटी के लिए सीटों का आरक्षण
• महिलाओं के लिए ओबीसी आरक्षण
• चुनावों को नियंत्रित करने के लिए राज्य चुनाव आयोग का गठन
• राज्य सरकार स्थानीय सरकार के साथ सत्ता और राजस्व साझा करेगी।

पंचायती राज (ग्रामीण स्थानीय सरकार) का गठन:-

• प्रत्येक गांव के समूह में एक पंचायत होती है
• अध्यक्ष या सरपंच
• लोगों द्वारा सीधे चुने जाते हैं
• ग्राम सभा (गांव के सभी मतदाता) की देखरेख में काम करते हैं
• ग्राम पंचायत के बजट को मंजूरी देने के लिए साल में दो या तीन बार मिलते हैं

पंचायती राज-स्थानीय स्वशासन (ग्रामीण)-

1. गांव स्तर ग्राम पंचायत (ग्राम पंचायत का समूह) ग्राम सभा द्वारा गठित (गांव के सभी मतदाता) प्रमुख- अध्यक्ष या सरपंच	2. ब्लॉक स्तर पंचायत समिति (कई ब्लॉक मिलकर जिला बनाते हैं) उस क्षेत्र के पंचायत सदस्यों द्वारा निर्वाचित प्रमुख - ब्लॉक पंचायत अध्यक्ष या बीडीओ	3. जिला स्तर जिला परिषद निर्वाचित सदस्यों द्वारा गठित और इसमें लोकसभा के सदस्य और जिले के विधायक होते हैं प्रमुख - जिला अध्यक्ष

स्थानीय स्वशासन (शहरी)

1. नगर पालिकाएँ (कस्बा) प्रमुख - अध्यक्ष	2. नगर निगम (बड़े शहर) प्रमुख - महापौर (महापौर)

बहुविकल्पीय प्रश्न-

प्रश्न 1- कॉलम-A को कॉलम-B से मिलाएँ और सही विकल्प चुनें:

कॉलम-A (विषय)	कॉलम-B (सूची)
A पुलिस	1 अवशिष्ट सूची
B वन	2 संघ सूची
C विदेशी मामले	3 राज्य सूची
D कंप्यूटर सॉफ्टवेयर	4 समवर्ती सूची

a) A - 4, B - 2, C - 1, D - 3
b) A - 3, B - 4, C - 2, D - 1
c) A - 4, B - 1, C - 2, D - 4
d) A - 1, B - 2, C - 4, D – 3
उत्तर- b) A - 3, B - 4, C - 2, D - 1

प्रश्न 2- शीना की दादी ने उसे बताया कि 1992 से पहले स्थानीय सरकार बहुत अलग थी। 1992 के संशोधन के बाद उसने निम्नलिखित में से कौन सा परिवर्तन देखा?
1.राज्य सरकार ने स्थानीय सरकारों के साथ अधिक शक्तियाँ साझा कीं।
2.केंद्र चुनाव आयोग चुनाव कराएगा।
3.पंचायत के मुखिया का कम से कम एक तिहाई पद महिलाओं के लिए आरक्षित है।
a) केवल 1 और 2
b) केवल 1 और 3
c) केवल 2 और 3
d) उपरोक्त सभी
उत्तर- b) केवल 1 और 3

प्रश्न 3- अभिकथन: होल्डिंग टुगेदर फेडरेशन सभी राज्यों को समान अधिकार नहीं देता है
कारण: कुछ राज्यों को विशेष दर्जा दिया गया है।

a) A और R दोनों सत्य हैं, और R, A का सही स्पष्टीकरण है।

b) A और R दोनों सत्य हैं, लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

c) A सत्य है लेकिन R असत्य है।

d) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

उत्तर- a) A और R दोनों सत्य हैं, और R, A का सही स्पष्टीकरण है।

लघु उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न 1- "कल्पना कीजिए कि आप दो अलग-अलग देशों के छात्रों को संघवाद की अवधारणा समझा रहे हैं। आप संघ के बनने के दो प्रमुख तरीकों को कैसे समझाएंगे? उपयुक्त उदाहरणों के साथ स्पष्ट करें।"

संकेत-

- ❖ एक साथ आने वाला संघ
- ❖ होल्डिंग टुगेदर फेडरेशन

प्रश्न 2. चित्र आधारित प्रश्न-

प्रश्न 2- उपरोक्त कार्टून का अर्थ लिखें।

A) राज्य कम बिजली की मांग करते हैं

B) राज्य अधिक बिजली की मांग करते हैं

C) राज्यों का संघ सरकार में स्वागत है।

D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- B) राज्य अधिक बिजली की मांग करते हैं

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न 1- "कल्पना कीजिए कि आप अपने गांव में स्थानीय स्वशासन पर एक जागरूकता अभियान का हिस्सा हैं। आप 1992 के संविधान संशोधनों का महत्व विकेंद्रीकरण को मजबूत करने और स्थानीय निकायों को सशक्त बनाने में कैसे समझाएंगे?"

संकेत-इन संशोधनों ने नियमित चुनावों को अनिवार्य बना दिया, हाशिए पर पड़े समुदायों और महिलाओं के लिए प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया और स्थानीय निकायों को वित्तीय और प्रशासनिक स्वायत्तता प्रदान की

****

अध्याय-3

लिंग, धर्म और जाति

अध्याय का सार-

लिंग और राजनीति
महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व
धर्म, सांप्रदायिकता और राजनीति
जाति और राजनीति

लिंग –

❖ श्रम का लैंगिक विभाजन - महिला घर के अंदर का सारा काम करती है या घरेलू सहायकों की मदद लेती है और पुरुष घर के बाहर का काम करते हैं

नारीवादी आंदोलन –

❖ व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में समानता के उद्देश्य से एक आंदोलन (समान अधिकार और अवसरों में विश्वास)

समाज में महिलाओं की भूमिका-

❖ यह विश्वास कि महिलाओं की जिम्मेदारी घर का काम और बच्चों का पालन-पोषण करना है

❖ उनके काम को महत्व नहीं दिया जाता और मान्यता नहीं दी जाती

❖ हालांकि आधी आबादी का गठन करती हैं, लेकिन राजनीति में उनकी भूमिका बहुत कम है

राजनीति में उठाए गए लिंग मुद्दे –

❖ समान अधिकारों के लिए, मतदान के लिए, शिक्षा और करियर के लिए महिलाओं की राजनीतिक और कानूनी स्थिति में सुधार (नारीवादी आंदोलन)

❖ सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भूमिका के परिदृश्य को बदलना

❖ वैज्ञानिक, डॉक्टर, प्रबंधक और कॉलेज और विश्वविद्यालय के शिक्षकों के रूप में काम करने वाली महिलाएं स्वीडन, नॉर्वे और फिनलैंड जैसे विकसित देशों में सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी अधिक है.

जिस तरह से महिलाओं के साथ भेदभाव और उत्पीड़न किया जाता है-

❖ साक्षरता दर महिलाएं 54% और पुरुष 76% कारण- उच्च शिक्षा के लिए जाने वाली छात्राएं कम हैं, स्कूल छोड़ने वालों की संख्या अधिक है –

❖ क्योंकि माता-पिता लड़कों की शिक्षा पर अधिक खर्च करना पसंद करते हैं.

उच्च वेतन वाली नौकरियों में महिलाओं का अनुपात कम है-

❖ समान वेतन अधिनियम में प्रावधान है कि समान वेतन दिया जाना चाहिए, लेकिन महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम वेतन दिया जाता है

❖ माता-पिता बेटों को प्राथमिकता देते हैं और इसलिए लिंग-अनुपात में गिरावट आती है

❖ ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं को परेशान और शोषित किया जाता है - घरेलू हिंसा

❖ धर्मों के पारिवारिक कानून महिलाओं के खिलाफ भेदभाव दिखाते हैं

❖ हमारा समाज अभी भी पुरुष प्रधान, पितृसत्तात्मक समाज है।

महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व-

❖ लोकसभा में निर्वाचित महिला सदस्यों की संख्या 14.36% तक नहीं पहुँच पाई है और राज्य विधानसभाओं में 5% - बहुत कम.

भारत में पंचायती राज में एक अलग परिदृश्य-

❖ स्थानीय सरकार में 1/3 सीट पंचायतों और नगर पालिकाओं में महिलाओं के लिए आरक्षित है - उनके निकायों में 10 लाख से अधिक महिला प्रतिनिधि हैं।

संसद के समक्ष विधेयक का प्रस्ताव:-

❖ लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए कम से कम 1/3 सीटों का आरक्षण

धर्म –

सांप्रदायिकता -

धार्मिक मतभेदों के आधार पर विभाजन-

लोकतंत्र के लिए एक बड़ी चुनौती-

1. धर्म और राजनीति के बीच संबंध

- गांधी का दृष्टिकोण:- धर्म को राजनीति से कभी अलग नहीं किया जा सकता - इसे धर्म से नैतिकता द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए
- मानवाधिकार समूहों का दृष्टिकोण - हमारे देश में सांप्रदायिक दंगों के पीड़ित धार्मिक अल्पसंख्यक हैं
- महिला आंदोलन का दृष्टिकोण - धर्मों के पारिवारिक कानून महिलाओं के साथ भेदभाव करते हैं, ऐसे कानूनों को बदलकर उन्हें न्यायसंगत बनाने की मांग की जानी चाहिए।

2. राजनीति में सांप्रदायिकता के विभिन्न रूप:-

- धार्मिक पूर्वाग्रह- दूसरे धर्मों पर अपने धर्म की श्रेष्ठता में विश्वास।
- सांप्रदायिक मानसिकता अपने ही धार्मिक समुदाय के राजनीतिक प्रभुत्व की ओर ले जाती है-

- चुनावी राजनीति में विशेष अपील जिसमें पवित्र प्रतीकों, धार्मिक नेताओं, भावनात्मक अपील और अनुयायियों को एक साथ लाने के लिए स्पष्ट भय का उपयोग शामिल है

3. सांप्रदायिकता को रोकने के लिए संविधान में धर्मनिरपेक्षता पर आधारित संवैधानिक प्रावधान:-

- भारतीय राज्य के लिए कोई आधिकारिक धर्म नहीं- कोई विशेष दर्जा नहीं।
- किसी भी धर्म को मानने, उसका पालन करने और उसका प्रचार करने की स्वतंत्रता।
- धर्म के आधार पर भेदभाव पर रोक।
- धार्मिक समुदायों के बीच समानता सुनिश्चित करता है।

4. सांप्रदायिक राजनीति-

❖ इस विचार पर आधारित है कि धर्म सामाजिक समुदाय का मुख्य आधार है-राज्य शक्ति का उपयोग एक धार्मिक समूह का बाकी लोगों पर वर्चस्व स्थापित करने के लिए किया जाता है। एक धर्म और उसके अनुयायियों को दूसरे के खिलाफ खड़ा किया जाता है।

जाति -

❖ वंशानुगत व्यावसायिक विभाजन के आधार पर जाति विभाजन, हमारे जाति समूहों के खिलाफ बहिष्कार और भेदभाव - सामाजिक असमानता का कारण बनता है।

❖ जाति व्यवस्था के खिलाफ लड़ने वाले समाज सुधारक गांधीजी, जोतिबा फुले, बी.आर. अंबेडकर, पेरियार रामास्वामी नायकर हैं।

❖ जाति व्यवस्था में आए बदलावों के कारण - शहरीकरण, व्यावसायिक गतिशीलता, जाति पदानुक्रम (पुरानी धारणाओं) का टूटना।

❖ भारत के संविधान ने किसी भी जाति आधारित भेदभाव को प्रतिबंधित किया, अस्पृश्यता पर प्रतिबंध, आधुनिक शिक्षा तक पहुंच।

5. राजनीति में जाति के विभिन्न रूप-

❖ चुनाव जीतने के लिए पार्टियाँ विभिन्न जातियों और जनजातियों से उम्मीदवार चुनती हैं

❖ जातिगत भावनाओं की अपील करती हैं - किसी जाति का पक्ष लेती हैं, और उनके प्रतिनिधि के रूप में देखी जाती हैं

❖ एक व्यक्ति-एक वोट, देश के किसी भी संसदीय क्षेत्र में एक जाति का बहुमत नहीं है

❖ एकल जाति- इसलिए उन्हें चुनाव जीतने के लिए एक से अधिक जातियों की आवश्यकता होती है।

❖ इससे जाति के लोगों में एक नई चेतना आई कि उनके साथ निम्न व्यवहार किया जाता था

❖ सत्तारूढ़ पार्टी के सांसद या विधायक अक्सर चुनाव हार जाते हैं - ऐसा तब नहीं होता जब यह जातिगत पक्षपात होता।

परिणाम -

❖ जाति समूह दूसरी जाति या उपजाति के साथ मिलकर बड़ा हो जाता है

❖ कुछ जातियाँ दूसरी जातियों के साथ संवाद और समझौता करती हैं

❖ नए जाति समूहों का निर्माण-पिछड़े, अगड़े जाति समूह।

बहुविकल्पीय प्रश्न-

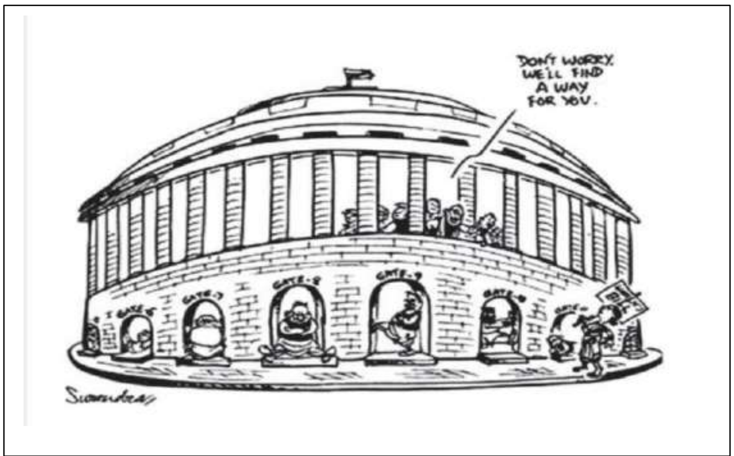

प्रश्न 1 ऊपर दिया गया चित्र किस विषय से संबंधित है?
A) ओबीसी आरक्षण विधेयक B) ईडब्ल्यूएस आरक्षण विधेयक
C) महिला आरक्षण विधेयक D) पंचायती राज व्यवस्था में ओबीसी आरक्षण
उत्तर- C) महिला आरक्षण विधेयक

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न 1- हमारे देश में महिला साक्षरता दर कम होने के लिए जिम्मेदार कारकों की व्याख्या करें?
संकेत- उच्च शिक्षा में लड़कियों का अनुपात बहुत कम होता है। लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं क्योंकि माता-पिता अपने बेटों और बेटियों पर समान रूप से खर्च करने के बजाय अपने लड़कों की शिक्षा पर अपने संसाधन खर्च करना पसंद करते हैं।
प्रश्न 2-"कल्पना कीजिए कि आप अपने स्कूल पत्रिका के लिए भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों पर एक लेख लिख रहे हैं। आप कैसे सिद्ध करेंगे कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है? अपने उत्तर को संवैधानिक प्रावधानों और वास्तविक जीवन के उदाहरणों से स्पष्ट कीजिए।"?
संकेत- भारतीय राज्य का कोई आधिकारिक धर्म नहीं है।
संविधान सभी व्यक्तियों और समुदायों को किसी भी धर्म को मानने, उसका अभ्यास करने और प्रचार करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।
संविधान धर्म के आधार पर भेदभाव को रोकता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न 1. **"कल्पना कीजिए कि आप एक विद्यालय जागरूकता कार्यक्रम के लिए लैंगिक समानता पर एक प्रस्तुति तैयार कर रहे हैं। ऐसे में, महिलाओं के सशक्तिकरण और लैंगिक असमानता को कम करने हेतु भारत सरकार द्वारा उठाए गए पाँच प्रमुख कदम कौन-से होंगे? उदाहरण सहित समझाइए।"**

संकेत- स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए 1/3 सीटें आरक्षित, समान वेतन अधिनियम के तहत बराबर वेतन, लिंग चयनात्मक गर्भपात पर प्रतिबंध, लड़कियों को निःशुल्क शिक्षा.

****

अध्याय-4

राजनीतिक दल

अध्याय का सार-

हमें राजनीतिक दल की आवश्यकता क्यों है?
कितने राजनीतिक दल होने चाहिए?
राष्ट्रीय दल
राज्य दल
राजनीतिक दलों के लिए चुनौतियाँ
पार्टियों में सुधार कैसे किया जा सकता है

1. राजनीतिक दल- लोगों का एक समूह जो चुनाव लड़ने और सरकार में सत्ता हासिल करने के लिए एक साथ आते हैं

विशेषताएँ -

- समाज के लिए सामूहिक भलाई के लिए कुछ नीतियों और कार्यक्रमों पर सहमत होना
- लोगों को समझाना कि उनकी नीतियाँ बेहतर क्यों हैं।
- इस प्रकार चुनावों में लोकप्रिय समर्थन प्राप्तकर इसे लागू करना।
- पक्षपातपूर्ण (समाज का हिस्सा) शामिल करना।
- समाज में मौलिक राजनीतिक विभाजन को दर्शाता है।

2. राजनीतिक दल के तीन घटक-

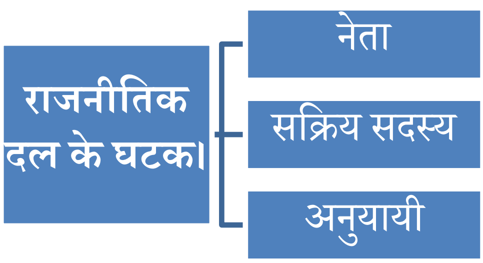

3.राजनीतिक दलों के कार्य

1. चुनाव लड़ना– उम्मीदवारों का चयन करते हैं और जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं।
2. सरकार बनाना – चुनाव जीतने पर प्रशासन चलाते हैं।
3. कानून बनाना– विधानमंडल में कानून बनाने और पारित करने में मदद करते हैं।
4. जनमत तैयार करना– मीडिया और अभियानों के माध्यम से लोगों को प्रभावित करते हैं।
5. विपक्ष की भूमिका निभाना – सत्ताधारी पार्टी की नीतियों की आलोचना करते हैं और उन्हें सवालों के घेरे में रखते हैं।
6. जनता और सरकार के बीच सेतु बनाना – नागरिकों और सरकार के बीच संपर्क स्थापित करते हैं और जन समस्याओं को सरकार तक पहुँचाते हैं।

4. हमें पार्टी की आवश्यकता क्यों है?

❖ अगर चुनाव में हर उम्मीदवार स्वतंत्र होगा, लोगों से किसी भी बड़े नीतिगत बदलाव के बारे में वादे नहीं कर सकता।
❖ अगर बन भी गया- तो इसकी उपयोगिता अनिश्चित रहेगी।
❖ अपने निर्वाचन क्षेत्र के प्रति जवाबदेह होगा, कोई भी देश कैसे चलेगा, इसके लिए जिम्मेदार नहीं होगा।

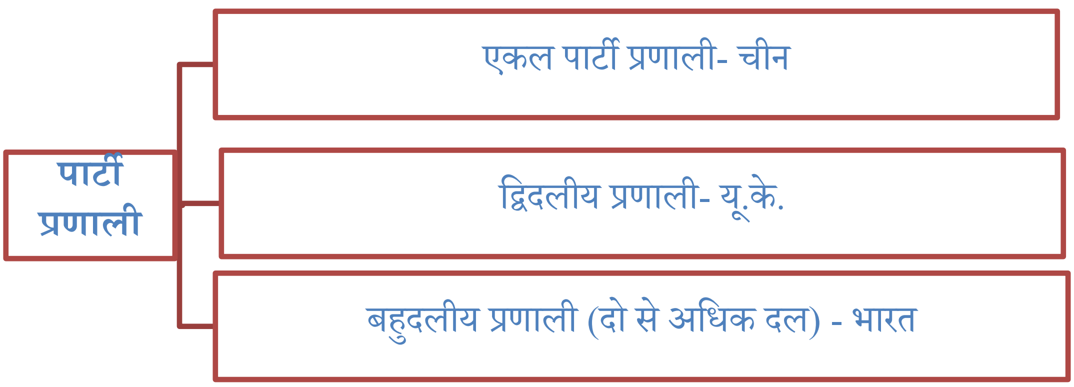

5. पार्टी सिस्टम का वर्गीकरण

एकल पार्टी सिस्टम-

❖ केवल एक पार्टी को सरकार को नियंत्रित करने और चलाने की अनुमति है।
❖ चुनावी प्रणाली सत्ता के लिए मुक्त प्रतिस्पर्धा की अनुमति नहीं देती है।
❖ उदाहरण के लिए चीन (केवल कम्युनिस्ट पार्टी) यह लोकतांत्रिक विकल्प नहीं है.

दो-पक्षीय प्रणाली (द्वि-पक्षीय प्रणाली)-

❖ कई दल मौजूद हो सकते हैं और राज्य विधानमंडल में उनकी सीटें हो सकती हैं, लेकिन केवल दो मुख्य दल ही बहुमत प्राप्त कर पाते हैं। उदाहरण के लिए अमेरिका, ब्रिटेन उदाहरण के लिए लेबर पार्टी और ब्रिटेन की कंजर्वेटिव पार्टी.

बहुदलीय व्यवस्था-

❖ दो से अधिक दल अकेले या गठबंधन करके सत्ता में आ सकते हैं। जैसे भारत

❖ कई को राजनीतिक प्रतिनिधित्व मिलता है

राष्ट्रीय राजनीतिक दल -

❖ वे व्यापक दल हैं, जिनकी विभिन्न राज्यों में अपनी इकाइयाँ हैं.

❖ सभी राष्ट्रीय स्तर पर तय की गई समान नीतियों और कार्यक्रमों का पालन करते हैं। (मुख्य रूप से संघीय व्यवस्था में देखा जाता है)

6. किसी दल के बनने के लिए मानदंड -
1. राष्ट्रीय दल - चार राज्यों में लोकसभा चुनाव या विधानसभा चुनाव में कुल वोटों का कम से कम छह प्रतिशत प्राप्त करें और लोकसभा में कम से कम चार सीटें जीतें।
2. राज्य पार्टी - क्षेत्रीय दल - किसी राज्य की विधान सभा के चुनाव में कुल वोटों का कम से कम 6 प्रतिशत प्राप्त करें और कम से कम दो सीटें जीतें, एक राज्य पार्टी के रूप में मान्यता प्राप्त है।
तेलुगु देशम पार्टी, DMK, AIADMK, केरल कांग्रेस, राष्ट्रीय जनता दल, आदि।

7.राजनीतिक दलों के सामने चुनौतियाँ
1☐ आंतरिक लोकतंत्र की कमी-
• सदस्यों का रिकॉर्ड नहीं रखा जाता।
• आंतरिक चुनाव और बैठकें नहीं होतीं।
• फैसले कुछ ही नेताओं द्वारा लिए जाते हैं।
2☐ वंशवाद-
- नेतृत्व अक्सर परिवार में ही बना रहता है।
- आम कार्यकर्ता ऊपर नहीं पहुंच पाते।

3☐ धन और बाहुबल का उपयोग-
• अमीर लोग और अपराधी पार्टी पर असर डालते हैं।
• चुनाव में गलत तरीकों का इस्तेमाल होता है।
4☐ मतदाताओं को वास्तविक विकल्प नहीं मिलते
• सभी पार्टियों की नीतियाँ लगभग एक जैसी होती हैं।
• नेता पार्टियाँ बदलते रहते हैं।
8. राजनीतिक दलों और उसके नेताओं में सुधार के लिए किए गए प्रयास –

❖ दल बदल को रोकना (चुने जाने के बाद पार्टी बदलना) अगर वे ऐसा करते हैं तो वे सीट खो देंगे।

❖ सुप्रीम कोर्ट द्वारा धन और अपराधियों के प्रभाव को कम करने का आदेश- उम्मीदवार को लंबित आपराधिक मामलों का विवरण देते हुए हलफनामा दाखिल करना होगा।

❖ राजनीतिक दलों को अपना आयकर रिटर्न दाखिल करना चाहिए।

9. सुधार करने का सुझाव –

❖ अभी तक स्वीकार नहीं किया गया है।राजनीतिक दलों के आंतरिक मामलों को विनियमित करने के लिए कानून (अपने सदस्यों का रजिस्टर बनाए रखना, पार्टी विवादों का न्याय करना) महिलाओं के लिए कोटा (कम से कम 1/3) सरकार को चुनाव खर्च का समर्थन करने के लिए पार्टियों को पैसा देना चाहिए।

10. राजनीतिक दल के प्रतीक –

राजनीतिक दल प्रकार	पार्टी का नाम	चिन्ह
राष्ट्रीय पार्टी	भारतीय जनता पार्टी (BJP)	
राष्ट्रीय पार्टी	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC)	
राष्ट्रीय पार्टी	भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI)	
राष्ट्रीय पार्टी	भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) (CPI-M)	
राष्ट्रीय पार्टी	राष्ट्रीय जनता पार्टी (NCP)	
राष्ट्रीय पार्टी	आम आदमी पार्टी (AAP)	AAM AADMI PARTY

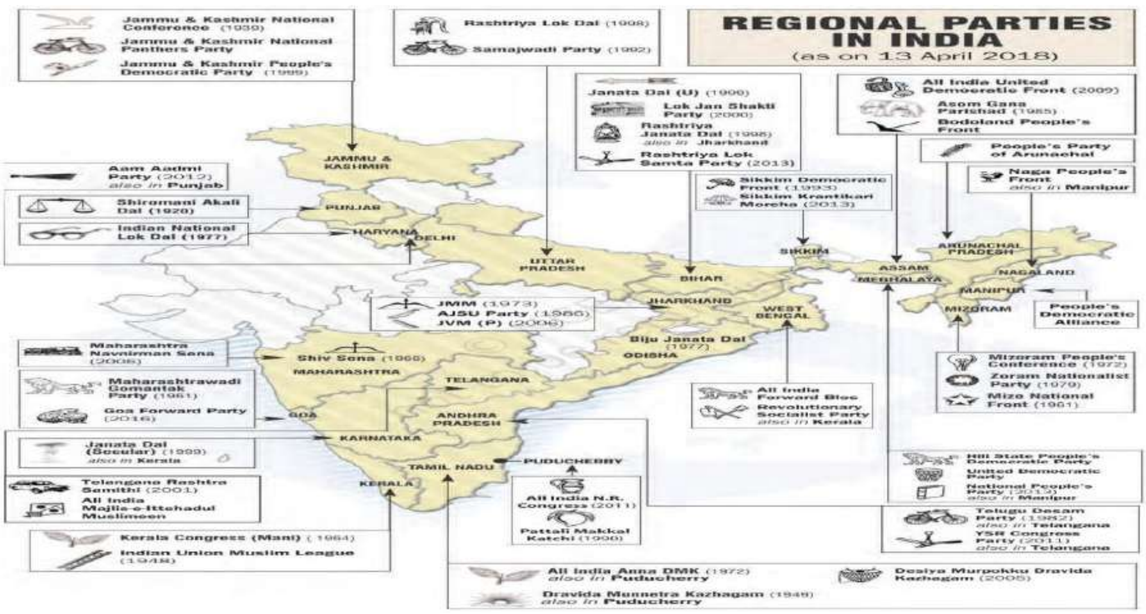

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1- अभिकथन (A): 1994 से, लगभग सभी राज्य दलों को एक या दूसरे राष्ट्रीय स्तर की गठबंधन सरकार का हिस्सा बनने का अवसर मिला है।

कारण (R): इसने हमारे देश में संघवाद और लोकतंत्र को मजबूत करने में योगदान दिया है।

A-A और R दोनों सत्य हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है।

B-A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

C-A सत्य है लेकिन R असत्य है।

D-A असत्य है लेकिन R सत्य है।

उत्तर- A- A और R दोनों सत्य हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1-"कल्पना कीजिए कि आप छात्र परिषद् (Student Council) चुनावों में भाग लेने के लिए एक नई राजनीतिक पार्टी बना रहे हैं। आपकी पार्टी को प्रभावशाली और जनप्रतिनिधि बनाने के लिए आप उसमें कौन-कौन से तीन मुख्य घटक शामिल करेंगे? कारण सहित समझाइए।"

संकेत-नेता, सक्रिय सदस्य और अनुयायी

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1-द्विपक्षीय प्रणाली की कोई तीन मुख्य विशेषताएँ बताइए,

संकेत: • सत्ता आमतौर पर दो पार्टियों के बीच बदलती रहती है, जबकि अन्य राजनीतिक दल भी मौजूद हो सकते हैं। • बहुमत जीतने वाली पार्टी सरकार बनाती है, जबकि दूसरी प्रमुख विपक्ष बनाती है।

चित्र आधारित प्रश्न-

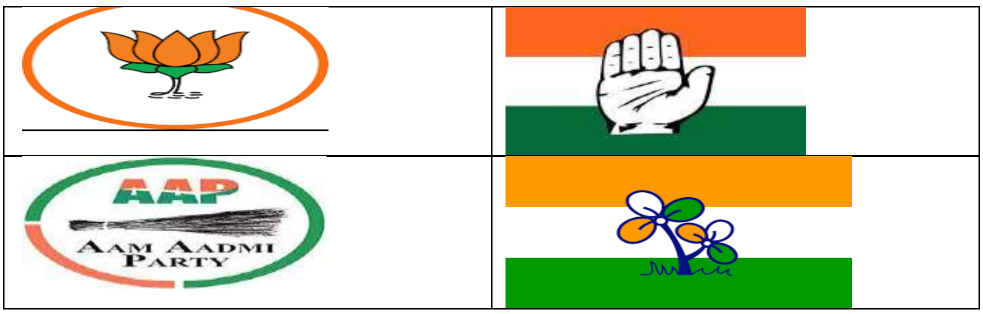

प्रश्न 1. कौन सा चिन्ह क्षेत्रीय पार्टी का है?

उत्तर -………………..

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1- राष्ट्रीय राजनीतिक दल से क्या तात्पर्य है? राष्ट्रीय राजनीतिक दल बनने के लिए आवश्यक शर्तें बताइए।

संकेत- राष्ट्रीय राजनीतिक दल वह दल होता है जो संघ की कई या सभी इकाइयों में मौजूद होता है। दूसरे शब्दों में, यह एक देशव्यापी दल होता है।

• किसी दल को चार राज्यों में लोकसभा चुनाव या विधानसभा चुनाव में डाले गए कुल मतों का कम से कम छह प्रतिशत मत प्राप्त करना होता है।• राष्ट्रीय दल के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए उसे लोकसभा में कम से कम चार सीटें जीतनी होती हैं।

****

अध्याय-5
लोकतंत्र के परिणाम

अध्याय का सार-

फ्लो चार्ट

हम लोकतंत्र के परिणामों का आकलन कैसे करते हैं?
जवाबदेह, उत्तरदायी और वैध सरकार
आर्थिक वृद्धि और विकास
असमानता और गरीबी में कमी
सामाजिक विविधता का समायोजन
नागरिकों की गरिमा और स्वतंत्रता

लोकतंत्र- इसमें लोगों के चुने हुए प्रतिनिधि शासन करते हैं।

लोकतंत्र की विशेषताएँ -

1. यह निश्चित है कि तानाशाही या किसी अन्य रूप की तुलना में लोकतंत्र सरकार का बेहतर रूप है।

लोकतंत्र की बेहतरी के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं।

(A) यह नागरिकों के बीच समानता को बढ़ावा देता है।

(B) यह व्यक्ति की गरिमा को बढ़ाता है।

(C) यह निर्णय लेने की गुणवत्ता को उन्नत करता है।

(D) यह संघर्षों को हल करने की विधि प्रदान करता है।

(E) यह गलतियों को सुधारने का अवसर भी प्रदान करता है।

लोकतंत्र के गुण और दोष -

1. यदि हम लोकतांत्रिक प्रणाली और इसकी विचारधारा का गहराई से और गंभीरता से विश्लेषण करें, तो हम पाएंगे कि यह एकमात्र लोकतांत्रिक प्रणाली है जो लोगों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करती है।

2. इसलिए दुनिया के सौ से अधिक देश किसी न किसी तरह की लोकतांत्रिक राजनीति का दावा करते हैं और उसका अभ्यास करते हैं।

जवाबदेह सरकार
जिम्मेदार सरकार
वैध सरकार

1. लोकतंत्र एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था है जिसमें नागरिकों को अपनी सरकार चुनने और उस पर नियंत्रण रखने का अधिकार होता है।

2 लोकतंत्र का मूल परिणाम यह है कि यह एक जवाबदेह सरकार का निर्माण करे। इसे नागरिकों की जरूरतों और उम्मीदों के प्रति भी जिम्मेदार होना चाहिए।

3. लोकतांत्रिक व्यवस्था का मुख्य आधार आपसी चर्चा और तार्किक बहस है। अगर कोई सरकार बहुत तेजी से निर्णय लेती है, लेकिन उन निर्णयों को लोग स्वीकार नहीं करते हैं, तो समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

आर्थिक विकास और प्रगति -

1. लोकतांत्रिक व्यवस्था में अच्छी सरकार होने के बावजूद यह जरूरी नहीं है कि हमेशा विकास हो।

2. अगर हम 1950 से 2000 के बीच के सभी लोकतंत्रों और तानाशाही शासनों का विश्लेषण करें, तो हम पाएंगे कि तानाशाही में आर्थिक विकास की दर थोड़ी बेहतर है।

3. लोकतंत्र में अपेक्षाकृत कम आर्थिक विकास के बावजूद, दुनिया भर में लोकतंत्र को प्राथमिकता दी जाती है। इसका मुख्य कारण यह है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था एक खुली व्यवस्था है जिसमें लोगों के मौलिक अधिकारों और स्वतंत्रता का सम्मान किया जाता है।

असमानता और गरीबी में कमी -

- सिद्धांत रूप में लोकतंत्र समानता को बढ़ावा देता है, लेकिन व्यवहार में:

धन कुछ लोगों तक सीमित रहता है।

पिछड़े वर्ग जैसे दलित, महिलाएं, अल्पसंख्यक अभी भी संघर्ष कर रहे हैं।

- लोकतंत्र में गरीबी कम करने के लिए योजनाएं बनती हैं, लेकिन सफलता अलग-अलग देशों में अलग होती है।

उदाहरण- भारत में मनरेगा जैसी योजनाएं गरीबों को रोज़गार देती हैं।

सामाजिक विविधता का समायोजन -

1. लोकतंत्र आमतौर पर विभिन्न सामाजिक विभाजन और संघर्षों को समायोजित करता है। लोकतांत्रिक समाधानों के कारण राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक तनाव और संघर्ष विस्फोटक या हिंसक नहीं होते हैं।

2. जैसा कि हम जानते हैं कि कोई भी समाज विभिन्न समूहों के बीच संघर्ष और तनाव को पूरी तरह और स्थायी रूप से हल नहीं कर सकता है। इन मतभेदों को हल करने के लिए लोकतंत्र सबसे उपयुक्त है। दूसरी ओर, गैर-लोकतांत्रिक सरकारें अक्सर इन समस्याओं को हल करने के लिए आँखें मूंद लेती हैं।

3. फिर भी, श्रीलंका का उदाहरण हमें याद दिलाता है कि इन मतभेदों को सुलझाने के लिए लोकतंत्र को दो शर्तों को पूरा करना चाहिए।

(ए) हमें पता होना चाहिए कि लोकतंत्र केवल बहुमत की राय से शासन नहीं है। सरकार के कामकाज के सामान्य दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने के लिए बहुमत को हमेशा अल्पसंख्यक के साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता होती है, दूसरी ओर, बहुमत और अल्पसंख्यक हमेशा स्थायी नहीं होते हैं।

(बी) यह भी आवश्यक है कि बहुमत का शासन जाति, धर्म और भाषाई समूह आदि के संदर्भ में बहुसंख्यक समुदाय का शासन न बन जाए। लोकतंत्र तभी लोकतंत्र बना रह सकता है जब हर नागरिक को किसी न किसी बिंदु पर बहुमत का हिस्सा बनने का मौका मिले। अगर किसी व्यक्ति या व्यक्तियों को जन्म के आधार पर बहुमत का हिस्सा बनने से मना किया जाता है, तो यह लोकतंत्र का उल्लंघन होगा।

नागरिकों की गरिमा और स्वतंत्रता-

1. व्यक्ति की गरिमा और स्वतंत्रता को बढ़ावा देने में लोकतंत्र को किसी भी अन्य प्रकार की सरकार से बेहतर माना जाता है।

2. प्रत्येक व्यक्ति के लिए सम्मान, स्वतंत्रता और समानता लोकतंत्र का मुख्य आधार है। लेकिन उन समाजों में

व्यक्तियों के लिए समानता के सिद्धांतों को स्थापित करना काफी कठिन है जो लंबे समय से स्वतंत्र नहीं हैं।
3. इतिहास इस बात का गवाह है कि अधिकांश समाजों में पुरुषों का वर्चस्व रहा है। अगर हम वास्तव में लोकतांत्रिक समाज की स्थापना करना चाहते हैं, तो हमें महिलाओं और पुरुषों दोनों को समान दर्जा देना होगा

निष्कर्ष:

❖ लोकतंत्र परिपूर्ण नहीं है, लेकिन यह अब तक का सबसे बेहतर शासन तंत्र है।

❖ यह जनभागीदारी, न्याय, स्वतंत्रता और गरिमा को सुनिश्चित करता है, भले ही इसमें कुछ कमियाँ हों।

बहुविकल्पीय प्रश्न-
प्रश्न 1- दिए गए चित्र के आधार पर, सही कथन पर विचार करें।

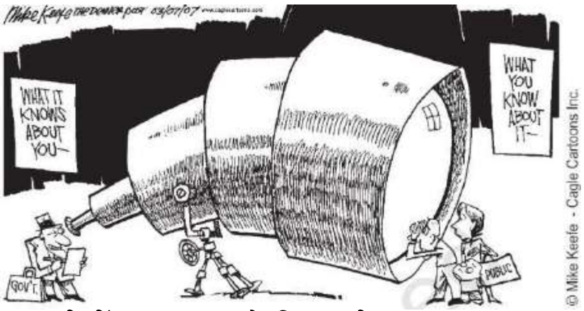

A) लोगों का सपना है कि उनके पास इतनी बड़ी दूरबीन हो
B) सरकार लोगों के बारे में लोगों से कहीं बेहतर जानती है।
C) लोग लोकतांत्रिक सरकार द्वारा निर्णय लेने की प्रक्रिया का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं।
D) सरकार एक कार्यक्रम आयोजित करती है।
उत्तर- B) सरकार लोगों के बारे में लोगों से कहीं बेहतर जानती है।
प्रश्न 2- लोकतांत्रिक सरकार के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य है?
a) लोकतांत्रिक सरकार एक वैध सरकार है।
b) लोकतांत्रिक सरकार धीमी, कम कुशल और हमेशा बहुत उत्तरदायी या साफ-सुथरी नहीं हो सकती है।
c) लोकतांत्रिक सरकार लोगों की अपनी सरकार है।
d) उपरोक्त सभी।
उत्तर: विकल्प (d)
लघु उत्तरीय प्रश्न
प्रश्न 1- "पूरे विश्व में लोकतंत्र के विचार को भारी समर्थन प्राप्त है।" कथन का समर्थन करें।
संकेत- पूरे विश्व में लोकतंत्र के विचार को भारी समर्थन प्राप्त है क्योंकि:

❖ एक लोकतांत्रिक सरकार लोगों की अपनी सरकार होती है।

❖ दक्षिण एशिया के साक्ष्य दर्शाते हैं कि लोकतांत्रिक शासन वाले देशों में समर्थन मौजूद है।

❖ लोग चाहते हैं कि उनके द्वारा चुने गए प्रतिनिधि उन पर शासन करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1- लोकतंत्र से अपेक्षित परिणाम बताएं?

संकेत-

- आर्थिक समानता-लोकतंत्र से यह अपेक्षा की जाती है कि हमारे देश से आर्थिक असमानता दूर हो।
- सत्ता का विकेंद्रीकरण किया जाना चाहिए और उच्च स्तर से निम्न स्तर तक विभाजित किया जाना चाहिए।
- सामाजिक विविधता का समायोजन।
- समानता के सिद्धांत।

****

अध्याय 1
विकास

अध्याय का सार -

विकास की विशेषताएँ-

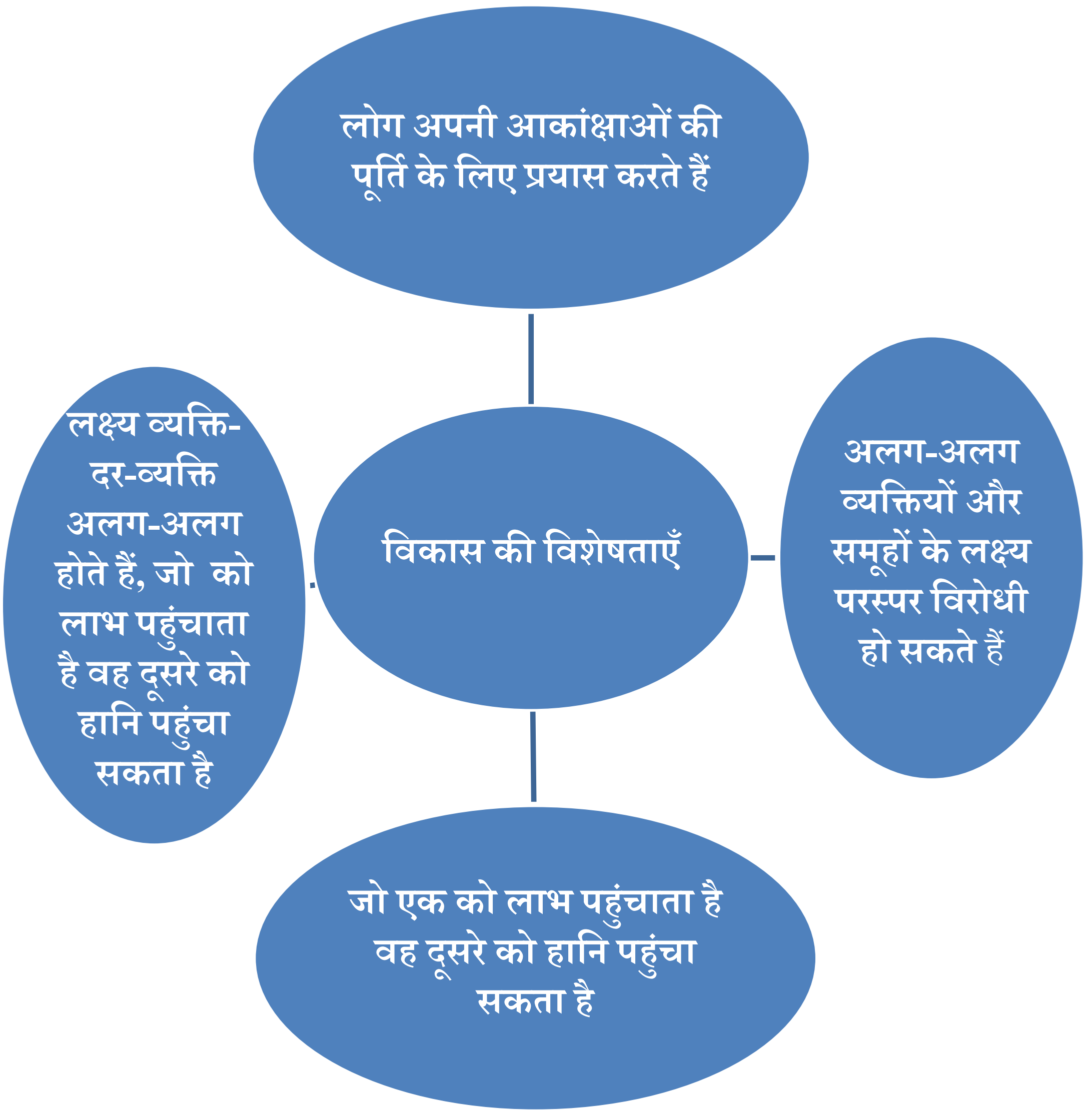

- विभिन्न देशों या राज्यों की तुलना कैसे करें
- देशों की तुलना करने के लिए, उनकी आय को सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक माना जाता है।
- अधिक आय वाले देश कम आय वाले अन्य देशों की तुलना में अधिक विकसित हैं।

देशों के बीच तुलना के लिए, कुल आय इतना उपयोगी उपाय नहीं है। क्योंकि उनकी आबादी अलग-अलग है और कुल आय की तुलना करने से किसी व्यक्ति द्वारा अर्जित औसत राशि का पता नहीं चलेगा।

- इसलिए, हम औसत आय की तुलना करते हैं जो देश की आय को उसकी कुल आबादी से विभाजित करके प्राप्त होती है। औसत आय को प्रति व्यक्ति आय भी कहा जाता है।

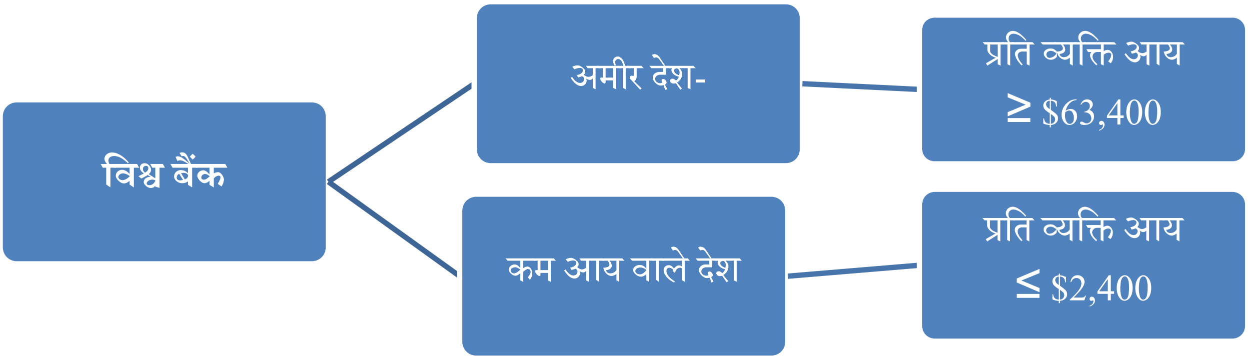

सार्वजनिक सुविधाएँ:

आपकी जेब में मौजूद पैसे से आप वो सभी सामान और सेवाएँ नहीं खरीद सकते जो आपको अच्छी ज़िंदगी जीने के लिए चाहिए।

आय अपने आप में उन भौतिक वस्तुओं और सेवाओं का पूरी तरह से पर्याप्त संकेतक नहीं है जिनका नागरिक उपयोग कर पा रहे हैं।

आम तौर पर, आपका पैसा प्रदूषण मुक्त वातावरण नहीं खरीद सकता या यह सुनिश्चित नहीं कर सकता कि आपको मिलावट रहित दवाइयाँ मिलें ।

पैसा आपको संक्रामक बीमारी से भी नहीं बचा सकता जब तक कि आपका पूरा समुदाय निवारक कदम न उठाए।

मानव विकास –

मापदंड	विवरण	संकेतक
जीवन स्तर	व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति को मापता है	प्रति व्यक्ति आय
स्वास्थ्य स्थिति	जनसंख्या के स्वास्थ्य और आयु को मापता	जीवन प्रत्याशा
शैक्षिक स्तर	शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता को मापता है	साक्षरता दर और नामांकन अनुपात

सतत विकास-

1. बीसवीं सदी के उत्तरार्ध से, कई वैज्ञानिक चेतावनी दे रहे हैं कि विकास का वर्तमान प्रकार और स्तर टिकाऊ नहीं है।

2. भूजल के मामले में, यदि हम बारिश से मिलने वाले पानी से अधिक का उपयोग करते हैं, तो हम इस संसाधन का अत्यधिक उपयोग कर रहे होंगे।

3. पर्यावरण क्षरण के परिणाम राष्ट्रीय या राज्य की सीमाओं का सम्मान नहीं करते हैं; यह मुद्दा अब क्षेत्र या राष्ट्र-विशिष्ट नहीं है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. मानव विकास के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें

(I) यह संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) द्वारा तैयार किया गया समग्र सूचकांक है।

(II) इसे मापने के पैरामीटर दीर्घायु, साक्षरता और प्रति व्यक्ति आय हैं।

(III) देशों को विकसित और कम विकासशील देशों के अनुसार रैंक किया गया है।

(IV) विश्व बैंक जीवन की गुणवत्ता के आधार पर मानव विकास की रिपोर्ट भी तैयार करता है।

(a) I और II (b) II और III (c) I और III (d) II और IV

उत्तर: (a) I और II

2. नीचे दिए गए डेटा का अध्ययन करें:

देश	कुल जीडीपी	प्रति व्यक्ति जीडीपी
जापान	$4,872,415,104,315	$38,214
जर्मनी	$3,693,204,332,230	$44,680

जर्मनी की तुलना में अधिक कुल आय होने के बावजूद, जापान की प्रति व्यक्ति आय कम है। इसका क्या कारण है?

(A) जापान में आय का वितरण अधिक न्यायसंगत है।

(B) जर्मनी में गरीब लोगों की तुलना में अधिक अमीर लोग हैं।

(C) जापान की जनसंख्या जर्मनी से कम है

(D) जापान की जनसंख्या जर्मनी से अधिक है।

उत्तर: (D) जापान की जनसंख्या जर्मनी से अधिक है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मानव विकास रिपोर्ट विकास का समग्र दृष्टिकोण कैसे प्रस्तुत करती है?

संकेत (1) प्रति व्यक्ति आय

(2) शिक्षा संकेतक

(3) स्वास्थ्य संकेतक

State	Infant Mortality Rate per 1,000 live births (2020)	Literacy Rate % 2017–18	Net Attendance Ratio (per 100 persons) secondary stage (aged 15–17 years) 2017–18
Haryana	28	82	73
Kerala	6	94	94
Bihar	27	62	69

Sources : Economic Survey 2023-24, National Sample Survey Organisation (Report No. 585), National Statistical Office, Government of India; National Family Health Survey (NFHS-5) 2019-21 IIPS, Mumbai.

2. **उपरोक्त दिए गए आंकड़ों का विश्लेषण कीजिए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:**

1. किस राज्य की साक्षरता दर सबसे अधिक है?
2. केरल में शिशु मृत्यु दर सबसे कम है। यह क्या दर्शाता है?
3. उपरोक्त आंकड़ों के अनुसार, कौन-सा राज्य मानव विकास सूचकांक (HDI) में सबसे बेहतर है और क्यों?

संकेत:

1. केरल
2. केरल – बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं
3. केरल – बेहतर मानव विकास सूचकांक (HDI)

TABLE 1.5 EDUCATIONAL ACHIEVEMENT OF RURAL POPULATION OF UTTAR PRADESH

Category	Male	Female
Literacy rate for rural population	76%	54%
Literacy rate for rural children in age group 10-14 years	90%	87%
Percentage of rural children aged 10-14 attending school	85%	82%

उपरोक्त दिए गए आंकड़ों का विश्लेषण कीजिए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 10 से 14 वर्ष की आयु वर्ग में ग्रामीण क्षेत्रों की साक्षर बालिकाओं का प्रतिशत कितना है?

   संकेत-76%
2. पुरुषों की तुलना में महिलाओं में साक्षरता दर कम होने के क्या कारण हो सकते हैं? विश्लेषण कीजिए।

   संकेत-लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता न देना, कम उम्र में विवाह।गरीबी, पारंपरिक सोच, सुरक्षा संबंधी चिंताएं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. ग्रामीण क्षेत्र में, सरकार ने कृषि सब्सिडी के माध्यम से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की है। हालाँकि, इस क्षेत्र में अभी भी स्कूल, अस्पताल और स्वच्छ पेयजल जैसी बुनियादी सार्वजनिक सुविधाओं का अभाव है।
विश्लेषण करें कि आय में वृद्धि के बावजूद सार्वजनिक सुविधाओं की अनुपस्थिति क्षेत्र के समग्र विकास को कैसे प्रभावित कर सकती है। इस मुद्दे को संबोधित करने के उपाय सुझाएँ।

उत्तर संकेत-   जबकि कृषि सब्सिडी आय को बढ़ा सकती है, स्कूल, अस्पताल और स्वच्छ पेयजल जैसी बुनियादी सार्वजनिक सुविधाओं की कमी ग्रामीण क्षेत्रों में समग्र विकास में बाधा डालती है। बढ़ी हुई आय के साथ भी, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और सुरक्षित पानी तक पहुँच की कमी क्षेत्र की जीवन की गुणवत्ता और दीर्घकालिक स्थिरता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है.

****

अध्याय-2

भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक

अध्याय का सार:-

भारतीय अर्थव्यवस्था को आर्थिक गतिविधियों के प्रकार के आधार पर तीन मुख्य क्षेत्रको में वर्गीकृत किया जा सकता है:

1. प्राथमिक क्षेत्रक: - यह प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित है। जैसे कृषि, मछली पकड़ना, वानिकी, खनन, आदि।

कृषि

2. द्वितीयक क्षेत्रक: -इसमें विनिर्माण और औद्योगिक गतिविधियाँ शामिल हैं।प्राथमिक क्षेत्रक से कच्चे माल को तैयार माल में परिवर्तित करता है।उदाहरण के लिए चीनी, सीमेंट, लोहा और इस्पात आदि उद्योग

चीनी का विनिर्माण

3. तृतीयक क्षेत्रक: -इसे सेवा क्षेत्रकभी कहा जाता है। यह प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रको को सहायता सेवाएँ प्रदान करता है।उदाहरण के लिए बैंकिंग, शिक्षा, परिवहन, स्वास्थ्य सेवा, आदि।

परिवहन-

तीनों क्षेत्रको की तुलना- सभी क्षेत्रक एक दूसरे पर निर्भर हैं।

उदाहरण: किसान (प्राथमिक) ट्रैक्टर (द्वितीयक) और बैंकिंग सेवाएं (तृतीयक) का उपयोग करते हैं।

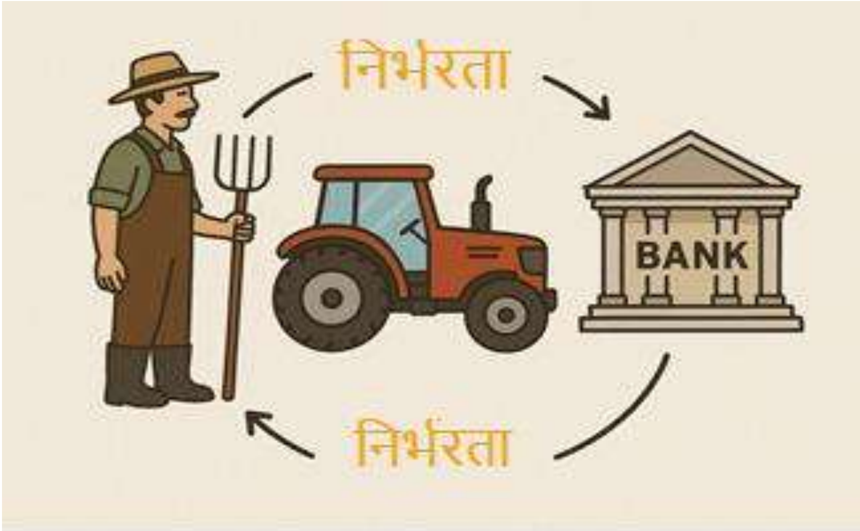

क्षेत्रकों का परस्पर निर्भरता-

- क्षेत्रक में ऐतिहासिक परिवर्तन। विकास के प्रारंभिक चरण में, प्राथमिक क्षेत्रक आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण क्षेत्र था। सौ साल से भी अधिक पहले द्वितीय क्षेत्रक महत्वपूर्ण हो गया था। पिछले सौ वर्षों में तृतीयक क्षेत्रक महत्वपूर्ण हो गया है।

- उत्पादन में तृतीयक क्षेत्रक का बढ़ता महत्व। चालीस वर्षों में तृतीयक क्षेत्रक भारत में सबसे बड़ा उत्पादक क्षेत्रक बनकर उभरा है।

- अधिकतर लोग कहां काम कर रहे हैं। आधे से अधिक श्रमिक प्राथमिक क्षेत्रक में काम कर रहे हैं।

- अधिक रोजगार कैसे सृजित करें: -सरकार कम ब्याज दर पर ऋण दे सकती है, रोजगार आदि प्रदान कर सकती है।

- संगठित और असंगठित क्षेत्रक:

संगठित क्षेत्रक	**असंगठित क्षेत्रक**
सरकार के साथ पंजीकृत, नौकरी की सुरक्षा और लाभ प्रदान करता है।	कोई नौकरी की सुरक्षा नहीं, कम वेतन, कम लाभ।

- असंगठित क्षेत्रक में काम करने वाले श्रमिकों की सुरक्षा कैसे की जाए। सरकार को उनकी सुरक्षा करनी चाहिए।

स्वामित्व वाले क्षेत्रक:-

सार्वजनिक क्षेत्रक	निजी क्षेत्रक
सरकार के स्वामित्व वाले (जैसे, भारतीय रेलवे)।	व्यक्तियों या कंपनियों के स्वामित्व वाले (जैसे, टाटा इंडस्ट्रीज)।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. अभिकथन (A): प्राथमिक क्षेत्र भारत में सबसे बड़ा नियोक्ता बना हुआ है।

कारण (R): बढ़ती आय और विकास के कारण सेवाओं की मांग में जबरदस्त वृद्धि हुई है।

A. A और R दोनों सत्य हैं, और R, A का सही स्पष्टीकरण है।

B. A और R दोनों सत्य हैं, लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

C. A सत्य है, लेकिन R असत्य है।

D. A असत्य है, लेकिन R सत्य है।

उत्तर: B. A और R दोनों सत्य हैं, लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

प्रश्न 2. चित्र को देखिए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

निम्नलिखित में से कौन सा भारतीय अर्थव्यवस्था में चित्र में दिखाए गए व्यक्ति की भूमिका का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

A. वह प्राथमिक क्षेत्र में कार्यरत है।

B. वह द्वितीयक क्षेत्र में शामिल है।

C. वह तृतीयक क्षेत्र में कार्यरत है।

D. वह खेल उद्योग में कार्यरत है।

उत्तर: B

अति लघु-उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. असंगठित क्षेत्रक में काम करने वाले श्रमिकों को सरकार द्वारा सहायता और संरक्षण की आवश्यकता है। कोई दो कारण बताइए।

संकेत: ओवरटाइम घंटों के लिए भुगतान नहीं किया जाता और नियमों का पालन नहीं किया जाता।

प्रश्न 2. समय बीतने के साथ विभिन्न क्षेत्रको में ऐतिहासिक परिवर्तन हुए हैं। व्याख्या कीजिए।

संकेत: पहले प्राथमिक का, फिर द्वितीयक और अब तृतीयक क्षेत्रक का महत्व।

लघु उत्तरीय प्रश्न-

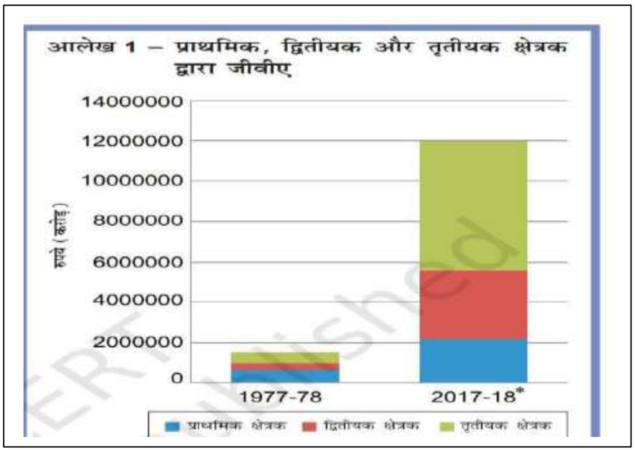

ग्राफ में प्रस्तुत आंकड़ों का अवलोकन करने के बाद निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए:-

प्रश्न1.1 विभिन्न क्षेत्रको द्वारा जोड़ा गया सकल मूल्य वर्धित ग्राफ में दिखाया गया है। इस क्षेत्रक में वृद्धि हुई है और इस क्षेत्रक में वर्ष 2017-18 में सबसे अधिक जीवीए है। क्षेत्रक का नाम बताइए। संकेत: तृतीयक क्षेत्रक

प्रश्न1.2 वर्ष 1977-78 में बार ग्राफ से दूसरे क्षेत्रक में सबसे अधिक जीवीए है। क्षेत्रक का नाम बताइए। संकेत: प्राथमिक क्षेत्रक

प्रश्न1.3 ग्राफ के आधार पर, तृतीयक क्षेत्रक के योगदान में समय के साथ एक प्रवृत्ति देखी जा सकती है। ग्राफ में दिखाए गए इस प्रवृत्ति का नाम बताइए। यह भविष्य में रोजगार सृजन को भी प्रभावित कर सकता है। ग्राफ के अनुसार रोजगार सृजन पर प्रभाव का उल्लेख करें। संकेत: तृतीयक क्षेत्रक का जीवीए बढ़ा है। और इससे अधिक शहरी कुशल नौकरी मिल सकती है।

प्रश्न 2. मनुष्य के प्राकृतिक पर्यावरण से संबंधित गतिविधियाँ आदिकाल से ही की जाती रही हैं। इसे ध्यान में रखते हुए प्राथमिक गतिविधियों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।
संकेत: प्राकृतिक पर्यावरण से संबंधित गतिविधियाँ जैसे खेती, मछली पकड़ना आदि।

प्रश्न 3. ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार में आवश्यकता के अनुसार वृद्धि नहीं हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए सरकार द्वारा प्रयास किए जाने चाहिए। उदाहरण सहित समझाइए।
संकेत: रोजगार पैदा करने के लिए कम ब्याज या सब्सिडी पर ऋण देना, बांध और नहरें बनाना आदि।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-
प्रश्न 1. भारत में बड़ी आबादी असंगठित और संगठित क्षेत्रकों के अंतर्गत काम करती है। दोनों क्षेत्रों के कुछ फायदे और नुकसान हैं। संगठित और असंगठित क्षेत्रक के बीच तुलना करें।
संकेत: संगठित: सरकार द्वारा पंजीकृत, नौकरी की सुरक्षा, चिकित्सा सुविधाएँ, नियमित काम, नियमों के अनुसार वेतन आदि असंगठित: सरकार द्वारा पंजीकृत नहीं, कोई नौकरी की सुरक्षा नहीं, कोई चिकित्सा सुविधाएँ नहीं, कोई नियमित काम नहीं, कम वेतन आदि।
प्रश्न 2.. निजी क्षेत्रक में गतिविधियाँ लाभ कमाने के उद्देश्य से निर्देशित होती हैं, लेकिन सार्वजनिक क्षेत्र का उद्देश्य केवल लाभ कमाना नहीं है। उपरोक्त कथनों के मद्देनजर सार्वजनिक क्षेत्र के किन्हीं पाँच कार्यों की व्याख्या करें। संकेत: सार्वजनिक क्षेत्र का उद्देश्य कल्याण है, इसलिए वे बिजली, सुरक्षित पेयजल, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, उचित मूल्य पर भोजन, स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करते हैं।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न-

निम्नलिखित श्रोत को पढ़िए और उनके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
Q1. यहाँ नौकरियाँ कम वेतन वाली हैं और अक्सर नियमित नहीं होतीं, सवेतन छुट्टी, बीमारी के कारण छुट्टी आदि का कोई प्रावधान नहीं है। रोजगार सुरक्षित नहीं है। लोगों को बिना किसी कारण के नौकरी छोड़ने के लिए

कहा जा सकता है। जब काम कम होता है, जैसे कि कुछ मौसमों के दौरान, तो कुछ लोगों को नौकरी छोड़ने के लिए कहा जा सकता है। बहुत कुछ नियोक्ता की इच्छा पर भी निर्भर करता है। लेकिन संगठित क्षेत्र में ऐसा नहीं है।

प्रश्न 1. ऊपर बताए गए क्षेत्रक में आम तौर पर कानून के अनुसार नियमित नौकरियाँ नहीं होती हैं। ऊपर बताए गए क्षेत्र का नाम बताइए। संकेत: असंगठित क्षेत्रक

प्रश्न 2. लोगों को लगता है कि ऊपर बताया गया क्षेत्रक कामकाजी वर्ग के लिए फायदेमंद नहीं है। अपने जवाब के लिए कारण बताइए। संकेत: असुरक्षित। कोई पर्यवेक्षण नहीं।

प्रश्न 3. ऊपर बताए गए क्षेत्रक से दूसरा क्षेत्रक बेहतर है। इस क्षेत्र को संगठित क्षेत्रक कहा जाता है। संगठित क्षेत्रक के किन्हीं दो लाभों पर चर्चा करें। संकेत: नौकरी की सुरक्षा, पूरा वेतन ।

****

अध्याय-3
मुद्रा और साख

अध्याय का सार

मुद्रा- इसका अर्थ है विनिमय के माध्यम के रूप में आम सहमति से चुनी गई कोई भी वस्तु।

वस्तु विनिमय प्रणाली-

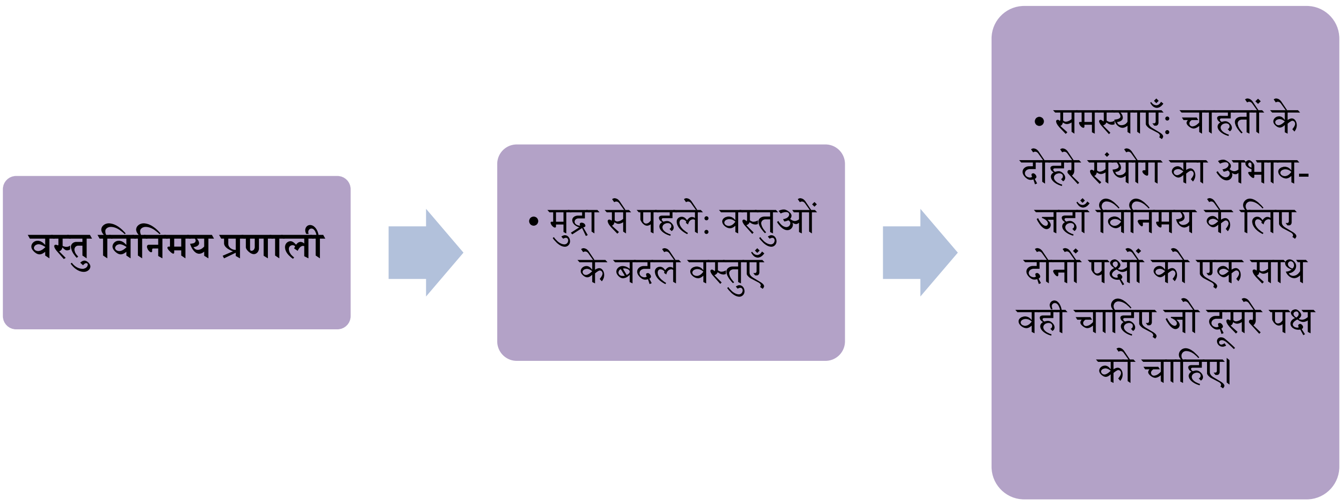

मुद्रा का विकास

बैंकों में निक्षेप:

- मांग जमा (कभी भी निकाला जा सकता है)
- विनिमय के माध्यम के रूप में चेक का उपयोग, डेबिट कार्ड, नेट बैंकिंग
- भारतीय रिज़र्व बैंक केंद्र सरकार की ओर से मुद्रा नोट जारी करता है
- बैंक जमा स्वीकार करते हैं और जमा पर ब्याज के रूप में एक राशि भी देते हैं।

बैंकों की ऋण गतिविधियाँ-

जमा स्वीकार करना

- लोग बैंक खातों में पैसा जमा करते हैं
- बैंक उस पैसे पर ब्याज प्रदान करते हैं
- लोग चेक के माध्यम से पैसा निकाल सकते हैं

ऋण देना

- बैंक जरूरतमंद लोगों को पैसा उधार देता है
- ऋण पर ब्याज वसूलता है
- यह बैंकों की आय का मुख्य स्रोत है

ऋण की परिभाषा

ऋण (ऋण) को ऋणदाता और उधारकर्ता के बीच एक समझौते के रूप में परिभाषित किया जाता है

ऋण की शर्तें-

- ब्याज दर - ऋणाधार - दस्तावेज़ीकरण की आवश्यकता - पुनर्भुगतान का तरीका।

ऋण का महत्व-

• उत्पादन की कार्यशील पूंजी की आवश्यकता को पूरा करना
• उत्पादन के चल रहे खर्चों को पूरा करना।
• समय पर उत्पादन पूरा करने में सहायता करना।
• आय बढ़ाने में सहायता करना

औपचारिक ऋण	**अनौपचारिक ऋण**
बैंकों और सहकारी समितियों से।	मुख्यतः साहूकारों से।
आरबीआई ऋण के औपचारिक स्रोत के कामकाज की निगरानी करता है।	ऋण के अनौपचारिक स्रोत के कामकाज की निगरानी करने का कोई कानूनी तरीका नहीं है
ब्याज दर कम है।	ब्याज दर अधिक है।
अधिकांश अमीर परिवारों को औपचारिक ऋण मिलता है	अधिकांश गरीब परिवार अनौपचारिक ऋण प्राप्त करते हैं।

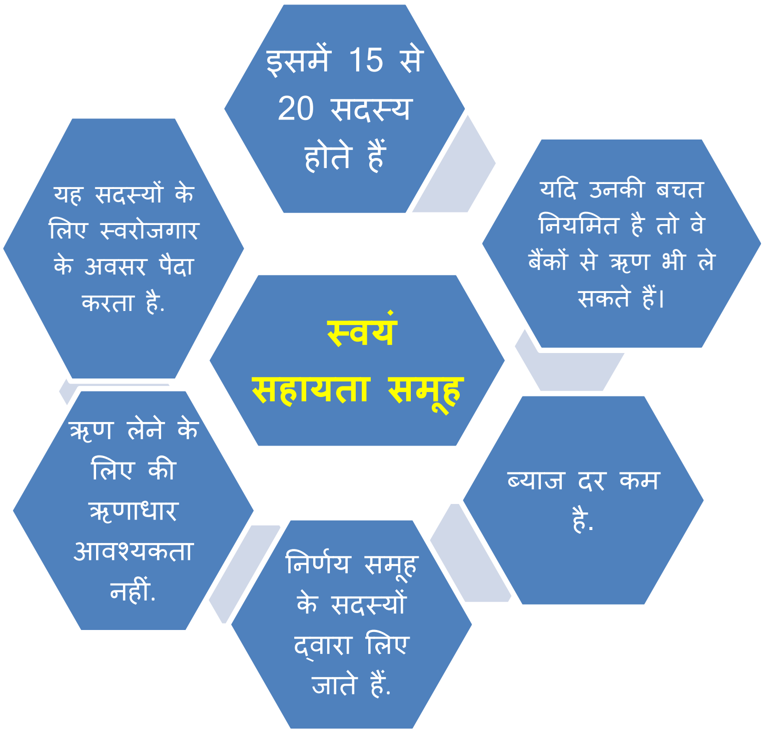

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. गार्गी ने एक साहूकार से उच्च ब्याज दर पर ऋण लिया और उसे चुका नहीं पाई। उसने अपनी ज़मीन गिरवी रख दी। यह किसका उदाहरण है:

A. ऋण का प्रभावी उपयोग

B. वित्तीय समावेशन

C. ऋण जाल

D. औपचारिक ऋण वसूली — उत्तर: C. ऋण जाल

2, निम्नलिखित में से कौन सी स्थिति मुद्रा के आधुनिक रूप को सबसे अच्छी तरह दर्शाती है?

A. साप्ताहिक हाट में वस्तुओं का आदान-प्रदान

B. सब्ज़ियाँ खरीदने के लिए सिक्कों का उपयोग करना

C. ऑनलाइन शॉपिंग के लिए UPI ऐप के ज़रिए भुगतान करना

D. चावल के लिए गेहूँ का विनिमय

उत्तर: C. ऑनलाइन शॉपिंग के लिए UPI ऐप के ज़रिए भुगतान करना

3. बैंक का प्राथमिक कार्य क्या है?

A. मुद्रा छापना — B. कर एकत्र करना

C. जमा स्वीकार करना और पैसे उधार देना — D. सब्सिडी देना

उत्तर C जमा स्वीकार करना और पैसे उधार देना

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को बढ़ावा देना क्यों आवश्यक है?
संकेत समूह-आधारित ऋण, छोटे ऋण और महिला सशक्तीकरण का उल्लेख करें।

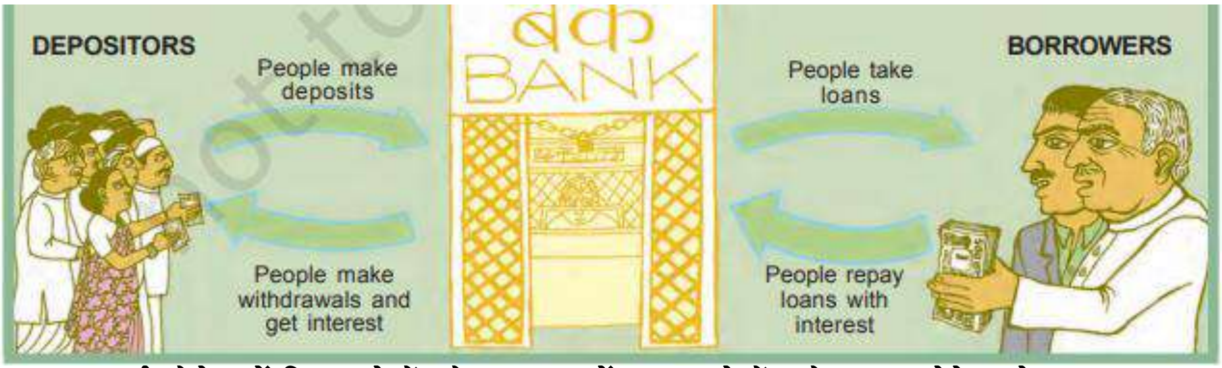

2. "जमाकर्ता" पैसे क्यों निकालते हैं और ब्याज क्यों प्राप्त करते हैं, और "ऋण लेने वाले" ऋण ब्याज सहित क्यों चुकाते हैं, जैसा कि प्रवाह में दिखाया गया है?

संकेत : बैंक की भूमिका एक वित्तीय मध्यस्थ के रूप में।

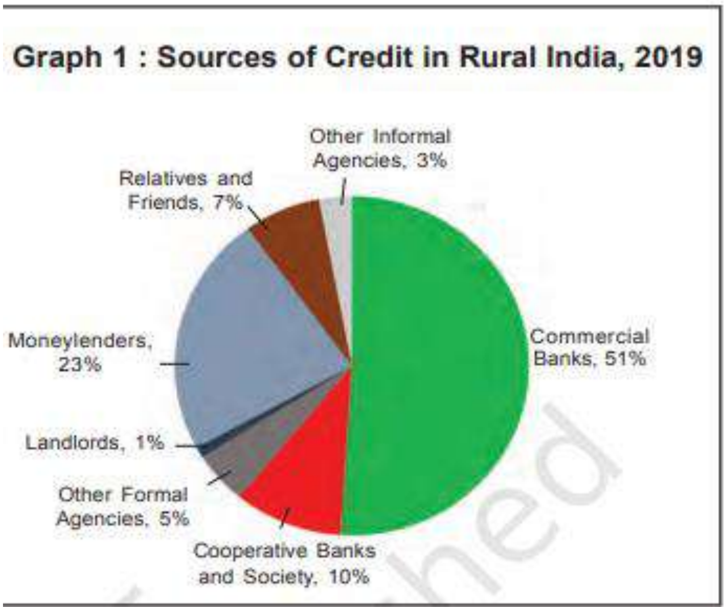

प्रश्न 1: 2019 में ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को सर्वाधिक ऋण किस स्रोत से प्राप्त हुआ?

संकेत: पाई चार्ट के सबसे बड़े हिस्से को देखिए।

प्रश्न 2: ग्रामीण भारत में लोगों की असंगठित ऋण स्रोतों पर निर्भरता को कम करने का एक उपाय सुझाइए।

संकेत: संगठित संस्थानों की पहुँच बढ़ाने, ग्रामीण बैंकिंग सेवाओं, वित्तीय साक्षरता और आसान ऋण प्रक्रियाओं के बारे में सोचिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. "ऋण लाभ और बोझ दोनों हो सकता है।" उपयुक्त उदाहरणों के साथ कथन की पुष्टि करें।

संकेत एक सकारात्मक और एक नकारात्मक उदाहरण का उपयोग करें (जैसे, किसान जो लाभ उठाता है बनाम कर्ज के जाल में फंस जाता है)।

2. औपचारिक और अनौपचारिक ऋण क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब लोगों के जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं? ग्रामीण भारत में औपचारिक ऋण तक पहुँच में सुधार के उपाय सुझाएँ।

संकेत ब्याज दरों, पहुँच, विनियमन की तुलना करें; एसएचजी, बैंक शाखाओं का विस्तार, माइक्रोफाइनेंस का सुझाव दें।

****

अध्याय 4

वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

अध्याय का सार:-

वैश्वीकरण विदेशी व्यापार और बहुराष्ट्रीय कंपनियां (एमएनसी) द्वारा निवेश के माध्यम से देशों के बीच एकीकरण है।

- ❖ बहुराष्ट्रीय कंपनी दुनिया के दूरदराज के क्षेत्रों को जोड़ने वाली वैश्वीकरण प्रक्रिया में एक प्रमुख शक्ति रही हैं।
- ❖ उत्पादन का एकीकरण और बाजारों का एकीकरण वैश्वीकरण की प्रक्रिया और इसके प्रभाव को समझने के पीछे एक महत्वपूर्ण विचार है।
- ❖ बहुराष्ट्रीय कंपनी के कार्य:- वे अर्थव्यवस्थाओं को जोड़ते हैं, संसाधनों और सूचनाओं के प्रवाह को सुविधाजनक बनाते हैं और आर्थिक एकीकरण को गति देती हैं।
- ❖ देश व्यापार, निवेश, प्रवास, प्रौद्योगिकी, संस्कृति, संचार और समझौतों के माध्यम से जुड़े हुए हैं। ये संबंध वैश्वीकरण की रीढ़ हैं।
- ❖ वैश्वीकरण की प्रक्रिया को संभव करने वाले कारक।- प्रौद्योगिकी (परिवहन, सूचना एवं प्रौद्योगिकी, इंटरनेट, कंप्यूटर, बहुराष्ट्रीय कंपनियों ,आर्थिक नीतियों में उदारीकरण, विश्व व्यापार संगठन के प्रयास आदि।
- ❖ उदारीकरण: सरकार द्वारा व्यापार बाधाओं को हटाने की प्रक्रिया।

बहुविकल्पीय प्रश्न-

प्रश्न 1 चित्र को देखिए और प्रश्न का उत्तर दीजिए:

छवि में कॉल सेंटर में काम करने वाले कर्मचारी कंप्यूटर और हेडसेट का उपयोग करते हुए दिखाई दे रहे हैं। यह छवि वैश्वीकरण के निम्नलिखित पहलुओं में से किसको दर्शाती है?

A. विनिर्माण क्षेत्र का विकास

B. प्राथमिक क्षेत्र का विस्तार

C. सेवा क्षेत्र और आउटसोर्सिंग का उदय
D. स्वास्थ्य सुविधाओं में गिरावट
उत्तर: C.

2. अभिकथन (A): वैश्वीकरण ने उपभोक्ताओं के लिए वस्तुओं की उपलब्धता बढ़ा दी है।
कारण (R): वैश्वीकरण ने केवल भारतीय कंपनियों को विदेशों में अपने कारोबार का विस्तार करने की अनुमति दी है।

विकल्प:

A) A और R दोनों सत्य हैं, और R, A का सही स्पष्टीकरण है।
B) A और R दोनों सत्य हैं, लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

उत्तर: C.

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-
प्रश्न 1. आमतौर पर यह देखा जाता है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ विकासशील देशों में कारखाने लगाना पसंद करती हैं? अपने उत्तर का कारण बताएँ।
संकेत: लागत कम करने के लिए।

प्रश्न 2. आधुनिक समय में तकनीक ने लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वैश्वीकरण में तकनीक की भूमिका को समझाए?
संकेत: तकनीक दूरी और समय को कम करती है और इस प्रकार वैश्वीकरण में मदद करती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न-
प्रश्न 1. वैश्वीकरण की प्रक्रिया में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की बड़ी भूमिका है। वे तरीके बताइए जिनसे बहुराष्ट्रीय कंपनियां स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित करती हैं?
संकेत: निवेश, प्रौद्योगिकी, नौकरियों आदि के माध्यम से।

प्रश्न 2. वैश्वीकरण ने देश के लोगों और अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है। वैश्वीकरण के प्रभावों को उचित ठहराएँ।
संकेत- वैश्वीकरण विदेशी कंपनियों को स्थानीय बाजारों में प्रवेश करने, प्रतिस्पर्धा बढ़ाने, कीमतों को कम करने आदि की अनुमति देता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-
प्रश्न 1. उदारीकरण ने वैश्वीकरण में मदद की है। इसे देखते हुए 'उदारीकरण' शब्द को परिभाषित कीजिए। साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था में उदारीकरण का विश्लेषण कीजिए।
संकेत: सरकार द्वारा व्यापार की बाधाओं को हटाना। 1991 के आसपास भारतीय सरकार द्वारा व्यापार बाधाओं को

हटा दिया गया था। स्थानीय उत्पादकों को प्रतिस्पर्धा करनी होगी।

प्रश्न 2. विभिन्न कारकों ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया में मदद की है। इस तथ्य को देखते हुए वैश्वीकरण को संभव करने वाले कारकों को बताइए।

संकेत: परिवहन प्रौद्योगिकी, सूचना और संचार उदारीकरण, विश्व व्यापार संगठन, बहुराष्ट्रीय कंपनी आदि।

स्रोत आधारित प्रश्न-

निम्नलिखित स्रोत को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्नों के उत्तर दें:

स्वतंत्रता के बाद भारतीय सरकार ने विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश पर प्रतिबंध लगा दिया था। देश के भीतर उत्पादकों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाने के लिए इसे आवश्यक माना गया था। 1950 और 1960 के दशक में उद्योग अभी-अभी उभर रहे थे और उस समय आयात से होने वाली प्रतिस्पर्धा इन उद्योगों को उभरने नहीं देती। इस प्रकार, भारत ने केवल आवश्यक वस्तुओं जैसे मशीनरी, उर्वरक, पेट्रोलियम आदि के आयात की अनुमति दी। ध्यान दें कि सभी विकसित देशों ने विकास के शुरुआती चरणों के दौरान, विभिन्न तरीकों से घरेलू उत्पादकों को सुरक्षा प्रदान की है।

प्रश्न 1. यह आमतौर पर देखा गया है कि विकास के शुरुआती चरण में सरकारें व्यापार अवरोध लगाती हैं। वह कारण बताइए जिसके कारण भारत सरकार ने व्यापार अवरोध लगाए हैं।

संकेत: घरेलू व्यापार को बढ़ावा देने के लिए।

प्रश्न 2. भारत सरकार ने भारतीय व्यापार की सुरक्षा के लिए व्यापार अवरोध लगाने का फैसला किया। याद करें कि यह स्वतंत्रता से पहले किया गया था या बाद में?

संकेत- स्वतंत्रता के बाद

प्रश्न 3. भारतीय सरकार भारतीय व्यापारियों के लाभ के लिए आयात और निर्यात की अनुमति देने में बहुत सावधान थी। भारतीय अर्थव्यवस्था की बेहतरी के लिए सरकार द्वारा आयात की अनुमति दी गई किन्हीं दो आवश्यक वस्तुओं के नाम बताइए।

संकेत- मशीनरी, उर्वरक, पेट्रोलियम आदि।

****